इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
शिक्षा विद्यापीठ

# BESC-131
# शिक्षा : संप्रत्यय, प्रकृति एवं परिप्रेक्ष्य

## खण्ड

# 2

## शिक्षा का दर्शनशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य


इकाई 5
शिक्षा और दर्शनशास्त्र 93

इकाई 6
विचारधाराएं 112

इकाई 7
भारतीय दार्शनशास्त्रीयों के योगदान 129

इकाई 8
पाश्चात्य दार्शनशास्त्रीयों के योगदान 151


ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

# खण्ड़ 2 शिक्षा का दर्शनशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

**खण्ड़ का परिचय**

**'शिक्षा का दर्शनशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य'** पाठ्यक्रम – **BESC-131, 'शिक्षा : संप्रत्यय, प्रकृति एवं परिप्रेक्ष्य'** का दूसरा खण्ड़ है। प्रत्येक क्षेत्र के अपने संदर्भ तथा परिप्रेक्ष्य होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र के भी दार्शनिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा राजनैतिक परिप्रेक्ष्य हैं। यह खण्ड़ विशेष रूप से शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य को संबोधित करता है जिसमें महान भारतीय तथा पश्चिमी शिक्षाविद्ों के शिक्षा संबंधी विचारों तथा सिद्धांतों एवं शैक्षिक अभ्यासों के लिए उनके निहितार्थों पर विशेष रूप से चर्चा की गयी है।

इस खण्ड़ की पहली इकाई, (इकाई 05) **'शिक्षा और दर्शनशास्त्र',** शिक्षा की अवधारण ाा, इसके दर्शन और उनके अन्तर्संबंधों को समझने के लिए एक आधार प्रदान करती है। यह इकाई, महान दार्शनिकों द्वारा दी गयी दर्शन की परिभाषाओं के साथ इनके कार्यों और विभिन्न क्षेत्रों, जैसे की तत्त्वमीमांसा (वास्तविकता को समझना), ज्ञानमीमांसा (ज्ञान को समझना) तथा मूल्यमीमांसा (मूल्यों को समझना), का समीक्षात्मक विश्लेषण करती है। आगे यह इकाई शिक्षा और दर्शन के बीच अन्तर्संबंधों को भी स्थापित करती है तथा शिक्षा के विभिन्न पहलुओं जैसे कि लक्ष्यों, विधियों, पाठ्यचर्या, आदि की समझ भी प्रदान करती है।

इस खण्ड़ की दूसरी इकाई, (इकाई 06) **'विचारधाराएं',** विभिन्न विचारधाराओं, जैसे कि आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, व्यवहारवाद, यथार्थवाद तथा मानवतावाद, से निकाले गये परिणामों के माध्यम से शिक्षा के विचारों तथा आदर्शों एवं सिद्धांतों पर चर्चा करती है। यह इकाई, शिक्षा के लक्ष्यों, शिक्षण विधियों, पाठ्यचर्या तथा शिक्षकों एवं छात्रों की भूमिका के संदर्भ में उपरोक्त विचारधाराओं के शैक्षिक निहितार्थों की व्याख्या भी करती है।

इस खण्ड़ की तीसरी इकाई, (इकाई 07) **'भारतीय दार्शनशास्त्रीयों के योगदान'** शिक्षा के लक्ष्यों, पाठ्यचर्या, शिक्षण–विधियों तथा शिक्षकों एवं छात्रों की भूमिका के निर्धारण के संदर्भ विशेष में महान भारतीय शिक्षाविद्ों, जैसे कि विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, श्री अरविन्द, जे. कृष्णमूर्ति तथा गिजुभाई बधेका द्वारा दिये गये शिक्षा की अवधारण ाओं एवं सिद्धांतों की व्याख्या करता है।

इस खण्ड़ की चौथी इकाई, (इकाई 08) **'पाश्चात्य दार्शनशास्त्रीयों के योगदान'** शिक्षा के लक्ष्यों, पाठ्यचर्या, शिक्षण–विधियों तथा शिक्षकों एवं छात्रों की भूमिका के निर्धारण के संदर्भ विशेष में पश्चिमी दार्शनिकों, जैसे कि प्लेटो, रूसो, जॉन डीवी तथा इमैनुअल कांत दिये गये शिक्षा की अवधारणाओं एवं सिद्धांतों की व्याख्या करता है।

# इकाई 5 शिक्षा एवं दर्शनशास्त्र

**संरचना**


5.1 परिचय

5.2 उद्देश्य

5.3 दर्शनशास्त्र क्या है?

- 5.3.1 विश्लेषण के रूप में दर्शनशास्त्र
- 5.3.2 संश्लेषण के रूप में दर्शनशास्त्र
- 5.3.3 दर्शनशास्त्र दार्शनिकरण की प्रक्रिया है

5.4 दर्शनशास्त्र की परिभाषाएँ

5.5 दर्शनशास्त्र की शाखाएँ

- 5.5.1 तत्वमीमांसा
- 5.5.2 ज्ञानमीमांसा
- 5.5.3 मूल्यमीमांसा
- 5.5.4 तर्कशास्त्र एवं शिक्षा
- 5.5.5 दर्शनशास्त्र की शाखाएँ तथा उनके मूलभूत प्रश्न

5.6 शिक्षा एवं दर्शनशास्त्र : अंतर्संबंध

- 5.6.1 दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा में अंतर्संबंध
- 5.6.2 दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा के लक्ष्य
- 5.6.3 दर्शनशास्त्र एवं पाठ्यचर्या
- 5.6.4 दर्शनशास्त्र एवं शिक्षण विधियाँ
- 5.6.5 शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के मध्य संबंध

5.7 सारांश

5.8 संदर्भ ग्रंथ तथा सुझावात्मक पठन सूची

5.9 प्रगति जाँच हेतु उत्तर


## 5.1 परिचय

यह इकाई शिक्षा एवं दर्शनशास्त्र की अवधारणाओं तथा इनके अंतर्संबंधों का वर्णन करती है। यह दर्शनशास्त्र की विभिन्न शाखाओं तथा शिक्षा को समझने में इनकी सहायता पर भी केन्द्रित है। हमने दर्शन शब्द की प्राथमिक समझ इसके व्युत्पतिक अर्थ पर चिंतन की बहुत ही सामान्य विधि तथा भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिकों के समझ पर चिंतन के साथ अपना विमर्श आरंभ किया है।

यह इकाई दर्शन के विभिन्न प्रकारों का वर्णन करती है जिससे शिक्षार्थी दर्शनशास्त्र की विभिन्न शाखाओं जैसे तत्वमीमांसा (metaphysics), ज्ञानमीमांसा (epistemology), मूल्यमीमांसा (axiology) तथा तर्कशास्त्र (बाद में logic) से परिचय स्थापित करेंगे चूँकि वे अपनी शैक्षिक विमर्शों में इसका प्रयोग करते हैं। आगे यह इकाई दर्शनशास्त्र की विभिन्न शाखाओं द्वारा उत्पन्न प्रश्नों पर भी प्रकाश डालती है। यह इकाई दर्शनशास्त्र के लक्ष्यों,


*डॉ. सुनीता सिंह, सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।*

पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ, शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के मध्य संबंधों इत्यादि के रूप में दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा के मध्य संबंध से आपको अवगत कराने का प्रयास करती है। अंत में अध्ययन के रूप में शिक्षा की समझ में दर्शनशास्त्र की भूमिका पर आपको एक अंतर्दृष्टि प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

## 5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पष्चात् आपः

- दर्शनशास्त्र एवं षिक्षा की अवधारणा की व्याख्या कर सकेंगे;
- दर्शनशास्त्र की भारतीय एवं पाष्चात्य अवधारणाओं में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- दर्शनशास्त्र की विभिन्न शाखाओं तथा शिक्षा की समझ में इनकी भूमिकाओं का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- दर्शनशास्त्र एवं षिक्षा के मध्य अंतर्संबंध स्थापित कर सकेंगे।

## 5.3 दर्शनशास्त्र क्या है?

दर्शनशास्त्र को अंग्रेजी में 'Philosophy' कहते हैं। दर्शनशास्त्र (Philosophy) शब्द ग्रीक भाषा के शब्द "Philos" (प्रेम) तथा "Sophia" (ज्ञान) से बना है, जिसका अर्थ "ज्ञान का प्रेम" (love of wisdom) है। ज्ञान ज्ञान के समान नहीं है, बल्कि उससे कहीं अधिक है। यह अनुभव और ज्ञान की भावना को वहन करने के लायक है। प्लेटो ने अपनी पुस्तक ***रिपब्लिक*** (Republic) में दर्शनशास्त्र की मान्यता पर चिंतन किया है अर्थात् ज्ञान का प्रेम जो मनुष्य को बुद्धिमान बनाता है तथा बुद्धिमतापूर्ण प्रेम करता है और वह आगे लिखते हैं कि "वह जिसे सभी प्रकार के ज्ञान का आस्वादन हैं, तथा जो जानने के लिए उत्सुक होता है तथा कभी संतुष्ट नहीं होता उसे दार्शनिक कहा जा सकता है। *(He who has a taste for every sort of knowledge and who is curious to learn and is never satisfied may be justly termed a philosopher).*

"दर्शनशास्त्र" शब्द को एक विशिष्ट रूप में परिभाषित करना कठिन है, जिसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जा सके। दर्शनशास्त्र के विभिन्न अर्थ होते हैं। कभी–कभी इसे सोचने की निश्चित विधि के रूप में इंगित किया जाता है। सभी विचारों के साथ दर्शनशास्त्र समस्या के समाधान का प्रयास, भ्रामक स्थिति में एक सूझ देने या अपर्याप्तता को समझाने का प्रयास करता है। चिंतन के अधिकांश प्रकारों से भिन्न इसमें तात्कालिक उद्देश्य नहीं होता है। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि दर्शनशास्त्र स्वयं समस्याओं के गहरे अर्थ तथा खोज के साथ प्रस्तुत समस्या के समाधान से बहुत अधिक सरोकार नहीं रखता है। कभी–कभी यह विचार के एक निष्चित विधि को इंगित करता है।

दर्शनशास्त्र का ज्ञान एक आधारभूत तत्व है जो न केवल शिक्षा को समग्र रूप से समझता है बल्कि शिक्षा विधियों तथा इसके प्रभावों एवं उपयोग का निर्णय या चयन करना है। उदाहरण के लिए एक शिक्षक कक्षा में वर्गमूल के सिद्धान्तों का अध्यापन करता है। आप यह देख सकते हैं कि शिक्षक द्वारा प्रयुक्त विधि बच्चों की समझ हेतु उपयुक्त है, शिक्षक एक उपयुक्त कक्षा–कक्ष स्थिति निर्माण हेतु मनोवैज्ञानिक स्थितियों को जानता है, परन्तु क्या उसने वर्गमूल में आने वाली समस्याओं के समाधान संबंधी प्रत्येक विद्यार्थी को पढ़ाने हेतु पर्याप्त तैयारी की है? क्या शिक्षक का काम सिर्फ पाठ्यचर्चा में दी गई विषयवस्तु को पढ़ाना ही है? या शिक्षा मानव के सभी व्यवहारों को सुधारने का एक साधन है? क्या यह चिंतन का एक प्रारूप हो सकता है? क्या यह ब्रह्मांड की प्रकृति तथा इसमें हमारे स्थान

को समझने में हमारी सहायता कर सकता है? इस प्रकार के कुछ प्रश्न हैं जो सामानयतः दर्शन तथा विशेष रूप से शिक्षा दर्शन उत्तर देने का प्रयास करते हैं। सामान्यतः विश्लेषण एवं संश्लेषण दर्शनशास्त्र के दो मूलभूत कार्य हैं। पहला विश्लेषण के रूप में दर्शन है और दूसरा संश्लेषण के रूप में दर्शन है।

### 5.3.1 विश्लेषण के रूप में दर्शनशास्त्र

यदि आप दर्शनशास्त्र के इतिहास का अवलोकन करते हैं, आप यह पता लगा सकते हैं कि अधिकांश दार्शनिक तत्वमीमांसक नहीं थे बल्कि वे विश्लेषक थे जैसे – लॉक, बर्कले, ह्यमू, मिल, मूर, हिगेल आदि। विश्लेषक दार्शनिकों ने मस्तिष्क, सत्य, कारण तथा आंकलनों जैसी अवधारणाओं का परीक्षण किये। आप देख सकते हैं कि विश्लेषण दर्शन के अंतर्गत एक वस्तु विभिन्न संदर्भों में विभिन्न अर्थ देती है। वर्तमान में दर्शन के विश्लेषणात्मक उपागम विश्व में प्रभावी हैं। विश्लेषणात्मक दर्शन स्पष्ट करता है कि हम पहले से क्या मानते हैं तथा हमारे चिंतन में अतारतम्यता के बिन्दु क्या हैं। यह विचार की नवीन पद्धति का निर्माण नहीं करता है।

### 5.3.2 संश्लेषण के रूप में दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्र का एक अन्य प्रमुख कार्य परंपरागत है। यह सभी ज्ञान तथा मनुष्य के संपूर्ण अनुभवों को संश्लेषित करने का प्रयास करता है। यहाँ प्रयुक्त उपकरणों तथा प्रविधियों के बनाए प्रत्याशित परिणाम पर बल होता है। यह दृष्टिकोण पहले के कुछ दार्शनिकों द्वारा अपनाया गया जो एक बुद्धिमान मनुष्य होने का दावा नहीं करते थे परन्तु ज्ञान से प्रेम करने वाले थे। उन्होंने अपनी भूमिका बुद्धि की खोज में दूसरों की सहायता करना माना था। अतः इस अर्थ में दर्शनशास्त्र मूलभूत समस्याओं का व्यापक एवं तर्कसंगत उत्तर के निरंतर खोज द्वारा मानव के अस्तित्व का अर्थ प्रदान करने का प्रयास है। यह दार्शनिकों को एक सक्रिय व्यक्ति बनाता है। उदाहरणार्थ सुकरात ने स्वयं दर्शनशास्त्र को एक गतिविधि के रूप में स्वीकार किया।

प्लूटार्थ (Plutarch), एक अन्य दार्शनिक ने अपने शब्दों में सुकरात के विषय में उल्लेख किया है कि:

> "सुकरात ने अपने विद्यार्थियों के लिए न कभी बैंच की व्यवस्था की, न किसी प्लेटफार्म की व्यवस्था की न ही शिक्षकों के लिए कोई घर बनाया। वह हास्य करने, पीने तथा टाँकने के समय सदैव दार्शनिकरण करते थे। जब वह आप से गली में मिले बल्कि वे अपने अंत समय में जब वे कारागार में विषपान कर रहे थे तब भी दार्शनिककरण कर रहे थे। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने आरंभ किया कि आपके संपूर्ण जीवन में प्रत्येक क्षण, सभी कार्यों में आप कुछ भी कर सकते हैं दर्शनशास्त्र का समय होता है।" (**स्रोतः** जैक्सॉन, 1988)

### 5.3.3 दर्शनशास्त्र दार्शनिरण की प्रक्रिया है

आप आश्चर्यचकित होंगे कि "दर्शनशास्त्र में दार्शनिकरण (Philosophisation) की प्रक्रिया क्या है। हैरॉल्ड एच. टाईटंस (Harold H. Titans) द्वारा उद्धृत अवतरण को देखते हैं, "दर्शनशास्त्र का केवल अध्ययन तथा ज्ञान ही दार्शनिक की प्रक्रिया नहीं है। यह दर्शन के रूप में विचार तथा अनुभूति है। " दार्शनिकरण की प्रक्रिया को समझने से पहले "दर्शनशास्त्र" तथा "दार्शनिकरण" दो पदों को समझना आवष्यक है। दार्शनिकरण को नवीन ज्ञान की रचना पर कार्य तथा किसी सिद्धान्त की स्थापना हेतु इस नवीन ज्ञान के परीक्षण के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। नवीन ज्ञान की रचना, प्रयोग, जाँच की प्रक्रिया, तथ्यों के स्वयं सहमति या असहमति आदि हेतु अपनाए जाने वाली प्रक्रिया तथा कारणों को दार्शनिकरण कहा जा सकता है। अतः दार्शनिकरण ज्ञान या सत्य तक पहुँचने की विधि

है जिसे "दर्षनषास्त्र" कहते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा सुकरात शिक्षण की अपनी अन्य विधि को विकसित करता है। वह अपने विद्यार्थियों के समझ अपने प्रश्नों को प्रस्तुत करता था उत्तम उत्तर द्वारा इसे पढ़ाने हेतु आमंत्रित करता था। तब वह उनके सत्य तक पहुँचने तक परिवर्तन हेतु उनके उत्तरों की समीक्षात्मक परीक्षण में उनकी सहायता करता था।

**अपनी प्रगति जाँचें 5.1**

**नोट** : क) अपने उत्तर नीचे दिये गये स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से करें।

1. "दर्शनशास्त्र" पद को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

2. कुछ विश्लेषक दार्शनिकों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

3. "दार्शनिकरण" पद की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

## 5.4 दर्शनशास्त्र की परिभाषाएँ

एक शिक्षार्थी के रूप में आप दार्शनिकों द्वारा **दर्शनशास्त्र** की दी गई परिभाषाओं से दर्शनशास्त्र के अध्ययन को आरंभ करने में बहुत असहज हो सकते हैं। आप देख सकते हैं कि इनमें से कुछ मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर बल देते हैं तथा कुछ अन्य मूल्यों को महत्व देते हैं। दर्शनशास्त्र मस्तिष्क में प्रश्नों को उत्पन्न करता है तथा पुनः यह मनुष्य को उसके विद्यमान ज्ञान, अनुभवों या नवीन ज्ञान के निर्माण के प्रयास से प्रश्नों के उत्तर की प्राप्ति हेतु करता है। यह इसके लिए उपयुक्त उत्तरों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित प्रश्नों को उठाता है:

- ज्ञान क्या है?
- विश्व क्या है?
- विश्व का निर्माण किसने किया है?
- क्या भगवान है?
- मैं कौन हूँ?
- जीवन का लक्ष्य क्या है?
- मुझे क्यों जीना चाहिए?
- इस संसार का क्या प्रयोजन है?

महान दार्शनिकों द्वारा दर्शनशास्त्र की दी गई परिभाषाएँ मुख्यतः उपरोक्त प्रश्नों को संबोधित करती हैं तथा इन प्रश्नों के उत्तर की प्राप्ति हेतु प्रक्रियाओं की भी व्याख्या करती हैं। अतः यह ठीक कहा गया है "जो व्यक्ति बहुत से प्रश्नों को पूछता है, प्रश्नों के उत्तर को प्राप्त करने का प्रयास करता है तथा उत्तरों से कभी संतुष्ट नहीं होता है वास्तव में दार्शनिक होता है।" इस दृष्टि से विभिन्न दार्शनिकों द्वारा दी गई शिक्षा की कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:

*"जब भी दर्शनशास्त्र को गंभीरतापूर्वक लिया गया है, यह सदैव माना गया है कि वह ज्ञान प्राप्ति को प्रकट किया जो जीवन के व्यवहार का प्रभावित करेगा।"*

*– जॉन डिवी*

*"दर्शनशास्त्र अनुभव के विषय में निष्कर्षों के बजाए अनुभव तक पहुँच की आवश्यक मनोवृत्ति या प्रविधि है।"*

*– एडगर एस. ब्राइटमैन*

*"यदि मैं एक वाक्य में दर्शनशास्त्र के विषय में उत्तर देने के लिए सीमित होता तो मैं कहता कि दर्शनशास्त्र समीक्षा का एक सामान्य सिद्धान्त है।"*

*– सी. जे. ड्यूकेस*

*"दर्शनशास्त्र विश्व के परिवर्तन के क्रम में इसकी व्याख्या है।"*

*– कार्ल मार्क्स*

*"मनुष्य अपने जीवन दर्शनशास्त्र विश्व की अपनी अवधारणा के अनुरूप जीते हैं। यह विचारहीन होते हुए भी सत्य है। तत्वमीमांसा के बिना जीवनयापन असंभव है।"*

*– हक्सलें*

*"दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू है; दोनों एक–दूसरे का अर्थ प्राप्त करते हैं; एक जीवन का विचार या चिंतनषील पक्ष है और दूसरी क्रिया पक्ष है।"*

*– जे. एस. रॉस*

*"वह जिसे सभी प्रकार के ज्ञान का आस्वादन होता है तथा उत्सुक जिज्ञासु होता है और कभी संतुष्ट नहीं होता है उसे दार्षनिक कहा जाता है।"*

*– प्लेटो*

*"दर्शनशास्त्र एक विज्ञान है जो दैवीय तत्वों की वास्तविक प्रकृति की खोज करता है।"*

*– अरस्तु*

*"दर्शनशास्त्र जीवन का दृष्टिकोण है। यह जीवन को एक दिशा प्रदान करता है, तथा जीवनयापन हेतु एक स्वरूप देता है। "*

*– एस. राधाकृष्णन*

*"दर्शनशास्त्र एक ब्रह्मांड विज्ञान के रूप में प्रत्येक वस्तु से संबंधित हैं।"*

*– हर्बर्ट स्पेन्सर*

*"हमारा विषय ज्ञान के सिद्धान्त तर्कशास्त्र, ब्रह्मांड विज्ञान, नीतिशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र के साथ–साथ एकल सर्वेक्षण जैसे विज्ञानों का एक संग्रह है।"*

*– रॉ वुड सेलर्स*

*"अन्य अध्ययनों की तरह दर्शनशास्त्र प्राथमिक रूप से ज्ञान पर लक्षित होता है।"*

*– बर्ट्रान्ड रसेल*

*"विज्ञान एवं दर्शनशास्त्र में बहुत निकट का संबंध विद्यमान है। दोनों के उद्‌गम का मलू समान अर्थात् ज्ञान प्रेम हैं तथा दोनों के महत्वाकांक्षा का अन्त वास्तविकता का ज्ञान है। विज्ञान तथ्यों का वर्णन करता है तथा दर्शनशास्त्र उनकी व्याख्या करता है।"*

*– पैट्रिक*

*"विज्ञान की रूचि तथ्यों के समीपस्थ या योग्य कारणों में है जबकि दर्शनशास्त्र इसके अंतिम या परम कारणों से संबंधित है।"*

*– ब्रुबेकर*

*"दर्शनशास्त्र तथ्य विशेष के पीछे निहित सामान्य सत्य तथा प्रतीति के पीछे निहित वास्तविकताओं के अन्वेषण का अनवरत प्रयास है।"*

*– रेयमॉन्ट*

यदि आप प्रसिद्ध दार्शनिकों द्वारा दी गई परिभाषाओं का अध्ययन करते हैं तो आप निम्नलिखित

निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं:

- दर्शनशास्त्र का जन्म विशिष्ट अनुभवों, विशिष्ट परिस्थितियों तथा अवस्थाओं से हुआ है। अतः विभिन्न व्यक्तियों ने अपने द्वारा व्यतीत जीवन की विशिष्ट परिस्थितियों एवं दशाओं के अनुरूप विभिन्न जीवन दर्षनों को अपनाया है।
- दर्शनशास्त्र में गहरे ज्ञान के प्रयास हैं तथा यह प्रत्येक शास्त्र के ज्ञान आधार का एक विश्लेषण स्वरूप प्रदान करता है।
- वैज्ञानिक पृच्छा दर्शनशास्त्र का आधार है तथा दर्शनशास्त्र का विज्ञान से अंतरंग संबंध है। जैसा कि आप जानते हैं कि विज्ञान प्रकृति और जीवन की सत्यता जैसे पशु, पौधे या मानव का वर्णन करता है। ये सत्यता मानव जीवन के अभिन्न अंग हैं। ये सभी बालक के ज्ञान एवं अनुभवों के निर्माण के आधार हैं तथा आगे यह दर्शन का निर्माण करता है।
- दर्शनशास्त्र की एक मुख्य विशेषता यह है कि यह विशिष्ट अनुभवों, विशिष्ट परिस्थितियों एवं दशाओं से उत्पन्न होता है।
- उन लोगों को दार्शनिक कहा जा सकता है जो किसी न किसी रूप में सत्य की वास्तविकताओं का अन्वेषण करते हैं।
- मनुष्य अपने जीवन में जन्म से मृत्यु तक विभिन्न प्रकार के अनुभवों को प्राप्त करता है, ये अनुभव उनको नवीन ज्ञान प्रदान करते हैं तथा ज्ञान का यह अन्वेशण व्यक्ति विशेष को दार्शनिक बनाता है।

**अपनी प्रगति जाँचें 5.2**

**टिप्पणी** : क) अपने उत्तर नीचे दिये गये स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से करें।

4. दर्शनशास्त्र के किन्हीं दो मूलभूत पक्षों का उल्लेख दीजिए।

.....

.....

.....

5. जे. एस. रॉस तथा हर्बर्ट स्पैन्सर द्वारा दिए गए दर्शनशास्त्र की परिभाषा का विश्लेषण दीजिए।

.....

.....

.....

## 5.5 दर्शनशास्त्र की शाखाएँ

यह पूर्व के भागों में विमर्श किया गया है कि **दर्शनशास्त्र** ज्ञान, परिस्थितियों तथा अनुभवों का वर्णन करता है। ज्ञान को परिभाषित एवं स्वरूपित करना दर्शनशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। यह ज्ञान के प्रकार तथा ज्ञानार्जन की प्रक्रियाओं का लक्षण बतलाता है जो एक विषय या शास्त्र की पूर्ति करता है। यद्यपि ज्ञान दर्शनशास्त्र का प्रमुख प्रकार्य है, यह विज्ञान, वास्तविकताओं तथा जीवन के मूल्यों का भी विमर्ष करता है। अतः इस भाग में दर्शनशास्त्र की विभिन्न शाखाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है जो इसके विभिन्न पक्षों जैसे ज्ञान, वास्तविकता, मूल्यों आदि का वर्णन करता है। निम्नलिखित पक्षों में दर्शनशास्त्र की इन शाखाओं का अध्ययन किया जाए:

- तत्वमीमांसा
- ज्ञानमीमांसा
- मूल्यमीमांसा
- तर्कशास्त्र

### 5.5.1 तत्वमीमांसा

**"तत्वमीमांसा"** का व्युत्पतिक अर्थ **"भौतिक संसार से परे का विज्ञान"** अर्थात् **तत्वमीमांसा** शब्द परम सत्य पर विमर्श करता है जो इस भौतिक संसार से परे है। शब्द का अंग्रेजी रूपांतरण 'Metaphysics' है। 'Meta' का अर्थ "पश्चात्" या "परे" है तथा 'Physics' का अर्थ विज्ञान है। अर्थात् इसे "विज्ञान के पष्चात्" के अध्ययन के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। "विज्ञान के पश्चात्" पद प्रकृति में सारतत्व है तथा यह अपनी अनुभूति में कुछ आध्यात्मिक है। बहुत से दार्शनिक तत्वमीमांसा को "सत्य या वास्तविकता का सिद्धान्त" कहते हैं।

तत्वमीमांसा का अर्थ परम सत्य की प्रकृति का अध्ययन है तथा इसमें अस्तित्व की प्रकृति के विषय में अनुमान सम्मिलित हैं। यह यथार्थ रूप में सत्य क्या है पर प्रश्न उठाता है। यथार्थ की प्रकृति के विषय में विश्वास निर्धारित करता है कि कोई व्यक्ति किस प्रकार ब्रह्मांड तथा समाज से संबंध का प्रत्यक्षीकरण करता है। उनकी मान्यताएँ बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न उठाते हैं जैसे यथार्थ क्या है तथा क्या नहीं हैं? यह अग्रलिखित प्रश्नों के उत्तर देना प्रारंभ करना है? क्या अस्तित्व का आध्यात्मिक क्षेत्र है या भौतिकता यथार्थ है? ब्रह्मांड का मूल्य क्या है? क्या यह स्वभावतः अपने स्वरूप द्वारा प्रयोजनार्थ है या हम अपना प्रयोजन स्वयं निर्मित करते हैं? अतः तत्वमीमांसा यथार्थ की प्रकृति के विषय में उनके अनुमानों के अनुसार विभिन्न निष्कर्ष निकालती है। अतः तत्वमीमांसा को "यथार्थ का सिद्धान्त" भी कहा जाता है।

### तत्वमीमांसा तथा इसका शिक्षा के साथ संबंध

आप यह जानकर उत्सुक होंगे कि तत्वमीमांसा का शिक्षा के सिद्धान्त एवं व्यवहार से कई तरह से अथवा किस प्रकार से संबंधित है? अध्ययन के विषय या क्षेत्र, अनुभव तथा पाठ्यचर्या के कौशल समाज द्वारा मान्य यथार्थ की अवधारणा को प्रगट करते हैं जो शैक्षिक संस्थानों का समर्थन करता है। बहुत से विद्यालयी विषय जैसे इतिहास, भूगोल, रसायनशास्त्र आदि विद्यार्थियों को यथार्थ के निश्चित आयामों का वर्णन करते हैं। माध्यमिक विद्यालय विज्ञान में यदि एक विद्यार्थी ब्रह्मांड के उद्भव पर विमर्ष द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि संपूर्णतः ब्रह्मांड का कोई प्रयोजन नहीं है तो यह अनुसरण करता है कि उसके जीवन में केवल यह अर्थ है कि वह व्यक्तिगत रूप से यह अर्थ निकालता है कि ऐसा होना चाहिए। पुनः भूगोल में पृथ्वी का माप, ऊँचाई, विभिन्न प्रदेशों में मौसम एवं वातावरण, विभिन्न भूदृश्यों तथा इन भूदृष्यों में फसलों की उपयुक्तता आदि जैसी अवधारण ाएँ इस विषय में ज्ञान के आधार है परन्तु जब हम उन भौगोलिक तत्वों के अस्तित्व एवं यथार्थ तथा मानव समाज हेतु इसकी उपयोगिता की गुणवत्ता की बात करते हैं तो यह उस विषय या अध्ययन क्षेत्र के तत्वमीमांसा से कुछ संबंध रखता है। इस प्रकार विभिन्न विषयों में ज्ञान का आधार होता है साथ ही साथ यह इस ज्ञान के यथार्थ को संबोधित करता है जिसका अर्थ तत्वमीमांसा है।

ज्ञान के पक्षों के संबोधन के साथ किसी अध्ययन क्षेत्र में विषयवस्तुओं के तत्वमीमांसीय दृष्टिकोणों को विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों, पाठ्यचर्या तथा शिक्षण विधियों के स्वरूपण में समुचित रूप से ध्यान रखा जा रहा है।

## 5.5.2 ज्ञानमीमांसा

**ज्ञानमीमांसा** को "ज्ञान के सिद्धान्त" के रूप में परिभाषित किया जाता है। दर्शनशास्त्र की यह शाखा ज्ञान की उत्पत्ति, प्रकृति, विधियों एवं ज्ञानार्जन की प्रक्रियाओं का अन्वेषण करती है। अन्य शब्दों में ज्ञान की प्रकृति एवं मूल्य, ज्ञानार्जन की विधियाँ आदि ज्ञानमीमांसा के अंतर्गत आते हैं। अतः दर्शनशास्त्र की यह शाखा निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार करती हैं:

हम कैसे जानते हैं?

- हम क्या जानते हैं?
- जानने की किस प्रक्रिया को विश्व तथा समाज के ज्ञान के आधार पर हम रखते हैं?
- कौन–सा प्राधिकार है जिस पर हम सत्य हेतु अपना दावा आधारित करते हैं?
- क्या हमारे ज्ञान के दावे दैवीय प्रगटीकरण, अनुभवजन्य साक्ष्य या व्यक्तिनिष्ठ अथवा वस्तुनिष्ठ अनुभवों से ग्रहण होते हैं?

उपरोक्त सभी प्रश्न ज्ञान की खोज को संबोधित करते हैं। तथ्यों को उजागर करना, प्रयोग, पृच्छा एवं परीक्षण ज्ञानार्जन की प्रक्रियाएँ हैं जो ज्ञानमीमांसा के अंतर्गत आती हैं। इस प्रकार ज्ञानमीमांसा सज्ञांनात्मक क्षेत्र को संबोधित करता है।

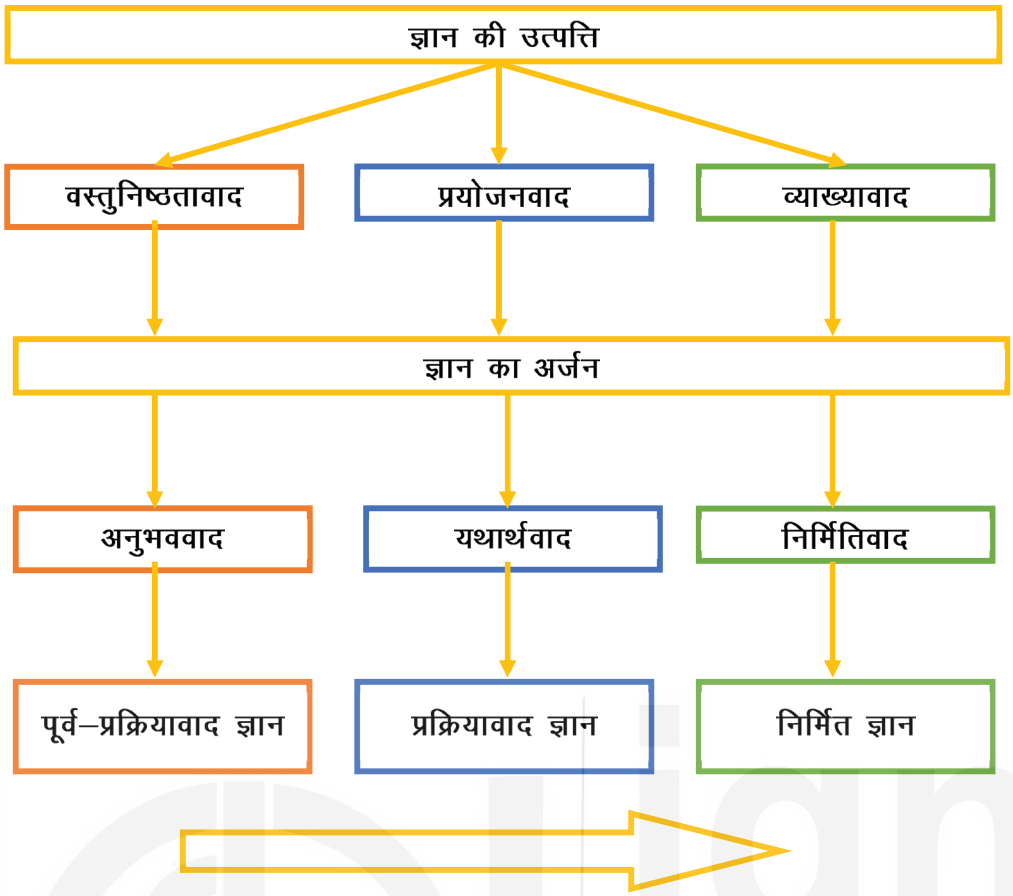


चित्र 5.1 : मूख्य ज्ञानमीमांसा पदों

(स्रोत : http://www.ucdoer.ie/index.php/Education_Theory/Epistemology_and_Learning_Theories वेबसाइट से 28 जनवरी 2020 को उद्धृत)

आकृति 1 दर्शनशास्त्र की ज्ञानमीमांसीय शाखा के अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति को प्रस्तुत करती है। ज्ञान की उत्पत्ति वस्तुनिष्ठतावाद, प्रयोजनवाद तथा व्याख्यावाद से हो सकती है। वस्तुनिष्ठ ज्ञान अनुभव से अर्जित किया जा सकता है जो इन्द्रियजन्य अनुभवों द्वारा संभव है। वस्तुनिष्ठतावाद के अनुसार ज्ञान का अस्तित्व है तथा यह वास्तविक है अतः ज्ञान निर्माण की आवष्यकता नहीं है। ज्ञानार्जन का अन्य प्रकार प्रयोजनवाद है जो यह बल देता है कि ज्ञान का एक सत्य नहीं होता है। ज्ञान का परीक्षण प्रयोग, व्याख्या, अनुभव तथा निर्माण किया जा सकता है। अन्य विधि व्याख्यावाद है जो बल देती है कि ज्ञान की रचना की जा सकती है, ज्ञान एकरूप या समान नहीं होता है यद्यपि इसका अस्तित्व कई रूपों में होता है। प्रत्यके व्यक्ति को तथ्यों की व्याख्या, विद्यमान ज्ञान से अपने अनुभवों को जोड़ना तथा अपने स्वयं के ज्ञान की रचना भी करने की क्षमता होती है।

### ज्ञानमीमांसा तथा शिक्षा

ज्ञानमीमांसा शब्द का विवरण सभी शास्त्रों में प्रस्तुत है। प्रायः हम कहते हैं कि शास्त्रीय या विषयगत ज्ञान होता है अर्थात् प्रत्येक शास्त्र में ज्ञान के कुछ नियम तथा सिद्धान्त के साथ ज्ञान का आधार होता है। उदाहरणार्थ मनोविज्ञान में कुछ नियम तथा सिद्धान्त होते हैं; इसी प्रकार षिक्षा में कई शिक्षणशास्त्रीय नियम हैं जो अवधारणा की समझ में तथा उपयुक्त शिक्षणशास्त्र के उपयोग द्वारा इस अवधारणा के शिक्षण में हमारी सहायता करते हैं। ज्ञानमीमांसा शिक्षण–अधिगम की विधियों से निकट रूप से संबंधित है उदाहरण के लिए आदर्शवादी मान सकते हैं कि ज्ञान विचारों पर आधारित है जो मस्तिष्क में उपस्थित रहते हैं परन्तु व्यक्ति को इसकी जानकारी नहीं होती है। एक आदर्षवादी हेतु उपयुक्त

शैक्षिक विधि सुकरात वार्तालाप हो सकता है जिसमें शिक्षक अग्रणी प्रश्नों को पूछकर विद्यार्थी के सचेतन मन में गुप्त विचारों को लाने का प्रयास करता है। जबकि अस्तित्ववादी तर्क कर सकता है कि हम अपनी इच्छा द्वारा अपनी मान्यता के चयन द्वारा स्वयं के ज्ञान की रचना करते हैं।

अतः यह कहना कठिन है एक शास्त्र का अस्तित्व ज्ञान के आधार, इसमें जीवन ज्ञान का अर्जन तथा निर्माण हेतु विधियाँ एवं अभ्यास के बिना होता है। ज्ञानमीमांसीय दर्शन इस पर भी बल देता है कि शास्त्र में शोध का आधार तथा मजबूत समर्थकों का एक समूह होता है जो उस शास्त्र में विभिन्न अनुसंधान करते हैं तथा परिवर्तन लाते हैं। इसमें शैक्षिक प्रदर्शन भी होता है तथा इसे एक विषय या शास्त्र के रूप में शिक्षा व्यवस्था में पढ़ाया जाता है।

### 5.5.3 मूल्यमीमांसा

मूल्यमीमांसा दर्शनशास्त्र की एक शाखा है जिसे परिवर्तनों या मूल्यों के सिद्धान्त" के रूप में परिभाषित किया जाता है। मूल्यमीमांसा का उपभाग नीतिशास्त्र (Ethics) तथा सौन्दर्यशास्त्र (Aesthetics) है। नीतिशास्त्र में नैतिक मूल्यों या आचरण का दार्शनिक अध्ययन किया जाता है। सौन्दर्यशास्त्र, सौन्दर्य एवं कला के क्षेत्र में मूल्यों के अध्ययन से संबंधित है। कुछ विद्यालयी विषय जैसे कला, नाटक, संगीत, नृत्य आदि सौन्दर्य भावों की पूर्ति करते हैं तथा मानव जीवन को सौहार्द्रपूर्ण, संतुलित एवं सुन्दर बनाते हैं। अतः एक तरफ जहा तत्वमीमांसा यथार्थ की प्रकृति का वर्णन करने की कोशिश करता है वहीं मूल्यमीमांसा नैतिक आचरण तथा सौन्दर्य के सुझाव को इंगित करता है। ये सभी विमर्श शैक्षिक परिप्रेक्ष्य जैसे विषय, विद्यालयी वातावरण, विद्यार्थी–शिक्षक संबंधों आदि को भी प्रभावित करते हैं। मूल्यमीमांसा मुख्यतः ज्ञान के भावात्मक क्षेत्र का वर्णन करता है।

#### मूल्यमीमांसा एवं शिक्षा

मूल्यमीमांसा सामान्य रूप में शिक्षा व्यवस्था में तथा विशिष्ट रूप में पाठ्यचर्या निर्माण, विकास तथा प्रदायन में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती हैं आप शायद जानते होंगे कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (National Curriculum Frameworks - NCF) (2005) शिक्षा के भिन्न तत्व के रूप में मूल्य आधार एवं नैतिक शिक्षा पर बल देती है तथा इसे मूल विषयों के साथ एकीकृत भी करती है। अतः सौन्दर्य बोध, नैतिक तथा मूल्य शिक्षा, कला एवं हस्तकला, शांति शिक्षा आदि को विद्यालयी पाठ्यचर्या एवं पाठ्यवस्तु में एकीकृत करना पाठ्यचर्या समिति के समक्ष एक चुनौती है। आप जानते होंगे कि विभिन्न समयों में शिक्षा आयोगों एवं समितियों ने भी पाठ्यक्रमों एवं पाठ्यचर्या द्वारा शैक्षिक मूल्यों के क्रियान्वयन हेतु अपने प्रतिवेदनों में लिखा तथा महत्व दिया है। अतः मूल्यमीमांसा का प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में बहुत पहले से प्रत्यक्ष प्रभाव है। अन्य शब्दों में यह किसी शिक्षा शिक्षा व्यवस्था का हृदय है। जीवन कौशल की अवधारणा जैसे स्वजागरूकता, समीक्षात्मक चिन्तन, निर्णयन, प्रभावी संप्रेषण, तनाव से निपटना, परानुभूति, रचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान, अंतर्वैयक्तिक संबंध तथा भावना नियंत्रण तथा विद्यालयी शिक्षा में इनका एकीकरण भी मूल्यमीमांसा तथा शिक्षा के महत्व पर बल देता है।

### 5.5.4 तर्कशास्त्र एवं शिक्षा

परिभाषा के अनुसार "तर्कशास्त्र" तर्क करने की विधि है जिसमें कथनों की एक श्रृंखला सम्मिलित होती है जिसमें प्रत्येक को निश्चित रूप से सत्य होना चाहिए यही इसके पहले कथन हैं। इसका संबंध व्यक्ति के अपने चिंतन के संगठन तथा क्रमबद्धता तथा एक समान प्रतिरूप के अनुसार तर्कों के निर्माण तथा किसी वस्तु की व्याख्या हेतु एक स्थिति के निर्माण के लिए उसके द्वारा सहायक साक्ष्यों के संगठन से है। तर्कशास्त्र के दो प्रमुख प्रतिरूप

आगमनात्मक तथा निगमनात्मक हैं। सिद्धान्त या नियम की स्थापना हेतु निगमनात्मक में सामान्य कथन या सिद्धान्त से विशिष्ट स्थितियों या उदाहरणों की तरफ बढ़ा जाता है जबकि आगमनात्मक में विशिष्ट उदाहरणों से सामान्यीकरण की तरफ बढ़ा जाता है।

**निगमनात्मक सिद्धान्त के उदाहरणः**

सभी मनुष्य मरणशील हैं .... रोहित एक मनुष्य है .... अतः रोहित मरणशील है। निगमनात्मक सिद्धान्त में हम सामान्य कथन (सभी मनुष्य मरणशील हैं) से विशिष्ट स्थिति (रोहित एक मनुष्य है, अतः रोहित मरणशील है) की तरफ बढ़ते हैं।

**आगमनात्मक सिद्धान्त के उदाहरणः**

रोहित मरणशील है.... अशोक मरणशील है... एलेक्स मरणशील है... हरजीत मरणशील है .... अंकित मरणशील है आदि।

उपरोक्त विशिष्ट दृष्टांतों का अभिप्राय है कि सभी मनुष्य है अतः हम कह सकते हैं कि "सभी मनुष्य मरणशील है"।

आगमनात्मक सिद्धान्त में व्यक्ति विशिष्ट उदाहरण या स्थिति से व्यापक सामान्यीकरण की ओर बढ़ता है।

### 5.5.5 दर्शनशास्त्र की शाखाएँ तथा उनके मूलभूत प्रश्न

पूर्व के भागों से आपदर्शनशास्त्र की विभिन्न शाखाओं से परिचित हो चुके हैं। तालिका 5.1 में दर्शन शास्त्र की विभिन्न शाखाओं एवं ज्ञान की खोज, यथार्थ, मूल्य एवं तार्किक चिंतन में इनके द्वारा प्रयुक्त मूलभूत प्रश्नों को यहाँ सुझाया गया है।

**तालिका 5.1: दर्शनशास्त्र की शाखाएँ एवं इनके मूलभूत प्रश्न**

| तत्वमीमांसा | ज्ञानमीमांसा | मूल्यमीमांसा | | तर्कशास्त्र |
|---|---|---|---|---|
| | | नैतिक मूल्य | सौन्दर्यात्मक मूल्य | |
| यह परीक्षण करता है कि | यह परीक्षण करता है कि | यह परीक्षण करता है कि | यह परीक्षण करता है कि क्या | उचित विचार के नियमों का |
| परम सत्य क्या है? | ज्ञान क्या है तथा हम कैसे जानते हैं? | क्या उचित या अनुचित अच्छा तथा बुरा है। | सुन्दर या कुरूप है। | परीक्षण करता है। |
| क्या यथार्थ एक संज्ञानात्मक या आध्यात्मिक घटना है? | क्या सत्य अंतः प्रज्ञा, विषयनिष्ठ और व्यक्तिगत होता है? | क्या नैतिक मूल्य आचरण वस्तुनिष्ठ तथा सार्वभौमिक के मानक हैं, ब्रह्मांड की प्रकृति पर चिंतन है? | क्या सौन्दर्य सार्वभौमिक, संपूर्ण तथा अपरिवर्तनशीलता पर एक चिंतन है? | क्या निगमनात्मक तर्कशास्त्र सामान्य सिद्धान्त से विशिष्ट उदाहरण की तरफ है? |
| क्या वस्तुनिष्ठ यथार्थ मानव मस्तिष्क के बाहर विद्यमान होता है? | क्या सत्य एक अलौकिक अथवा पवित्र ग्रंथ में भगवान से प्रगट होता है? | क्या नैतिक मूल्य विषयनिष्ठ या/ और व्यक्तिगत पसंद एवं नापसंद है? | क्या सौन्दर्य धारक की दृष्टि में विषयनिष्ठ है? | क्या आगमनात्मक तर्कशास्त्र विशिष्ट उदाहरण से सामान्य सिद्धान्त की ओर है? |
| क्या यथार्थ व्यक्ति के अनुभव पर आधारित है? | क्या सत्य तर्कशक्ति से प्रगट होता है? | क्या नैतिक मूल्य सांस्कृतिक सापेक्ष, समयानुसार सांस्कृतिक मानकों पर आधारित है? | क्या सौन्दर्य सांस्कृतिक पसंदों द्वारा निर्धारित होता है? | – |
| क्या व्यक्ति अपने स्वयं की वास्तविवकता या यथार्थ का निर्माण करता है? | क्या सत्य अनुभवजन्य है जिसे हमारी इन्द्रियों के उपयोग तथा वैज्ञानिक विधि द्वारा निर्मित होता है? | – | – | – |

दर्शनशास्त्र की उपरोक्त शाखाएँ तालिका में प्रस्तुत मूलभूत प्रश्नों पर केन्द्रित हैं तथा इसके अनुसार शिक्षा उन प्रश्नों के उत्तर की प्राप्ति में सहायता करती है। उपरोक्त प्रश्नों के स्वीकार्य उत्तर की प्राप्ति शिक्षा का कार्य है। शैक्षिक अभ्यास वस्तुओं के शैक्षिक प्रयोग एवं अवलोकन द्वारा विमर्श में संलग्न करता है तथा कुछ निश्चित शैक्षिक सिद्धान्तों एवं नियमों को भी विकसित करता है। आगे ये शैक्षिक सिद्धान्त एवं नियम शिक्षण–अधिगम प्रविधियों, विधियों, सूत्रों आदि के उपयोग द्वारा क्रियान्वित कराए जाते हैं। जिसे हम शिक्षणशास्त्र कहते हैं।

**अपनी प्रगति जाँचें 5.3**

**टिप्पणी** : क) अपने उत्तर नीचे दिये गये स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से करें।

6. "तत्वमीमांसा" की अवधारणा की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

7. दर्शनशास्त्र की विभिन्न शाखाएँ क्या हैं?

.....

.....

.....

8. "तर्कशास्त्र" के प्रमुख दो प्रतिरूपों का उल्लेख कीजिए तथा प्रत्येक का एक–एक उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

## 5.6 शिक्षा एवं दर्शनशास्त्र : अंतर्संबंध

शिक्षा एवं दर्शनशास्त्र के मध्य संबंध के विमर्श से पूर्व षिक्षा की अवधारणा को समझा जाए। आप पूर्व में ही इस पाठ्यक्रम की इकाई 1 में शिक्षा की अवधारणा एवं प्रकृति का अध्ययन कर चुके हैं। अवधारणा की पुनरावृत्ति हेतु हम कह सकते हैं कि "शिक्षा" (Education) शब्द लैटिन भाषा के शब्दों 'Educare', 'Educere' और 'Educatum' से बना है। 'Educare' शब्द का अर्थ पालन–पोषण करना होता है। 'Educere' शब्द का अर्थ अग्रसर करना (Lead forth) अथवा आगे बढ़ाना (draw out) होता है। पुनः 'Educatum' शब्द में दो शब्द निहित हैं अर्थात् 'E' तथा 'Duco'A यहाँ 'E' का अर्थ, अंतर्गमन (inward) से बर्हिगमन (outward) की गति तथा 'Duco' का अर्थ विकसित करना (developing) अथवा उन्नत करना (progressing) करना है।

अतः हम कह सकते हैं कि "शिक्षा का अर्थ बालक के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास हेतु उसका अच्छे से पालन–पोषण करना है। अन्य शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि शिक्षा बालक को अज्ञानता से ज्ञान की ओर अग्रसर कर सकती है। इसके अतिरिक्त "शिक्षा" शब्द के अर्थ का अभिप्राय आंतरिक से बाह्य की तरफ बालक का विकास तथा प्रगति भी है।

उदाहरणार्थ, हम जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में कुछ आंतरिक क्षमताएँ, अनुभव तथा समझ होती है। शिक्षा व्यक्ति को उन आंतरिक क्षमताओं की पहचान में उसकी सहायता करती है तथा अवसरों को प्रदान करते हुए सर्व व्यक्ति की सहायता करते हुए इसे प्रकाश में लाती है।

अन्य शब्दों में, शिक्षा तथा दर्शनशास्त्र के मध्य संबंध की समझ के क्रम में शिक्षा के प्रमुख पक्षों की दृष्टि अर्थात् शिक्षा के लक्ष्य, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ तथा शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध से दो विषयों के मध्य संबंध को विस्तृत रूप में समझना अच्छा होगा।

### 5.6.1 दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा में अंतर्संबंध

दर्शनशास्त्र तथा शिक्षा में पूरक एवं अभिन्न संबंध है। विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्त एवं नियम बार–बार शिक्षा में क्रियान्वित करने हेतु शैक्षिक विमर्शों में विकसित एवं उपयुक्त हुए हैं। यह कहना उचित है कि दर्शनशास्त्र ज्ञान के विकास का सैद्धान्तिक पक्ष है तथा शिक्षा उस ज्ञान का विद्यार्थियों में क्रियान्वयन हेतु व्यावहारिक तथा क्रियान्वयन पक्ष है।

दर्शनशास्त्र मानव जीवन के विकास का साधन है। दर्शनशास्त्र मानव जीवन के लक्ष्य का निर्धारक होता है तथा शिक्षा इन लक्ष्यों की प्राप्ति के एक साधन के रूप में भूमिका निर्वाह करती है। दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा दोनों एक–दूसरे से अभिन्न एवं अंतर्निर्भरता के साथ संबंधित हैं। जे. एस. रॉस के अनुसार "दर्शनशास्त्र एवं षिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह है। दोनों एक–दूसरे का अर्थ प्रकट करते हैं एक जीवन का विचार पक्ष है तथा दूसरा क्रिया पक्ष है " (सक्सेना, 2009 द्वारा उद्धृत)। दर्शनशास्त्र जीवन की चिंतन की प्रक्रिया है तथा शिक्षा चिंतन प्रक्रिया को मूल रूप देने हेतु क्रियात्मक अंग है। शैक्षिक समस्याओं को शैक्षिक विमर्शों में अन्वेशित किया जाता है तथा इसे सैद्धान्तिक स्वरूप प्रदान करने हेतु एवं उन समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करते हेतु दर्शनशास्त्र के साथ कुछ सीमा तक इसका जुड़ाव है। अतः शैक्षिक उद्देश्यों, व्यवस्था, संगठन तथा शिक्षा विधियों को समझने से पूर्व दर्षनषास्त्र को समझना महत्वपूर्ण है।

दर्शनशास्त्र एवं षिक्षा के मध्य संबंध स्थापित करते हुए सक्सेना (2009) ने अपनी पुस्तक "प्रिंसिपल्स ऑफ एजुकेषन " (Principles of Education) में निम्नलिखित बिन्दुओं को अवलोकित किया है:

- दर्शनशास्त्र शिक्षा के लक्ष्यों की ओर वास्तविक गंतव्य को निर्धारित करता है।
- दर्शनशास्त्र जीवन के लक्ष्य का निर्धारक होता है तथा शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इसे समुचित एवं प्रभावी निर्देशन तथा पर्यवेक्षण प्रदान करता है।
- दर्शनशास्त्र अधिगम के सिद्धान्तों तथा नियमों को प्रदान करता है जबकि शिक्षा शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया में उन नियमों एवं सिद्धान्तों का क्रियान्वयन करती है।
- सच्ची शिक्षा का अभ्यास एक सच्चे दार्षनिक द्वारा ही होता है (स्पैन्सर)।
- दर्शनशास्त्र शिक्षा के विभिन्न पक्षों जैसे शिक्षण विधियों, शिक्षण के सिद्धान्त, पाठ्यचर्या तथा शिक्षक एवं विद्यार्थियों की भूमिकाओं को निर्धारित करता है।
- दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह हैं, एक ही चीज के भिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं तथा एक–दूसरे के अर्थ अथवा अभिप्राय को प्रकट करते हैं।
- प्रत्येक काल में महान पाठ्यचर्या महान शिक्षाविद हुए हैं जैसे प्लेटो, डिवी, रूसो, गाँधी, अरविन्द आदि।

- शिक्षा दर्शनशास्त्र का क्रियात्मक पक्ष है (जॉन एड्म्स) क्योंकि शिक्षा दर्शनशास्त्र के विचारों को कार्य एवं अभ्यास में परिवर्तित करती है।
- दर्शनशास्त्र जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित करता है जबकि शिक्षा लक्ष्यों की प्राप्ति का साधन है।

(स्रोतः यह भाग 5.6.1, बी.एड. बी.ई.एस.–122, समकालीन भारत एवं शिक्षा , खण्ड 3, पृ. 27–28, इग्नू 2016 से लिया गया है।)

अब शिक्षा के विभिन्न अन्य पक्षों में दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा के मध्य अंतर्संबंध पर विचार किया जाए। आगामी उपभाग शिक्षा के लक्ष्यों के संदर्भ में दर्शनशास्त्र का वर्णन किया गया है।

## 5.6.2 दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा के लक्ष्य

दर्शनशास्त्र शिक्षा के लक्ष्यों का निर्धारण करता है। हम सब जानते हैं कि शिक्षा एक वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोजनपूर्ण गतिविधि है। शिक्षा के लक्ष्य, जीवन के लक्ष्यों से संबंधित हैं। पुनः जीवन के लक्ष्य निश्चित समय में दर्षनषास्त्र की रचना हैं (सक्सेना, 2009)। अतः शिक्षा के लक्ष्य दर्शनशास्त्र द्वारा निर्धारित होते हैं। हम अपने जीवन के लक्ष्यों के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य निर्मित करते हैं तथा जीवन के लक्ष्य जीवन दर्शन द्वारा निर्धारित होते हैं। अतः शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति के जीवन दर्शन से परे कभी नहीं हो सकता है। अतः जब जीवन के लक्ष्य परिवर्तित होते हैं तब इसी के अनुरूप शिक्षा के लक्ष्य भी परिवर्तित होते हैं। उदाहरणार्थ जब हमारे जीवन का लक्ष्य आजीविका का प्रबंध करना तथा समाज में बने रहना है अतः षिक्षा के लक्ष्यों को उन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निर्धारित किया जाता है तथा इसी के अनुरूप शिक्षा व्यक्तियों को उनकी आजीविका की प्राप्ति हेतु तथा कार्य संसार में उनको संलग्न करने के लिए उनके काशलों को तैयार करती है।

अतः विभिन्न कालों में दार्शनिक एवं शिक्षाविद जीवन के लक्ष्यों के विषय में सरोकार में रखते हैं तथा इसी के अनुसार षिक्षा के लक्ष्य क्रियान्वित किए गए हैं। अब आप इसे प्राचीन समय अर्थात् प्राचीन एवं मध्य काल तथा वर्तमान आधुनिक काल में भी जीवन के लक्ष्यों तथा शिक्षा के लक्ष्यों से संबंधित कर रहे होंगे। आधुनिक काल में विज्ञान एवं तकनीक का विकास स्वतः नहीं हुआ है। यद्यपि वर्तमान समय में जीवन के लक्ष्य तथा व्यक्ति की शिक्षा पर चिंतन है।

इसके अतिरिक्त विभिन्न पाठ्यचर्या परंपरा जैसे आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद, यथार्थवाद आदि में षिक्षा के लक्ष्य पाठ्यचर्या सिद्धान्तों के अनुसार भिन्न–भिन्न हैं। आप इस खण्ड की अगली इकाई (इकाई 6) में दर्शनशास्त्र की विभिन्न परम्पराओं तथा उनके शिक्षा के लक्ष्यों के विषय में विस्तृत अध्ययन करेंगे। अतः भिन्न–भिन्न कालों में शिक्षा के लक्ष्य भिन्न–भिन्न थे क्योंकि उन कालों में सामाजिक जीवन दर्षन भी भिन्न–भिन्न थे। उदाहरण के लिए प्राचीन काल, मध्यकाल तथा आधुनिक काल में शिक्षा के लक्ष्य भिन्न–भिन्न थे क्योंकि लक्ष्य समय द्वारा निर्धारित होते हैं। उपरोक्त विमर्श यह स्पष्ट करता है कि दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा के लक्ष्य एक–दूसरे से निकटस्थ संबंधित हैं।

## 5.6.3 दर्शनशास्त्र एवं पाठ्यचर्या

विद्यालयी पाठ्यचर्या का विकास किसी शिक्षा व्यवस्था में एक बहुत महत्वपूर्ण घटक है। विद्यालयी पाठ्यचर्या विद्यार्थियों के जीवन को निहित विषयवस्तु एवं पाठ्यक्रमों से जोड़ता है जो हमारे पाठयचर्चा में सामुदायिक अपेक्षाओं तथा सामाजिक अभ्यासों से सीधा बटा लगाव होता है। अतः दर्शनशास्त्र शिक्षा के लक्ष्यों को निर्धारित करता है इसलिए यह पाठ्यचर्या को निर्धारित करता है। पुनः ठीक जिस तरह शास्त्र का एक दार्शनिक परिप्रेक्ष्य होता है।

उसी तरह पाठयचर्चा तथा विषयों या पाठयक्रमों का भी दार्शनिक परिप्रेक्ष्य होता है। किसी देश/समाज का दर्शन पाठ्यचर्या में प्रतिबिम्बित होता है तथा इसी के अनुरूप विद्यालयी गतिविधियों एवं अनुभवों का स्वरूप दिया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी देश का दर्शन लोगों में लोकतांत्रिक अभिवृत्तियों का प्रसार करना है तब इसे विद्यालयी पाठ्यचर्या में लोकतांत्रिक सिद्धान्तों को सम्मिलित कर किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, यदि किसी देश का दर्षन अपने नागरिकों को कार्य संसार में संलग्न कर आत्मनिर्भर बनाना है तब शिक्षा का लक्ष्य विद्यालयी पाठ्यचर्या में हस्तकला एवं कौशल आधारित शिक्षा व्यवस्था को सम्मलित कर देश/समाज में इसका विकास एवं क्रियान्वयन होगा।

हम और अधिक उदाहरणों द्वारा दर्शनशास्त्र एवं पाठ्यचर्या के मध्य संबंध की अवधारणा को स्पष्ट कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि देष का प्रमुख लक्ष्य सांस्कृतिक धरोहर को हस्तांतरित तथा संरक्षण करना है तब विद्यालयी पाठ्यचर्या को इस प्रकार निर्मित किया जाएगा कि इसे पाठ्यचर्या में सम्मिलित कर विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता का बोध विकसित किया जा सके तथा देश की सस्कृति पर सेमिनार, गतिविधियों, कार्यशालाओं का आयोजन कर विद्यार्थियों में इसके प्रति जागरूकता विकसित किया जा सकता है।

यदि देश का दर्शन विज्ञान एवं तकनीक का विकास करना है तब शिक्षा एवं पाठ्यचर्या के लक्ष्य पाठ्यचर्या में पृच्छा एवं परियोजना आधारित ज्ञान को सम्मिलित कर विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास पर आधारित होने चाहिए तथा इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को इन क्षेत्रों में अध्ययन तथा कौशल अर्जन के अवसर दिए जाने चाहिए।

आप पाठ्यचर्या निर्माण में दर्शनशास्त्र के महत्व के विषय में उपरोक्त उदाहरणों का अवलोकन किए होंगे। प्रयोजनवादी दर्शन अनुभवजन्य ज्ञान के मूल्य की विधियों पर विमर्श करता है, अतः वे अंतर्निहित विचारों के बजाय इन्द्रियों की सक्रिय संलग्नता वाले शिक्षण विधियों का महत्व देते हैं। दूसरी तरफ औचित्यवादी विचारक आंतरिक ज्ञान पर बल दते हैं तथा ज्ञान केवल औचित्यपूर्ण विचार द्वारा विकसित होता है। डेविड हुमे ने ठीक कहा है कि निश्चितता केवल गणित में ही संभव हो सकती है परन्तु विज्ञान के क्षेत्र में नहीं जबकि समीक्षात्मक दार्शनिक यह समर्थन करते हैं कि ज्ञान न तो पूर्ववर्ती और न ही परवर्ती है। अतः वे सभी प्रायोगिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान में विश्वास करते हैं तथा ज्ञान की अपनी समझ के अनुसार पाठ्यचर्या का निर्माण करते हैं।

### 5.6.4 दर्शनशास्त्र एवं शिक्षण विधियाँ

दर्शनशास्त्र शिक्षण विधियों से समीपस्थ रूप से संबंधित है। इस खण्ड की अगली इकाई (इकाई 6) में आप विभिन्न दार्शनिक विचारों द्वारा व्यक्त विशिष्ट शिक्षण विधियों का अध्ययन करेंगे। आदर्शवादी दर्शन परंपरागत विधि जैसे व्याख्यान विधि को शिक्षा विधि के रूप में सुझाता है।

प्रकृतिवादी दर्शन स्वाध्याय विधि पर बल देता है तथा शिक्षकों की भूमिका "सुविधा प्रदायक एवं निर्देशक" के रूप में मानता है। प्रयोजनवादी दर्षन शिक्षण हेतु गतिविधि, समस्या समाधान तथा परियोजना विधि को षिक्षण विधियों के रूप में बल देता है। आदर्शवादी दर्शन शिक्षक केन्द्रित विधियों को महत्व देता है। प्रकृतिवादी दर्शन विद्यार्थियों हेतु स्वतंत्रता की अबाध अवधारणा में विश्वास करता है एवं स्व–अध्याय विधि को महत्व देता है। प्रयोजनवादी दर्शन अध्ययन हेतु विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक स्वतंत्रता प्रदान करता है एवं बाल–केन्द्रित विधियों जैसे गतिविधि एवं परियोजना विधियों का क्रियान्वयन करता है। उपरोक्त विमर्श यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि दर्शनशास्त्र का शिक्षण विधियों से गहरा संबंध है।

### 5.6.5 शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के मध्य संबंध

शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक–शिक्षार्थी में संबंध की आवश्यकता होती है। आप इसके विषय में जानते होंगे कि एक शिक्षक केवल एक विषयवस्तु विशेषज्ञ नहीं होता है यद्यपि वह सही अर्थों में एक दार्शनिक भी होता है। एक शिक्षक शिक्षार्थियों को प्रत्यक्षतः प्रभावित करता है। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि शिक्षार्थियों का व्यक्तित्व शिक्षकों के व्यक्तित्व द्वारा प्रभावित होता है।

जब हम दार्शनिक विचारों जैसे आदर्शवाद (Idealism), प्रकृतिवाद (Naturalism), प्रयोजनवाद (Pragmatism) आदि के अनुसार शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध की बात करते हैं हम पाते हैं कि आदर्शवादी शिक्षक–शिक्षार्थियों पर कठिन अनुशासन थोपने का प्रयास करते हैं तथा शिक्षक शिक्षण के साथ–साथ शिक्षार्थियों के व्यवहार को आकार देने में प्रमुख भूमिका निर्वाह करते हैं। इसके विपरीत प्रकृतिवादी षिक्षक षिक्षार्थियों को प्रचुर स्वतंत्रता देते हैं तथा वे शिक्षार्थियों हेतु मार्गदर्शक एवं सुविधाप्रदायक के रूप में कार्य करते हैं। वे मानते हैं कि विद्यार्थियों में अपने ज्ञान की रचना हेतु वृहत अनुभव होता है। पुनः प्रयोजनवादी शिक्षक कुछ नवीन रचना तथा नवाचार हेतु अपने विद्यार्थियों को नवीन तथा नवाचारी अवसर प्रदान करते हैं जो चीजों को समझने के परंपरागत उपागम से भिन्न होता है। प्रयोजनवादी शिक्षक मानते हैं कि परिवर्तन परम सत्य है तथा उनका प्रत्येक कार्य परिवर्तन की प्राप्ति की ओर निर्देशित होता है तथा इसके अनुरूप अपने विद्यार्थियों के व्यवहार का निर्माण करते हैं।

उपरोक्त विमर्श स्पष्ट करता है कि शिक्षक–शिक्षार्थी में संबंध की प्रकृति दार्शनिक सिद्धान्तों पर आधारित होता है जिसका वे अनुकरण करते हैं। अतः यह कहना उचित है कि दर्शनशास्त्र में शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने का निकट जुड़ाव है। शिक्षकों का एकात्मक, लोकतांत्रिक तथा निर्बाध व्यवहार प्रतिरूप अनायास नहीं है यद्यपि षिक्षण में शैक्षिक दर्षन विशेष के अभ्यास पर चिंतन है तथा यह विद्यार्थियों के उनके व्यवहार को आकार देने में सहायक है।

संक्षेप में, इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि सभी प्रकार के दर्शनशास्त्र शिक्षा की प्रकृति एवं स्वरूपों के निर्धारण में सहायता करते हैं। तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, नीतिशास्त्र आदि सभी शिक्षा के लक्ष्यों के अनुसार शैक्षिक कार्यक्रमों को सुसज्जित करने में अपनी भूमिका निर्वाह करते हैं।

**गतिविधि 1**

दिए गए दर्शन में शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध की प्रकृति का उल्लेख कीजिए।

आदर्शवादः

.....

.....

प्रकृतिवादः

.....

.....

प्रयोजनवाद

.....

.....

**अपनी प्रगति जाँचें 5.4**

**टिप्पणी** : क) अपने उत्तर नीचे दिये गये स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से करें।

9. दर्शनशास्त्र किस प्रकार शिक्षा के लक्ष्यों को निर्धारित करता है?

.....

.....

.....

10. जॉन डिवी द्वारा सुझाए गए शिक्षण विधियों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

11. दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा के मध्य किन्हीं दो संबंधों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

## 5.7 सारांश

इस इकाई में आप दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा की अवधारणा तथा दोनों के अंतर्संबंधों का अध्ययन कर चुके हैं। हमने दर्शनशास्त्र को दार्शनिकरण की प्रक्रिया तथा संश्लेषण एवं विश्लेषण की भी प्रक्रिया के रूप में विमर्श किया है। दर्शनशास्त्र की विभिन्न शाखाओं जैसे तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा तथा तर्कशास्त्र पर एक संक्षिप्त चर्चा प्रस्तुत की गई है ताकि आप विद्यमान शैक्षिक व्यवस्था तथा दार्शनिक सिद्धान्तों के साथ अंतर्संबंध के एक गहरे झलक को समझने में सक्षम होंगे। यह इकाई शैक्षिक लक्ष्यों के निर्धारण, पाठ्यचर्या, शिक्षण की प्रक्रिया तथा विधियाँ तथा शिक्षक–शिक्षार्थी संबंधों के रूप में शिक्षा एवं दर्शनशास्त्र में संबंध की समझ भी प्रदान की गई है। अंततः यह इकाई समग्र रूप में शिक्षा की समझ में दर्शनशास्त्र की भूमिका पर विमर्श के साथ समाप्त होती है।

## 5.8 संदर्भ ग्रंथ तथा सुझावात्मक पठन सूची

बिरूबाचर, जे.एस. (2007). मॉडर्न फिलोसिफीज ऑफ एजुकेशन , तृतीय संस्करण, मिशिगनः सुरजीत प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 1–23

बरुकाचर, जॉन. एस (1969). मॉडर्न फिलोसिफीज ऑफ एजुकेषन . न्यूयॉर्कः मैकग्रॉ हिल कंपनी।

चौंब्लिस, जे.जे. (1996). फिलोसिफी ऑफ एजुकेशन एन इंसाक्लोपिडिया . न्यूयॉर्क, लदंनः गॉरलैण्ड पब्लिशिंग, इंक।

गुटेक, जी.एल. (2009). न्यू पर्सपेक्टिव्स ऑन फिलोसिफीज ऑफ एजुकेषन. न्यू जर्सीः पियर्सन कोलम्बिया, ओहियो अपर संडल रिवर, इंक

इग्नू (2016). कंटेम्परेरी इंडिया एंड एजुकेशन (बीईएसएस–122, बी.एड.). ब्लॉक–3: फिलोसिफिक्ल पर्सपेक्टिव्स ऑफ एजुकेशन, पृ. 27–28, नई दिल्ली: इग्नू

केनिलर, जी.एफ. (1967). फाउण्डेशन्स ऑफ एजुकेशन , द्वितीय संस्करण. कैलिफोर्निया: कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी, लॉस एंजिल्स. पृ. 68–69.

मोहंती, जगन्नाथ (1994). इंडियन एजुकेशन इन दि इमर्जिंग सोसाइटी. नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

सक्सेना, एन. आर. एस. (2009). प्रिन्सिपल्स ऑफ एजुकेषन . आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

शर्मा, के. आर. (2002). फिलोसिफी ऑफ एजुकेशन . तृतीय संस्करण. दिल्ली, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूशन, पृ. 25–30.

सूरी, ए. एवं सोढ़ी टी.एस. (1988). फिलोसिफिक्ल एंड सोषलॉजिक्ल फांउडेषन ऑफ एजुकेशन . पृ. 40.

जैक्सन पी. हर्शबेल (1988). "प्लूटार्क'स पोर्ट्रेट ऑफ सुकरात. इलिनोइस क्लासिक्ल स्टडीज", वाल्यूम. 13, नंबर 2, प्लूटार्क (फॉल 1988), पृ. 365–381, यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोइस प्रेस द्वारा प्रकाशित।

**वेबसाइट संदर्भित**

http://www.ucdoer.ie/index.php/Education_Theory/Epistemology_and_Learning_Theories से जनवरी 28, 2020 को लिया गया।

## 5.9 प्रबति जाँच हेतु उत्तर

1. उत्पत्ति की दृष्टि से दर्शनशास्त्र शब्द ग्रीक भाषा के शब्द "Philos (प्रेम) तथा "Sophia" (ज्ञान) से बना है, जिसका अर्थ "ज्ञान का प्रेम" (love of wisdom) है।
2. लॉक, बर्कले, ह्यूम, मिल, मूर, हिगेल आदि।
3. दार्शनिकरण का अर्थ केवल पढ़ना या लिखना नहीं यद्यपि दार्शनिक रूप में चिंतन तथा अनुभूति है।
4. स्व–अनुभव।
5. जे. एस. रॉस के दर्शनशास्त्र की परिभाषा के अनुसार "दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा में संबंध एक सिक्के के दो पहलू की तरह है अर्थात् एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। हर्बर्ट स्पेन्सर द्वारा दर्शनशास्त्र की व्याख्या के अनुसार यह ब्रह्मांड विज्ञान की तरह प्रत्येक वस्तु से संबद्ध है।
6. तत्वमीमांसा का अभिप्राय परम सत्य की प्रकृति से है, इसमें अस्तित्व की प्रकृति के विषय में आंकलन सम्मिलित है।
7. तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा तथा तर्कशास्त्र (नीतिशास्त्र)।
8. तर्कशास्त्र के दो प्रमुख प्रतिरूप आगमनात्मक तथा निगमनात्मक हैं। निगमनात्मक तर्क में हम सामान्य कथन से विशिष्ट स्थिति या उदाहरणों या सिद्धान्तों की तरफ बढ़ाते हैं जबकि आगमनात्मक में हम विशिष्ट उदाहरण से स्थापित सिद्धान्त की ओर बढ़ाते हैं।

9. शिक्षा के लक्ष्य जीवन के लक्ष्यों से संबंधित हैं तथा पुनः जीवन के लक्ष्य निश्चित समय के दर्शन की रचना हैं इस तरह दर्शनशास्त्र शिक्षा के लक्ष्यों का निर्धारण करता है।

10. जॉन डिवी द्वारा समस्या समाधान तथा परियोजना विधियों का समर्थन किया गया है।

11. स्व–अध्ययन।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

# इकाई 6 विचारधाराएं

**संरचना**


6.1 परिचय

6.2 उद्देश्य

6.3 विचारधाराएंः एक संक्षिप्त विवरण

6.4 आदर्शवाद और यथार्थवाद

- 6.4.1 शिक्षा के उद्देश्य
- 6.4.2 पाठ्यक्रम
- 6.4.3 शिक्षण विधि
- 6.4.4 शिक्षकों और शिक्षार्थियों की भूमिका

6.5 व्यावहारवाद और अस्तित्ववाद

- 6.5.1 शिक्षा के उद्देश्य
- 6.5.2 पाठ्यक्रम
- 6.5.3 शिक्षण विधि
- 6.5.4 शिक्षकों और शिक्षार्थियों की भूमिका

6.6 प्रकृतिवाद और मानवतावाद

- 6.6.1 शिक्षा के उद्देश्य
- 6.6.2 पाठ्यक्रम
- 6.6.3 शिक्षण विधि
- 6.6.4 शिक्षकों और शिक्षार्थियों की भूमिका

6.7 सारांश

6.8 संदर्भ और पाठन हेतु सुझावित पुस्तकें

6.9 प्रगति की जाँच के ऊतर


## 6.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने दर्शन के संप्रत्यय तथा शिक्षा के साथ इसके संबंधों का अध्ययन किया है। दर्शन और शिक्षा के बीच संबंध स्थापित करने में आपको पहले ही पता चल गया है कि दर्शन, शिक्षा के सिद्धांतों और नियमों का आधार है और उन्हें शिक्षा में प्रयोग किया जाता है।

इस इकाई में दर्शन के विभिन्न विचारधाराओं पर चर्चा करने का प्रयास किया गया है जैसे– आदर्शवाद, यथार्थवाद, व्यावहारवाद, अस्तित्ववाद, प्रकृतिवाद तथा मानवतावाद। उन्हें विचारधाराओं के विभिन्न अवधारणा, उनके मूल सिद्धांतों, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण के विधिओं तथा शिक्षकों व अधिगमकर्ताओं की भूमिका को समझने के क्रम में आगे बढ़ाया गया है।

## 6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्नलिखित जानने में सक्षम होंगेः


*डॉ. गौरव राव, सह आचार्य, शिक्षा विभाग, एम. जे. पी. रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली।*

- विभिन्न विचारधाराओं की व्याख्या करना.
- विभिन्न विचारधाराओं के बुनियादी सिद्धांतों को पहचानना;
- विभिन्न विचारधाराओं के शैक्षिक निहितार्थ का वर्णन करना;
- विभिन्न विचारधाराओं के पाठ्यक्रम की तुलना और मूल्यांकन करना;
- विभिन्न विचारधाराओं द्वारा प्रस्तावित शिक्षण विधिओं का विवरण करना; तथा
- विभिन्न विचारधाराओं में शिक्षक और छात्र की भूमिका से अवगत कराना।

## 6.3 विचारधाराएं: एक संक्षिप्त विवरण

आप इस बात से परिचित होंगे कि शिक्षा की प्रणालियाँ, जब से सभ्यता है तब से अस्तित्व में रही हैं और उनका मुख्य उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान प्राप्त करना और प्रसारित करना था। आप आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, व्यावहारवाद आदि जैसे विचारधाराओं से भी अवगत रहे हैं तथा उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण के तरीकों, पाठ्यक्रम, शिक्षक की भूमिका, अनुशासन आदि के मद्देनजर शिक्षा तथा आदान प्रदान प्रक्रियाओं के सिद्धांतों का प्रस्ताव दिया है। उदाहरण के लिए, आदर्शवाद, 'विचारों व विचारधाराओं' को महत्व देता है और तदनुसार पाठ्यक्रम के विकास हेतु एक सख्त अनुशासन लागू करता है और पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में शिक्षक–केंद्रित विधियों का उपयोग करता है, वहीं प्रगतिवाद, 'परिवर्तन व प्रगति' को महत्व देता है और बाल केंद्रित पाठ्यक्रम के विकास और इसके क्रियान्वयन हेतु लचीले दृष्टिकोण में विश्वास करता है। दूसरी ओर प्रकृतिवाद, शिक्षार्थियों की 'प्राकृतिक स्वतंत्रता' पर बल देता है और पाठ्यक्रम को विकसित करने के लिए शिक्षार्थियों की आवश्यकता और जरूरतों पर आधारित है। इस इकाई में विचारधाराओं की मुख्य अवधारणाओं में अंतर को विस्तृत रूप से बताया गया है।

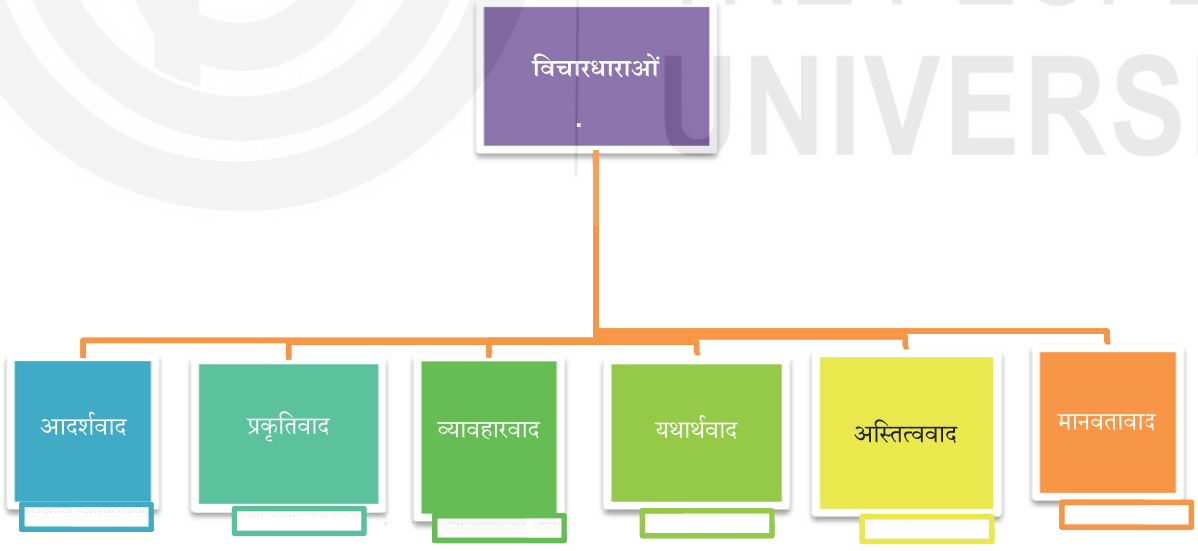


चित्र 6.1

## 6.4 आदर्शवाद और यथार्थवाद

आदर्शवाद, प्राचीन विचारधाराओं में से एक है। यह विचारों और विचारधाराओं पर बल देता है। यह शिक्षा के पारंपरिक दृष्टिकोण के सिद्धांतों और विचारों को वहन करता है जहां शिक्षक, छात्रों की तुलना में शिक्षा प्रदान करने में प्रमुख अभिनेता हैं। शिक्षण–अधिगम तकनीकी और विधियां ज्यादातर शिक्षक–केंद्रित दृष्टिकोणों पर आधारित होते हैं। मूल्य

संवर्धन, शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है जैसा कि आदर्शवाद विचारधाराओं का तात्पर्य है। आइए हम शिक्षण व अधिगम की प्रक्रिया के लिए आदर्शवाद और इसके निहितार्थ के बारे में अधिक समझने की कोशिश करेंगे।

## आदर्शवाद

आदर्शवाद शब्द की उत्पत्ति 'आइडियज्म' से हुई है जिसका अर्थ विचारों का सिद्धांत है, क्योंकि इसे उच्चारण करना कठिन था तो इसमें 'स' जोड़ा गया और 'प्कमंसपेउ' (आदर्शवाद) नाम को गढ़ा गया। आदर्शवाद एक विचारधारा है जो आध्यात्मिकता की सर्वोच्चता में विश्वास करती है। इस विचारधारा के अनुसार आध्यात्मिक या मानसिक दुनिया शाश्वत, स्थायी, क्रमबद्ध, नियमित और सार्वभौमिक है जबकि भौतिक दुनिया विनाशकारी क्षणभंगुर और झूठी है। दूसरी ओर विचारों भावनाओं और आदर्शों का आध्यात्मिक संसार शाश्वत है और हमेशा के लिए सत्य है। इन विचारधाराओं के अनुसार भौतिक दुनिया आध्यात्मिक दुनिया के कुछ हिस्सों का प्रतिबिंब है। यह विचारधारा, विचारों और आध्यात्मिकता से परे कुछ भी नहीं मानता है इसलिए प्राकृतिक और वैज्ञानिक तथ्यों की तुलना में आदर्शवाद मानव मन के अध्ययन पर बल देता है। सुकरात, प्लेटो, डेसकार्टेस, स्पिनोज़ा, बर्कले, केंट, फिशे, हेगेल आदि द्वारा इस विचारधारा का समर्थन किया गया था। प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द रिपब्लिक' ४०० वर्ष इसा पूर्व में इस विचारधारा को प्रतिपादित किया। इस विचारधारा के अनुसार इस ब्रह्मांड की सर्वोच्च शक्ति, विचार है। भारतीय दार्शनिकों जैसे स्वामी विवेकानंद, श्री अरबिंदो और महात्मा गांधी को आदर्शवादी विचारधारा के दार्शनिक माना जाता है।

आप आदर्शवाद विचारधारा में अंतर्निहित बुनियादी अवधारणाओं से परिचित हो गए होंगे। इसके कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं जो यहां उल्लिखित हैं:

- **संसार के दो रूप हैं**– आध्यात्मिक जगत और भौतिक जगतः हॉर्न के अनुसार, आदर्शवाद के विचारधारा का मानना है कि दुनिया का क्रम, एक शाश्वत वास्तविकता व आध्यात्मिक वास्तविकता का अंतरिक्ष और समय में प्रकट होने के कारण है। यह आध्यात्मिक संसार को अधिक महत्व देता है। इस विचारधारा के अनुसार, मन और आत्मा की वास्तविकता को जानने के लिए आध्यात्मिक दुनिया की वास्तविकता को जानना महत्वपूर्ण है।

- **वस्तुओं से अधिक महत्वपूर्ण विचार हैं:** वर्तमान विचारधाराओं के अनुसार, मन और आत्मा का ज्ञान केवल विचारों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। प्लेटो के शब्दों में, 'विचार, परम ब्रह्मांडीय महत्व के हैं। वे वो तत्व तथा मूल आदर्श हैं जो ब्रह्मांड को रूप देते हैं। ये विचार शाश्वत और अपरिवर्तनीय हैं।

- **प्रकृति से ऊपर मनुष्यों का महत्वः** इस विचारधारा में मानव जातियों का महत्व है क्योंकि मनुष्य एक ऐसा व्यक्ति है जो प्रकृति / परिवेश सामग्री के बारे में सोच सकता है, कल्पना कर सकता है और वस्तु का विकास कर सकता है। उसके पास पास वस्तुओं, विचारों और स्थितियों के बीच भेद करने की क्षमता है। आर.आर. रस्क के अनुसार, 'आध्यात्मिक या सांस्कृतिक वातावरण, मनुष्य के निर्माण का एक वातावरण है, यह मनुष्य की रचनात्मक गतिविधि का एक उत्पाद है।

- **आध्यात्मिक मूल्यों पर विश्वासः** आध्यात्मिक मूल्यों में विश्वास को प्रमुख महत्व दिया जाता है। ये मूल्य हैं– सच्चाई, सौंदर्य और अच्छाई। यह माना जाता है कि ये मूल्य समर्थक को ईश्वर के निकट ले जाते हैं और इसलिए देवत्व को प्राप्त करते हैं। ये विचारधारा शिक्षा को एक नैतिक प्रक्रिया मानता है। जैसा कि मानव का स्वभाव

आध्यात्मिक और ईश्वरीय है, जिसकी अभिव्यक्ति केवल शिक्षा के माध्यम से ही हो सकती है।

**यथार्थवाद**

इस विचारधारा में, 'तमंस' (यथार्थ) ग्रीक शब्द 'तमे' से आया है जिसका अर्थ है दृवस्तु। इसलिए इस विचारधारा का मुख्य बल अर्थात यथार्थवाद का अर्थ है वस्तु संबंधी विचार। यथार्थवाद एक विचारधारा है जो किसी वस्तु के अस्तित्व से संबंधित है और इस भौतिक दुनिया को वास्तविक और सत्य मानती है। चूंकि भौतिक दुनिया और वस्तु मुख्य वास्तविकता हैं इसलिए यह भौतिक वस्तुओं और घटनाओं को वास्तविक या सत्य के रूप में स्वीकार करता है, भले ही यह हमारे संज्ञान में न आए लेकिन यह सत्य और मौजूद है। यथार्थवाद का अर्थ एक विश्वास या सिद्धांत है जो संसार पर ऐसा कार्य करता है जैसा वह प्रतीत होता है।

अरस्तू यथार्थवाद का जन्मदाता है। उनका मानना था कि वास्तविकता मानव मन से स्वतंत्र है। अंतिम वास्तविकता, भौतिक वस्तुओं की दुनिया है। इसका ध्यान शरीर /वस्तुओं पर केन्द्रित है। सत्य वस्तुनिष्ठ है अर्थात् जो मनाया जा सकता है। बटलर के अनुसार, 'यथार्थवाद दुनिया की आम स्वीकृति है जैसी वह हमें दिखाई देता है।

इस दर्शन के कुछ सिद्धांत इस प्रकार हैं:

- **घटीत दुनिया ही सत्य है:** इस विचारधारा के अनुसार, 'कोई दूसरी दुनिया नहीं है। यह समकालीन / वर्तमान दुनिया सच है क्योंकि यह अनुभव की जाती है।
- **ज्ञानेंद्रियां, ज्ञान के द्वार हैं:** जैसा कि हम जानते हैं कि वास्तविक ज्ञान का अर्थ इंद्रिय अंगों से प्राप्त ज्ञान है। इसलिए, किसी वस्तु के बारे में वास्तविक ज्ञान हमारे ज्ञानेंद्रियां की सहायता से प्राप्त किया जा सकता है। ये इंद्रिया हमारे मन को संकेत देते हैं और फिर मन बाहरी दुनिया से जुड़ जाता है।
- **वस्तुनिष्ठ दुनिया में नियमितता:** यथार्थवादी, भौतिक दुनिया की प्रक्रियाओं में नियमितता पर विचार करता है। यह इस बात पर बल देता है कि जिस वस्तु का हम वास्तविक दुनिया में अनुभव करते हैं, जहां से हमें अपने ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होता है, वह ज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र वास्तविक तरीका है।
- **यथार्थवाद, परालौकिकता को स्वीकार नहीं करता:** यथार्थवादी का मानना है कि इस दुनिया से परे जीवन मौजूद नहीं है। यह इस बात पर जोर देता है कि, भौतिक दुनिया में जो जीवन मौजूद है वह एकमात्र वास्तविकता है।
- **मनुष्य के वर्तमान और व्यावहारिक जीवन पर बल:** यथार्थवादी केवल उन आदर्शों, मूल्यों और नियमों को स्वीकार करता है जो व्यावहारिक हैं। यह सैद्धांतिक ज्ञान पर जोर देता है जो हमें एक अमूर्त दुनिया में ले जाता है जिसमें व्यावहारिक ज्ञान का अभाव होता है और सार/तत्व का कोई मतलब नहीं है तथा इसे पाना भी मुश्किल है।

### 6.4.1 शिक्षा के उद्देश्य

महत्वपूर्ण क्षेत्रों के आधार पर हर विचारधाराओं ने कुछ उद्देश्य निर्धारित किए हैं। आदर्शवाद विचारधारा के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- समाज की बेहतर सेवा के लिए किसी व्यक्ति में सर्वोत्तम स्तर तक क्षमताओं को पहचानना और विकसित करना।

- व्यक्तित्व या आत्मबल में वृद्धि का अर्थ है कि मानव अपने व्यक्तित्व को समझ सकता है और स्वयं को प्राप्त कर सकता है।
- आध्यात्मिक विकास को प्राप्त करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है।
- सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और प्रसारण शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक है।
- जन्मजात प्रकृति को आध्यात्मिक प्रकृति में परिवर्तित करना मनुष्य को आध्यात्मिक मानव के रूप में बदलने के लिए यह एक प्रमुख उद्देश्य है।
- मानव में वैज्ञानिक निर्णय हेतु बुद्धि का विकास और तर्कसंगतता महत्वपूर्ण है।

वहिं दूसरी ओर यथार्थवाद की विचारधारा द्वारा शिक्षा के इस प्रकार के उद्देश्यों का समर्थन किया गया है।

- व्यावहारिक जीवन के लिए तैयारीः शिक्षा, शिक्षार्थियों को वास्तविक दुनिया के लिए खुद को तैयार करने में मदद करती है।
- सुखी और सफल जीवन जीने के लिएः शिक्षार्थी अपने जीवन की समस्याओं को हल करने में सक्षम होंगे ताकि वे एक खुशहाल और समृद्ध जीवन जी सकें।
- सामाजिक और प्राकृतिक जीवन के बीच समायोजनः शिक्षा का उद्देश्य है, सामाजिक और प्राकृतिक जीवन के बीच शिक्षार्थी के रूप में समायोजन करना.
- जीवन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकासः इससे बुद्धि, विवेक और निर्णय लेने की शक्ति का विकास होगा।
- व्यक्ति का शारीरिक विकासः यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शिक्षार्थी के अन्य विकासों के साथ जुड़ा हुआ है।

### 6.4.2 पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम किसी भी शिक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है। पाठ्यचर्या, आदर्शवादी दर्शन के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। आदर्शवादी पाठ्यक्रम विचारों, भावनाओं और मूल्यों पर जोर देता है। भाषा, साहित्य, इतिहास, भूगोल, गणित और विज्ञान बौद्धिक विकास को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम के तहत शामिल किए गए अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र हैं। नैतिक विकास के लिए, दर्शन, धर्म और नैतिकता जैसे क्षेत्रों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। सत्यम, शिवम और सुंदरम जैसे अनन्त मूल्यों के आधारभूत पाठ्यक्रम के तीन मुख्य आधार हैं। इसी तरह, मानव जाति की संस्कृति को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम का संबंध मानव के समग्र विकास के साथ–साथ मानवतावादी समाज से भी है।

दूसरी ओर, यथार्थवादी एक वैज्ञानिक, मानकीकृत और विशिष्ट–अनुशासन आधारित पाठ्यक्रम की अपील करता है। इसे शिक्षार्थियों को अपने जीवन की दैनिक आवश्यक्ताओं को पूरा करने और अपने जीवन की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार करना चाहिए। यहां, शिक्षार्थियों को उनकी रुचि, क्षमता, प्रासंगिकता और उपयोगिता के अनुसार उनके विषय चुनने का विकल्प दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में विषयों के विभिन्न क्षेत्रों के बीच अंत–संबंध होना चाहिए। पाठ्यक्रम में किसी के दैनिक जीवन के उपयोगी तत्व होने चाहिए। प्राकृतिक घटना की शिक्षा उनकी मातृभाषा में दी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त व्यावसायिक विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए ताकि उन्हें कार्य

की दुनिया के लिए तैयार किया जा सके। यह विद्यालयी स्तर पर पाठ्यक्रम में भौतिक दुनिया, विशेष रूप से विज्ञान और गणित के शिक्षण पर जोर देता है।

### 6.4.3 शिक्षण विधि

शिक्षार्थी की रुचि और क्षमता के अनुसार शिक्षण की विधियाँ आदर्शवादी विचारधारा का मुख्य केंद्र बिंदु हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा के विभिन्न तरीकों का उपयोग आदर्शवादी दार्शनिकों द्वारा किया जाता है। उदाहरण के लिए, सुकरात द्वारा प्रश्न–उत्तर विधि, प्लेटो द्वारा चर्चा विधि, अरस्तू द्वारा निगमन विधि की वकालत की गई थी, हेगेल ने निर्देशन पद्धति आदि का उपयोग किया था। इस विचारधारा से संबंधित दार्शनिकों द्वारा वकालत की गई अन्य विधियां हैं, खेल विधि, वाद–विवाद और व्याख्यान पद्धति हैं। इसलिए, शिक्षण विधि का चयन शिक्षकों के ज्ञान पर निर्भर होती है । स्वावलोकन, अंतर्ज्ञान, अंतर्दृष्टि और सम्पूर्ण–भाग तर्क जैसे तरीकों का चयन विभिन्न तरीकों और संयोजनों में शिक्षण की किसी भी विधि के प्रमुख घटक हैं जो सुप्त अवस्था में है और चेतन रूपों में लाने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

दूसरी ओर, वैज्ञानिक पद्धति की यथार्थवाद विचारधारा में वकालत की गई क्योंकि मुख्य ध्यान शिक्षार्थियों द्वारा वस्तुगत ज्ञान की प्राप्ति था। शिक्षण आगमन–निगमन विधि पर अत्यधिक निर्धारित था। शिक्षार्थियों के ज्ञान को विकसित करने के लिए स्व–अनुभव, अवलोकन और प्रयोग पर बल दिया गया। कुछ परिस्थितियों में जहां गणित में बीजगणित के शिक्षण में वस्तुओं का प्रत्यक्ष अनुभव संभव नहीं है, तब प्रतिमानों और श्रव्य–दृश्य सामग्री का उचित उपयोग किया जाता है। इस विचारधारा के अनुसार, शिक्षण विधियों को प्रदर्शन और अभ्यास के माध्यम से विषयवस्तु व और मूल कौशल की महारत पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। विद्यार्थियों को अवलोकन और प्रयोग विधियों का उपयोग समीक्षात्मक और वैज्ञानिक रूप से सोचने की क्षमता का प्रदर्शन करना चाहिए।

### 6.4.4 शिक्षकों और शिक्षार्थियों की भूमिका

आदर्शवादी विचारधारा के अनुसार, शिक्षक विद्यालय में उच्च मूल्य व स्थान रखता है। वह इस उद्यान का माली माना जाता है जहां उसे अधिगमकर्ताओं की छिपी विशेषताओं को प्रकट करने की सुविधा प्रदान करता है। वह शिक्षार्थी को वह सुविधा देता है जिससे उसका समग्र विकास हो सके। विद्यार्थी एक निष्क्रिय / विवेकपूर्ण श्रोता है क्योंकि केंद्रीय स्थिति आदर्शों, मूल्यों और विचारों की होती है। शिक्षक छात्र की तुलना में अधिक प्रमुख हो जाता है।

दूसरी ओर यथार्थवाद की विचारधारा के तहत शिक्षक हालांकि शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका और स्थान रखते हैं लेकिन उन्हें एक ऐसे विशेषज्ञ के रूप में कल्पना की गई है, जो एक ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जो सब कुछ जानता हो। शिक्षक, वैज्ञानिक सोच, वैज्ञानिक मनोवृत्ति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की न्कोशिश करते हैं। अधिगमकर्ताओं के बीच रुचि, योग्यता और व्यक्तिगत मतभेदों के आधार पर, वह पाठ्यक्रम की योजना बनाता और विकसित करता है। शिक्षण विधियों का उपयोग करके वह शिक्षार्थी को तार्किक रूप से निष्कर्ष निकालने के लिए समर्थन करता है। शिक्षार्थियों के लिए हर्षपूर्ण, सरल और स्व–रुचिपूर्ण अधिगम के तरीकों पर बल दिया जाता है। इस प्रकार एक शिक्षार्थी अपने द्वारा की गई शारीरिक / बौद्धिक क्षमताओं की स्थापना के माध्यम से समाज की मांग को जानने का प्रयास करता है और साथ ही अपने ज्ञान / बुद्धिमत्ता के माध्यम से उसे स्वयं को स्थापित करने के लिए तैयार करता है। ऐसा करने के लिए शिक्षार्थी अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में दुनिया की वास्तविकता जानने के लिए अपना वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करता है।

**गतिविधि 1**

निम्नलिखित आयामों पर आदर्शवाद और यथार्थवाद के किसी भी दो बिंदुओं का आलोचनात्मक रूप से विश्लेषण और चिन्हित करें:

| आयाम | आदर्शवाद | यथार्थवाद |
|---|---|---|
| शिक्षा का उद्देश्य | | |
| पाठ्यक्रम | | |
| शिक्षण विधि | | |
| शिक्षकों व छात्रों की भूमिका | | |

**अपनी प्रगति जाँचें 6.1**

**टिप्पणी** : क) अपने उत्तर नीचे दिये गये स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से करें।

1. आदर्शवादी विचारधारा के कोई दो उद्देश्य लिखिए।

.....

.....

.....

2. यथार्थवादी विचारधारा के किसी भी तीन उद्देश्य की सूची बनाएं।

.....

.....

.....

3. यथार्थवादी विचारधारा के अनुसार किसी भी दो शिक्षण विधियों का नाम सुझाये।

.....

.....

.....

## 6.5 व्यवहारवाद व अस्तित्ववाद

### व्यवहारवाद

यह विचारधारा केवल उन चीजों या स्थितियों को स्वीकार करता है जिन्हें अनुभव या अवलोकन कर सकते हैं। यथार्थवाद, चार्ल्स सैंडर्स पीयरस (1839–1914) के शिक्षण से लिया गया है, जो मानते थे कि विचार को परिणाम के रूप में कार्यों का निर्माण करना

चाहिए। व्यवहारवाद शब्द ग्रीक शब्द 'प्रेगमा' से लिया गया है जिसका अर्थ है गतिविधि या किया गया कार्य। एक और धारणा जो 'प्रगात्मिकोसिस' शब्द, से लिए गए हैं वे हैं– व्यावहारिकता या उपयोगिता । जिससे व्यावहारिक उपयोगिता का अर्थ केवल पहले सिद्ध करना है और फिर उस विचार को स्वीकार किया जाता है। यथार्थवादियों के विपरीत, इनका मानना है कि वास्तविकता लगातार बदल रही है और ज्ञान और विचारों को समस्याओं के प्रति अनुभव व विचारों को लागू करके सर्वोत्तम प्राप्त किया जाता है । ब्रह्मांड गतिशील और विकासशील है, दुनिया का एक' बनने वाला' दृश्य है। यह विचारधारा यह भी कहेता है कि कोई पूर्ण और अपरिवर्तनीय सत्य नहीं है, लेकिन दूसरी ओर वर्तमान संदर्भ में यह काम करता है।

डेवी (1859–1952) ने बाद में अपने प्रगतिशील दृष्टिकोणों में इस दर्शन को लागू किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि शिक्षार्थियों को एक–दूसरे के साथ और अपने परिवेश के साथ तालमेल बिठाना चाहिए। इस विचारधारा के अनुसार,अध्ययन के किसी भी कार्यक्रम के पाठ्यक्रम को सामाजिक या क्षेत्र के अनुभवों में एकीकृत कर सभी स्तरों यानी स्कूल स्तर, विश्वविद्यालय स्तर या किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अनुभवों पर करना चाहिए। जेम्स बी.प्रेट के अनुसार यथार्थवाद, हमें ज्ञान के सत्य का सिद्धांत तथा वास्तविकता का सिद्धांत प्रदान करता है।

व्यावहारिकता विचारधारा में कुछ बुनियादी सिद्धांत हैं। वो इस प्रकार हैं:

- सत्य प्रकृति में गतिशील है या यह बदलता रहता है।
- यह कई बार संबंधपरक और प्रासंगिक है क्योंकि यह उन परिणामों से बनता है जो इसे देता है।
- सत्य की खोज करने के पीछे जीवन की समस्याएँ है और समस्या के समाधान के साथ सत्य की खोज का मकसद कम हो जाता है।
- समाज के सामाजिक और लोकतांत्रिक मूल्यों पर यथार्थवाद बल देता है क्योंकि मानव एक सामाजिक प्राणी है और उसे अंततः समाज को अपनी सेवाएं देना है।
- किसी भी सामाजिक वांछनीय मूल्य के बिना एक व्यक्ति समाज के लिए अयोग्य है, दूसरे शब्दों में कोई भी सच्चाई जो समाज के लिए फायदेमंद नहीं है, वह लंबे समय तक उपयोगी और व्यावहारिक नहीं होगी।

### अस्तित्ववाद

विचारधाराएँ, व्यक्ति और उसके अस्तित्व के इर्द–गिर्द केंद्रित होता है। इस दर्शन के भीतर कई अलग–अलग निर्धारण हैं। सोरेन कीर्केगार्ड (1813–1855) को अस्तित्ववाद का प्रतिपादक माना जाता है। यह विचारधारा, साधारण मानवीय मूल्यों को विशेष संदर्भ में मानता है। यह मानता है कि इस धरती पर जन्म लेने वाला व्यक्ति अपने प्रयासों से ही अपने व्यक्तित्व को बढ़ाएगा। व्यक्तित्व के विकास और परिस्थितियों के विकल्पों को विकसित करने के लिए व्यक्ति का स्वयं का निर्णय है। इस विचारधारा ने व्यवहार संबंधी समस्याओं और विशिष्ट मानव स्थितियों पर भी बल दिया है। इस दर्शन या विचारधारा का मानना है कि मानव अपने द्वारा बनाई गई जटिलताओं से लगातार जूझ रहा है। परिण ामस्वरूप मानवता भीड़भाड़ और जटिल वैज्ञानिक आविष्कारों के सामने फीकी पड़ गई है। इस प्रकार सत्य, व्यक्ति के अपने संदर्भ के अनुसार होता है।

अस्तित्ववाद विचारधारा, पूर्व के विचारों अर्थात् आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और यथार्थवाद के विरोधाभास के रूप में उभरा। इसके अनुसार, बुद्धिजीवियों ने मानव अस्तित्व के मुक्त

विकास पर अंकुश लगाया है। इस विचारधारा में दार्शनिकों ने भविष्य में सुधार करने के लिए उत्कृष्टता की उसकी संभावित क्षमता के कारण, अस्तित्व के सार की जगह मनुष्य के अस्तित्व में विश्वास किया। इसका समर्थन करते सर्तरे कहते हैं कि 'अस्तित्ववाद का समर्थन करना दार्शनिक दृष्टिकोण है जो सार/तत्व पर अस्तित्व को प्राथमिकता देता है' । इसके लिए सत्य का आधार आंतरिक अनुभव है, अनुभव से परे कोई भी सत्य गैर–मौजूद है। यह मनुष्य की मानसिक स्थितियों जैसे खुशी, अवसाद और चिंता की आंतरिक स्थितियों पर भी ध्यान केंद्रित करता है। अतः अंतिम सत्य व्यक्ति की स्व–विकसित अवधारणा है। अस्तित्ववादी का भाग 'अस्तित्व' दर्शाता है, –वर्तमान से विकसित होने और कल या भविष्य के लिए बेहतर बनने के लिए गतिशीलता। अस्तित्ववाद एक विचारधारा है जो मानव अस्तित्व की बुनियादी संरचना का विश्लेषण करने का प्रयास करती है और व्यक्तियों को इसकी स्वतंत्र अस्तित्व के बारे में जागरूकता पर बल देती है।

### 6.5.1 शिक्षा के उद्देश्य

आदर्शवाद के विपरीत, व्यवहारवाद पूर्वनिर्मित उद्देश्य में विश्वास नहीं करता है। यहां जीवन का उद्देश्य जीवन में बदलाव के साथ बदलते रहना है। वे इस प्रकार हैं:

- शिक्षार्थियों में उनके सामाजिक परिवेश को समझने, अनुभव करने और समाज के आदर्शों को तय करने की क्षमता विकसित करना।
- आस–पास की गतिशील स्थितियों के बारे में पता होना और उन्हें समझना और उसके अनुसार उसे अनुकूल बनाना।
- शिक्षार्थियों में सामाजिक कौशल विकसित करना।
- जीवन में समग्रता प्राप्त करना परम है क्योंकि स्वयं के लिए संतोष और खुशी, जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

**वहीं अस्तित्ववाद विचारधारा, शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों को प्रस्तावित करता है:**

- **शिक्षार्थी की व्यक्तित्व का विकास:** यह महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वयं की पहचान करना, खुद को एक इंसान के रूप में स्वीकार करना और बौद्धिक प्रक्रियाओं के साथ एक इकाई के रूप में शिक्षा का कार्य है।
- **शिक्षार्थी के अहंकार का विकास:** यह उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। यह अहम् उसे साहस देता है। किसी व्यक्ति को केवल तभी महसूस किया जाता है जब वह किसी कार्य को स्वयं साहस और आत्मविश्वास के साथ करता है। जैसा कि हम जानते हैं कि उत्साह और साहस दो गुण हैं जो व्यक्तित्व को विकसित करते हैं।
- **नैतिक निर्णयों के लिए बौद्धिक विकास:** समग्र व्यक्तित्व के विकास के लिए, सभी आयामों का विकास आवश्यक है। इस प्रकार इस विचारधारा ने सभी आयामों में वृद्धि के लिए स्वतंत्रता पर जोर दिया। एक व्यक्ति की मदद से जो नैतिक निर्णय लेने में सक्षम हो, बुद्धि का विकास संभव है।
- **जीवन के संघर्ष के लिए तैयारी:** इस विचारधारा का एक व्यक्ति और उसकी स्थितियों के इर्द–गिर्द केन्द्रित है। इन स्थितियों से उसकी यात्रा उसके चेतन और अवचेतन मन में पुरानी स्थितियों या पिछले अनुभवों की याद दिलाती है। इसलिए आत्मविश्वास और जवाबदेही के साथ जीवन के संघर्ष के लिए एक व्यक्ति को तैयार करना उसके अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है।

### 6.5.2 पाठ्यक्रम

उपयोगिता के सिद्धांत पर आधारित व्यावहारिक पाठ्यक्रम अर्थात कुछ भी अगर किसी व्यक्ति के लिए उपयोगी हो तो उसे पाठ्यक्रम में शामिल करने या उसका एक अभिन्न अंग बनाने की आवश्यकता होती है। ध्यान रखा जाना चाहिए कि पाठ्यक्रम की उपयोगिता बढ़ाने के लिए शिक्षार्थियों की रुचि पर आधारित पाठ्यक्रम होना चाहिए। पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों के अनुभवों पर आधारित होना चाहिए। शिक्षार्थी के अनुभवों को शामिल करने हेतु पाठ्यक्रम सरल अधिगम की सुविधा के लिए शिक्षार्थी की निकटता में होना आवश्यक है। इसे सीखने वाले में एक गहरी समझ विकसित करने के लिए अध्ययन के सभी अलग–अलग क्षेत्रों के ज्ञान को एकीकृत करना चाहिए। विभिन्न विषयों में, पाठ्यक्रम को अंतःविषय दृष्टिकोण के माध्यम से समस्याओं को हल करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

दूसरी ओर, अस्तित्ववादी अपने आप में पाठ्यक्रम में विश्वास नहीं करते हैं। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विकसित किए जाने वाले उद्देश्यों और पाठ्यक्रम के विकास में विभिन्न व्याख्याओं पर विचार किया जाना चाहिए। वे चाहते हैं कि उसके अस्तित्व के मुक्त अस्तित्व का एहसास हो। वे उन्हें धार्मिक, रूढ़िवाद, दर्शन और ईश्वर से मुक्त करना चाहते हैं; इसलिए अध्ययन या विषयों के इन क्षेत्रों को पाठ्यक्रम में शामिल नहीं करना चाहते हैं। अस्तित्ववादी चाहते हैं कि शिक्षार्थी वही हों जो वे बनना चाहते हैं। यह तभी संभव हो सकता है जब पाठ्यक्रम पर्याप्त व्यापक हो और शिक्षार्थी किसी भी विषय को चुनने के लिए स्वतंत्र हो। शिक्षार्थियों की मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए भाषा और साहित्य को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। विभिन्न परिस्थितियों में बौद्धिक और निर्णय लेने के लिए शिक्षार्थी को रचनात्मक होना चाहिए। दुनिया में कुछ दार्शनिकों की मौजूदगी को दिखाने के लिए, अस्तित्ववादी विचारधारा के तहत, पाठ्यक्रम और गतिविधियों को भी पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रस्ताव है।

### 6.5.3 शिक्षण विधि

यथार्थवाद विचारधारा के दो प्रमुखता से दो आयाम है। एक मनोवैज्ञानिक है और दूसरा सामाजिक। मनोवैज्ञानिक आयाम विभिन्न विशेषताओं से सम्बंधित हैं जो जन्म से ही होती हैं जैसे रुचि, झुकाव, दृष्टिकोण और क्षमता। अतः विषयों को वर्तमान शिक्षार्थियों के संदर्भ से जोड़ा जाना चाहिए और यह महत्वपूर्ण और लाभकारी भी होना चाहिए। शिक्षार्थी हस्त क्रियाओं और अवलोकनों से सीखते हैं, इसलिए क्रिया विधि को प्राथमिकता दी जाती है। ज्ञान सीखने वाले के लिए एक इकाई के रूप में है जो अनुमान लगाता है या संबंधित है इसलिए शिक्षण एकात्मक पद्धति के रूप में अधिक प्रभावी हो जाती है। कभी–कभी वे अपने दम पर एक समस्या का सामना करते हैं, इसलिए समस्या को हल करना भी शिक्षण का एक सुझावित तरीका है।

अस्तित्ववादी विचारधारा के तहत शिक्षण विधियां, हस्तक्रियाकलापों, समस्या को हल करना, परियोजनाओं का प्रयोग करना और उनका संचालन करना और समूह शिक्षण या टीम लर्निंग का संचालन करने पर केंद्रित है। यह भी मानते हैं कि शिक्षार्थियों को अपने ज्ञान को वास्तविक स्थितियों पर लागू करना चाहिए क्योंकि यह उन्हें नागरिकता, दैनिक जीवन और भविष्य के करियर के लिए तैयार करेगा।

जैसा कि हम जानते हैं कि ये विचारधारा शिक्षार्थी की स्वतंत्रता का समर्थन करता है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ लोग इस को सर्वश्रेष्ठ विधि मानते हैं यानी शिक्षक और शिक्षार्थी समान हैं; दोनों एक–दूसरे से सवाल पूछने के लिए स्वतंत्र हैं। दोनों अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकते हैं। शिक्षक शिक्षार्थी को एक सामाजिक संदर्भ के भीतर एक इकाई के रूप में देखते हैं जिसमें शिक्षार्थी को अपने स्वयं के स्पष्टीकरण के लिए

दूसरों के विचारों का सामना करना चाहिए। आपसी प्रयासों से, नए ज्ञान का निर्माण होता है। सर्त्रे कहते हैं कि सच्चा ज्ञान वह चीज है जो स्वयं के अनुभव और प्रयासों से सीखी जाती है। इसलिए यह शिक्षण के तरीकों के रूप में क्रियाविधि पद्धति और अनुभवात्मक अधिगम का समर्थन करता है। आमतौर पर समूह शिक्षण की वकालत नहीं की जाती है जबकि सीखने वालों पर व्यक्तिगत ध्यान केंद्रित किया जाता है।

### 6.5.4 शिक्षकों व शिक्षार्थियों की भूमिका

एक व्यावहारिक शिक्षक अधिगमकर्ता के लिए सूचना प्रदाता के रूप में कार्य नहीं करता है, लेकिन दूसरी तरफ, स्वयं से ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसलिए शिक्षक एक सूत्रधार के रूप में कार्य करता है और अधिगमकर्ता का मार्गदर्शन करता है, ताकि वह ज्ञान में सुधार कर सके। शिक्षक को समस्या और उसके समाधान के लिए शिक्षार्थी को जागरूक और संवेदनशील बनाना होगा। व्यावहारिक विचारधारा के अनुसार, एक शिक्षक न केवल सीखने के माहौल का निर्माता है, अपितु उसके लिए पूरा वातावरण ही है। यहां, शिक्षक को शिक्षार्थी के प्रति बहुत सक्रिय और चौकस रहना होगा और उन्हें प्यार और सहानुभूति के साथ प्रबंधित करना होगा।

व्यावहारिक विचारधारा के अनुसार शिक्षार्थी को समाज की जरूरतों और मांगों की आवश्यकता अनुसार विकसित होना चाहिए । उसे अपनी रूचि, क्षमता और झुकाव के अनुसार अपने व्यक्तित्व को विकसित करने की आवश्यकता है। उसे आत्म–विकास की स्थितियों की तलाश करने और उन्हें स्वयं विकसित करने की आवश्यकता है। ऐसा करने के लिए, उसे थोपी गई अपेक्षाओं से मुक्त होना होगा, लेकिन शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का भी ध्यान रखना होगा ताकि वह समाज के लिए उत्पादक बने।

आप सराहना करना पसंद कर सकते हैं कि एक अस्तित्ववादी शिक्षक पहले एक अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाने की कोशिश करता है जिसमें अधिगमकर्ता अपने परिवेश के अनुसार सीखने का अपना तरीका विकसित करता है। ऐसा करते हुए, चेतना या अचेतना से वह स्वयं को पुनः खोजता है, पुनःसृजन करता है, उसे पुनर्जीवित करता है और अपने अस्तित्व की, पूरी प्रक्रिया में एहसास करता है। ऐसा करने के लिए शिक्षक को स्वयं का आत्म–बोध होना चाहिए।

**गतिविधि 2**

निम्नलिखित पहलुओं पर व्यावहारिकता और अस्तित्ववाद के प्रमुख बिन्दुओं का उल्लेख करके प्रत्येक कॉलम में रिक्त स्थान भरें:

| आयाम / पहलु | यथार्थवाद | अस्तित्ववाद |
|---|---|---|
| शिक्षा का उद्देश्य | | |
| पाठ्यक्रम | | |
| शिक्षण विधि | | |
| शिक्षकों व छात्रों की भूमिका | | |

**अपनी प्रगति जाँचें 6.2**

**टिप्पणी** : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपना उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से तुलना करें।

4. व्यावहारिक विचारधारा के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए किसी भी तीन सिद्धांतों का उल्लेख करें?

.....

.....

.....

5. व्यावहारिक विचारधारा द्वारा एक शिक्षण पद्धति के रूप में परियोजना पद्धति पर बल क्यों दिया जाता है?

.....

.....

.....

## 6.6 प्रकृतिवाद एवं मानवतावाद

प्रकृतिवाद एक अन्य विचारधारा है जो प्रकृति की वास्तविकता को स्वीकार करता है। इस विचारधारा के संस्थापक एमिले ज़ोला (1840–1902) थे। इस विचारधारा को मानने वालों के लिए प्रकृति से परे कुछ भी नहीं है। यहां प्रकृति को व्यापक अर्थों में माना जाता है, एक तरफ यह भौतिक स्थूल संसार है जो मानव द्वारा देखी जाती है और दूसरी ओर पूरी जैव प्रणाली है जहां जीवन मौजूद है। इस प्रकार प्रकृति को सभी घटनाओं और सामग्रियों के कार्य के रूप में समझा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि प्रकृतिवाद वह विचारधारा है जो प्रकृति को अंतिम मानता है। जे.एस.रोस के अनुसार, "प्रकृतिवाद, प्रशिक्षण की प्रणालियों के लिए शैक्षिक सिद्धांत में शिथिल रूप से लागू किया जाता है जो स्कूलों और पुस्तकों पर निर्भर नहीं हैं बल्कि शिक्षितों के वास्तविक जीवन के उपांतरण पर आधारित हैं।"

प्रकृतिवादियों ने कई संप्रत्यय सुझाये हैं और जो मुख्यतः निम्नानुसार हैः

- सत्य ज्ञान केवल इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।
- सत्य का आधार हमारे इन्द्रिय अनुभव हैं।
- प्रत्येक वस्तु प्रकृति से उत्पन्न होती है और अंत में उसमें समां जाती है।
- नैतिकता, मूल्य, आत्मा, ईश्वर, अमरत्व, प्रार्थना–शक्ति और चुनाव की स्वतंत्रता, सभी एक मिथक हैं।,
- विज्ञान ने मानव के जीवन को भौतिक रूप में परिवर्तित कर दिया है।

मानवतावाद एक और महत्वपूर्ण विचारधारा है और इसकी स्थापना रूसो (1712–1778) और पेस्टलोजी ने की थी। उन्होंने प्रकृति और मनुष्य की बुनियादी अच्छाई पर जोर दिया, जिसे इंद्रियों और शिक्षा के माध्यम से एक क्रमिक और सुकून वाली प्रक्रिया के रूप में समझना और जिसमें मानव चरित्र की प्रगति प्रकृति के सामने आती है। फ्रांसेस्को पेट्रारका को मानवतावाद का पिता माना जाता है।

इस विचारकधारा के अनुसार मानव एक अंत एक है, ना की एक साधन, स्वतंत्र है लेकिन गुलाम नहीं है, इसका मतलब है कि अधिगमकर्ता को अपने भाग्य को नियंत्रण में रखना चाहिए। चूंकि सीखने वाले को पूरी तरह से स्व–शासित व्यक्ति बनना चाहिए, अतः व्यक्तिगत स्वतंत्रता, चयन और जिम्मेदारी ध्यान में केंद्रित होनी चाहिए । उच्चतम स्तर का अवसर प्राप्त करने के लिए वह स्वयं प्रेरित है। सीखने की प्रेरणा मानवतावाद में आंतरिक है।

मानवतावादी विचारधारा दो बुनियादी अवधारणाओं पर आधारित हैः

1. मूल्यों को लोगों द्वारा बनाए रखा जाता है, इतिहास को प्रभावित करता है अर्थात् यह व्यक्ति के ऊपर होता है कि वह अपने समय की समस्याओं और उलझनों को दूर करने के लिए इतिहास के पाठों का उपयोग करे, तथा

2. यह साहित्य पर बल देता है क्योंकि यह अनादि काल के विभिन्न मूल्यों का प्रतीक है और इससे मानव अतीत में लिए गए नैतिक निर्णयों से सबक लेता है।

### 6.6.1 शिक्षा के उद्देश्य

प्रकृतिवाद में विभिन्न दर्शिनिकों ने शिक्षा के विभिन्न विन्यास/ निर्देशन दिए हैं। इस विचारधारा में शिक्षा के सामान्य उद्देश्य हैंः

- **उत्तरजीवित हेतु व्यक्तिगत तैयारीः** उत्तरजीविता एक वैज्ञानिक घटना है जहाँ श्रेष्ठ व्यक्ति सर्वश्रेष्ठों की दौड़ को जारी रखने का प्रबंधन करते हैं।
- **वातावरण में अनुकूलन के लिए प्रशिक्षणः** अनुकूलन उन विशेषताओं को जारी रखने की ओर अग्रसर होता है जो भिन्न–भिन्न स्थितियों में अनुकूलित होती हैं, जो चरम या प्रतिकूल परिस्थितियों में अस्तित्व का समर्थन करती हैं। एक शिक्षार्थी को अपने स्वयं के स्तर या संरक्षण को विकसित करने के लिए अनुकूलन कौशल भी विकसित करना होगा।
- **जीवन में उच्च प्रगति की प्राप्तिः** संघर्ष और अनुकूलन वास्तव में व्यक्ति को जीवन में प्रगति प्राप्त करने के लिए होते हैं।
- **व्यक्ति और उसके व्यक्तित्व का स्वाभाविक विकासः** किसी व्यक्ति का विकास और उसकी व्यक्तित्व एक प्राकृतिक घटना है,जहां एक व्यक्ति को अपने तरीके से विकसित होने और परिवेश से मूल्यों को ग्रहण करने की छूट होती है और इसलिए उसके व्यक्तित्व का विकास होता है।
- पूर्णता प्राप्त करने के लिए मूल प्रवृत्ति और शक्तियों में सुधार के लिए कार्य करना।
- आत्म–संरक्षण और आत्म–संतुष्टि के लिए व्यक्ति को तैयार करना।

मानवतावादी विचारधारा मानव केन्द्रित है। इसका मुख्य उद्देश्य किसी व्यक्ति को एक बेहतर मानव में विकसित करना या तैयार करना है। उसे मानवीय मूल्यों के साथ रचनात्मक और प्रगतिशील होना होगा। मानवतावादी विचारधारा के उद्देश्य इस प्रकार हैंः

- **किसी व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक विकासः** इसका अर्थ है, व्यक्ति को तर्क के साथ शारीरिक रूप से स्वस्थ और मानसिक रूप से स्थिर होना पड़ता है।
- **सामाजिक व सांस्कृतिक विकासः** मानवतावादी दार्शनिक, व्यक्ति के लिए निरंतर सामाजिक सुधार की अपेक्षा करते हैं। वे संपूर्ण मानव समाज को एक के रूप में देखते हैं। अतः समाज और संस्कृति का विकास अंतिम हो जाता है।

- **मानवीय मूल्यों के उच्च स्तर का विकासः** मानवीय मूल्यों का विकास मुख्य केंद्र है। उनके अनुसार, यह सभी के लिए 'अच्छा है', प्रेम, सेवा, सहयोग, आदि इसमें शामिल प्रमुख मूल्य हैं।

- **उत्पादकता का विकासः** मानव की दो बुनियादी आवश्यकताएं –भावनात्मक और भौतिकवादी आवश्यकताएं है। भावनात्मक आवश्यकता की पूर्ति के लिए, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास महत्वपूर्ण है, जबकि भौतिकवादी आवश्यकता की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को वांछनीय उत्पादों का उत्पादन करने के लिए पर्याप्त कौशल होना चाहिए।

- **रचनात्मकता का विकासः** मानवतावादी व्यक्ति जन्म से ही रचनात्मक होता है, इस प्रकार शिक्षा से मानव में रचनात्मकता को बढ़ाना होता है।

### 6.6.2 पाठ्यक्रम

प्रकृतिवाद विचारधारा के तहत पाठ्यचर्या पर जोर दिया, जो अधिगमकर्ताओं को विकास और उनकी मूल प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिए तैयार करता है। यह सीखने वाले की रुचि, विकास की प्राकृतिक प्रक्रिया और व्यक्तिगत मतभेदों का ध्यान रखता है। इसलिए प्राकृतिक विज्ञान में, जिन विषयों को पाठ्यचर्या में पढ़ाया जाना है, वे हैं भौतिक विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, गणित, जीव विज्ञान, गृह विज्ञान तथा भाषाएं, भूगोल, इतिहास, कला और संगीत।

दूसरी ओर, मानवतावादी पाठ्यक्रम अच्छे इंसान होने की बात करता है। इस विचारधारा के अनुसार, अच्छा इंसान वह है जो सभी के लिए अच्छा सोचता है और उसी के अनुसार व्यवहार करता है। इसी तरह, पाठ्यक्रम इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए बनाया गया है। मानवतावादी पाठ्यक्रम के अनुसार, स्वास्थ्य विज्ञान और शारीरिक शिक्षा होनी चाहिए। उत्तरार्द्ध, स्वस्थ दिमाग विकसित करना है जो एक बेहतर तर्क हो सकता है। सांस्कृतिक संप्रभुता के लिए, विभिन्न भाषाओं, साहित्य, कला और मानविकी विषयों को शामिल करने की आवश्यकता है। उच्च मानव मूल्यों के झुकाव के लिए, सामाजिक सेवा और कौशल उन्मुख विषयों की उत्पादकता बढ़ाने के विकास के लिए एकीकृत किया जाना चाहिए। रचनात्मकता को बढ़ाने के लिए, विज्ञान और तकनीकी घटकों को पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिए जाने की आवश्यकता है।

### 6.6.3 शिक्षण विधि

प्रकृतिवाद, समूह विधियों के स्थान पर व्यक्तिगत विधियों पर बल देता है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग की जाने वाली विधियाँ, करके सीखना, अनुभव द्वारा सीखने और खेल खेल में सीखने के तरीके हैं। यह विचारधारा विद्यार्थी को एक स्वतंत्र शोधकर्ता के रूप में विकसित करती है , जिसमें शिक्षण–अधिगम विधियों के रूप में अवलोकन, नाटक, ह्यूरिस्टिक, डाल्टन विधि और मोंटेसरी पद्धति का उदय हुआ है।

दूसरी ओर, मानवतावाद ने तर्क और ज्ञान पर जोर दिया। तार्किक रूप से जांचने के बाद उन्होंने ज्ञान को स्वीकार कर लिया है। तदनुसार, सवाल–जवाब, चर्चा, समस्या समाधान और तर्क सीखने और सिखाने के सर्वोत्तम तरीके हैं।

### 6.6.4 शिक्षकों और शिक्षार्थियों की भूमिका

प्रकृतिवादियों का मानना है कि प्रकृति स्वयं सबसे बड़ी शिक्षक है। शिक्षार्थी और उसकी प्राकृतिक क्षमताओं और विशेषताओं को प्रकृति में ही बेहतर तरीके से विकसित किया जा सकता है। यह विचारधारा कृत्रिम शिक्षक और पर्यावरण का प्रचार नहीं करता है। रूसो

मानते थे कि प्रकृति शिक्षार्थी का शिक्षक होने के नाते और व्यक्ति के प्राकृतिक विकास का समर्थन करती है। वह एक सहारा देने वाले के रूप में शिक्षक की सूगमकर्ता का समर्थन करता है जिसे पर्यवेक्षी और सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए।

वहिं मानवतावाद विचारधारा के अनुसार शिक्षक को एक विषय जिसे वे पढ़ने जा रहे हैं उन्हें उसका विशेषज्ञ होना चाहिए तथा अधिगमकर्ताओं को भी जानना चाहिए जिससे उन क्षेत्रों में शिक्षार्थी को क्या और कैसे पढ़ना है । उन्हें शिक्षार्थियों की व्यक्तित्व और वैयक्तिक रूप को स्वीकार करना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए और उनके समग्र विकास के लिए काम करना चाहिए। शिक्षक को समाज के पुनर्गठन के लिए गतिशील और प्रगतिशील होना चाहिए।

छात्र को एक दूसरे को स्वीकार करने और सम्मान करने की आवश्यकता होती है, लेकिन शिक्षक को आँख बंद करके पालन नहीं करना चाहिए क्योंकि उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने और निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। शिक्षक और छात्र दोनों के बीच मानवीय संबंध होने चाहिए और उन लोगों को एक ऐसे वातावरण में सीखना चाहिए जो संघर्ष, भय और तनाव से मुक्त हो।

**गतिविधि 3**

निम्नलिखित पहलुओं पर व्यावहारिकता और अस्तित्ववाद के प्रमुख बिन्दुओं का उल्लेख करके प्रत्येक कॉलम में रिक्त स्थान भरें:

| आयाम / पहलु | प्रकृतिवाद | मानवतावाद |
|---|---|---|
| शिक्षा का उद्देश्य | | |
| पाठ्यक्रम | | |
| शिक्षण विधि | | |
| शिक्षकों व छात्रों की भूमिका | | |

**अपनी प्रगति जाँचें 6.3**

**नोट** : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपना उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से तुलना करें।

6. प्रकृति एक सच्चा शिक्षक है ? इस कथन को प्रकृतिवाद के संदर्भ में उचित ठहराएं।

.....

.....

.....

7. एक मानवतावादी शिक्षक और विद्यार्थी की कोई भी तीन विशेषता लिखें।

.....

.....

.....

## 6.7 सारांश

प्रिय शिक्षार्थियों, इस इकाई में, छ विचारधाराओं के अर्थात्; आदर्शवाद, यथार्थवाद, व्यावहारिकता, अस्तित्ववाद, प्रकृतिवाद और मानवतावाद पर चर्चा की गई है। शिक्षा और इसके सिद्धांतों और शिक्षा में उनके निहितार्थ पर इन विचारधाराओं के योगदान पर चर्चा की गई है। शिक्षा के क्षेत्र में एक स्नातक के लिए, विभिन्न विचारधाराओं के बारे में जागरूक होना महत्वपूर्ण है, तथा इनका, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण के तरीके और शिक्षक और छात्रों की भूमिका पर प्रभाव।

आदर्शवादी विचारधारा, विचार को सर्वोच्च या अत्यंत महत्वपूर्ण मानता है जबकि यथार्थवादियों के लिए, भौतिक दुनिया अंतिम सत्य है। मानव की आवश्यकता व्यावहारिकता के लिए अत्यंत प्राथमिक है, जबकि अस्तित्ववादी, व्यक्ति को सर्वोच्च मानते हैं। प्रकृतिवादी के लिए, प्रकृति परम सत्य है और मानवतावाद, मनुष्य के मूल्यों और साहित्य को सर्वोच्च मानता है।

विभिन्न विचारधारा के अनुसार, बड़े बदलाव यानी शिक्षक केंद्रित दृष्टिकोण से छात्र–अधिगमकर्ता केंद्रित दृष्टिकोण के कारण शिक्षा प्रणाली में विभिन्न बदलाव हो रहे हैं। इसके अलावा, पाठय़क्रम प्रकृति में अंतर–अनुशाश्नीय हो रहा है और इसमें रटने व शिक्षक केन्द्रित विधियों के जगह अनुभव अधिगम की अग्रसर हो रही है ।

## 6.8 संदर्भ और पाठन हेतु सुझावित पुस्तकें


अग्रवाल, जे.सी. (2010). थ्योरी एंड प्रिंसिपल्स ऑफ़ एजुकेशन, नई दिल्ली, विकास प्रकाशन ।

भाटिया और भाटिया। (1994). थ्योरी एंड प्रिंसिपल्स ऑफ़ एजुकेशन, नई दिल्ली, दोआबा हाउस।

एलिस, ए.के.; कोगन, जे. जे, और होवे, के.आर. (1991). इंट्रोडक्शन टू द फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन, न्यू जर्सीः प्रेंटिस हॉल

गिरौक्स, एच, ए. और मैकलारेन, पी. एल. (1989). स्कूलिंग, कल्चरल पॉलिटिक्स एंड द स्ट्रगल फॉर डेमोक्रेसी ।

गुटेक, जी.एल. (2004). फिलोसोफिकल एंड आइडोलॉजिकल वोइस इन एजुकेशन. बोस्टनः एलिन और बेकन।

लाल, बी. (2012). समकालीन पाश्चात्य दर्शन.नई दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास।

ओड, एल.के. (2016)। शिक्षा की दर्शनीक पृष्टभूमि, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

पांडे आर.एस. (2007)। प्रिंसिपल ऑफ़ एजुकेशन, आगरा – 2 विनोद पुष्तक मंदिर।

सक्सेना, एन. (2014) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शाश्त्रीय सिद्धांत. मेरठ, आर. लाल बुक डिपो

शर्मा, जी. और एच. व्यास (2013) उदयमान भारतीय समाज और सुरक्षा, जयपुर, राजस्थान हिंदी, ग्रंथ अकादमी।

शर्मा, यू. (2012) शिक्षक के दार्शनिक एवं समाज शाश्त्रीय आधार. दिल्ली, पीयरसन।

सिन्हा, ए. (1985) समकलीन दर्शन. चंडीगढ़, हरियाणा, साहित्य अकादमी।

त्यागी, जी. (2012)। शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शाश्त्रीय आधार, आगरा, अग्रवाल प्रकाशन।

## 6.9 प्रगति की जाँच हेतु उत्तर

1. व्यक्तित्व का विस्तार या आत्म–साक्षात्कार और आध्यात्मिक विकास सुनिश्चित करना।
2. व्यावहारिक जीवन के लिए तैयारी, जीवन को सुखी और सफल बनाना, और सामाजिक और प्राकृतिक जीवन के बीच समायोजन।
3. अवलोकन और प्रयोग के तरीकों को यथार्थवादी विचारधारा द्वारा सुझाया गया था।
4. पाठ्यक्रम उपयोग के सिद्धांत, बच्चे की रुचि और बच्चे को सक्रिय रूप से भाग लेने पर आधारित होना चाहिए। पाठ्यक्रम बच्चे के अनुभवों और विभिन्न विषयों के सभी ज्ञान को एकीकृत करने पर आधारित होना चाहिए।
5. प्रोजेक्ट विधि एक उन्मुख विधि है और इसमें छात्रों के कार्यों और सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। इसलिए, परियोजना पद्धति पर व्यावहारिक विचारधारा द्वारा बल दिया जाता है।
6. यह बच्चे के विकास के लिए प्रकृति को एक शक्तिशाली शिक्षक के रूप में महत्व देता है। प्रकृति के संपर्क में आए बिना बच्चे का सीखना और प्राकृतिक विकास संभव नहीं है।
7. शिक्षक को पता होना चाहिए कि बच्चों को पूरे मनोयोग से पढ़ाना है, बच्चे के व्यक्तित्व का सम्मान करना चाहिए और बच्चे के संपूर्ण विकास की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। छात्रों को गतिशील और प्रगतिशील होना चाहिए क्योंकि उन्हें समाज का पुनर्गठन करना है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

# इकाई 7 भारतीय दार्शनशास्त्रीयों के योगदान

**संरचना**


7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 स्वामी विवेकानंद (1863–1902)

7.3.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

7.3.2 शैक्षणिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

7.3.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

7.4 महात्मा गांधी (1869–1948)

7.4.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

7.4.2 शैक्षिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

7.4.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

7.5 रबींद्रनाथ टैगोर (1861–1941)

7.5.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

7.5.2 शैक्षणिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

7.5.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

7.6 जिद्दू कृष्णमूर्ति (1895–1986)

7.6.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

7.6.2 शैक्षणिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

7.6.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

7.7 श्री अरबिंदो घोष (1872–1950)

7.7.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

7.7.2 शैक्षणिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

7.7.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

7.8 गिजुभाई बधेका (1885–1939)

7.8.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

7.8.2 शैक्षणिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

7.8.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

7.9 सारांश

7.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सूची

7.11 प्रगति की जांच हेतु उत्तर


## 7.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में, आपने शिक्षा तथा दर्शन का अर्थ,अवधारणा तथा प्रकृति के विषय में पढा तथा कैसे दर्शन शिक्षा को समझने में सहायता करता है तथा विलोमतः। इसके


*प्रो. आशीष श्रीवास्तव, संकायाध्यक्ष, शिक्षा–अध्ययन शाला, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार।*

अतिरिक्त, आपने शिक्षा की अवधारणा, उद्देश्य तथा शिक्षण पद्धतियों के विषय में भी पढा जैसा कि विभिन्न दर्शनों जैसे आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद, व्यवहारवाद इत्यादि द्वारा बताया गया। इस इकाई में,हम भारतीय दार्शनिकों की शिक्षा की अवधारणा, उद्देश्य तथा प्रक्रियाओं तथा विशिष्ट रूप से व्यैक्तिक तथा सामान्यता समाज के लिए इसके प्रकार्यो में योगदान की चर्चा तथा व्याख्या करेंगें।आप कुछ प्रतिष्ठित भारतीय दार्शनिकों के विषय में जानते होंगे जिन्होंने भारत में शिक्षा के उद्भव तथा विकास के लिए योगदान दिया। वर्तमान इकाई शिक्षा,दर्शन, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रियाओं पर केंद्रित रहेगी जैसा भारतीय दार्शनिकों द्वारा व्यक्त किया गया है, जैसे स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, रविंद्र नाथ टैगोर, जिद्दकृष्णमूर्ति, अरबिंदो घोष तथा गिजुभाई बधेका। इस इकाई में की गई चर्चा उपर्युक्त दार्शनिकों के शिक्षा दर्शन पर तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उनकी प्रासंगिकता पर भी केंद्रित है।

## 7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपः

- स्वामी विवेकानंद के शिक्षा पर विचारों तथा इसके निहितार्थ का वर्णन कर सकेंगे।
- महात्मा गांधी के शिक्षा के दर्शन तथा बुनियादी शिक्षा के लिए इसके निहितार्थ की व्याख्या कर सकेंगे।
- श्री रविंद्र नाथ टैगोर के शिक्षा पर विचारों के साथ शिक्षामें इसके निहितार्थ की व्याख्या कर सकेंगे।
- श्री अरबिंदो घोष का एकीकृत शिक्षा दर्शन तथा वर्तमान शिक्षण परिदृश्य के लिए इसके निहितार्थ की व्याख्या कर सकेंगे।
- जे कृष्णमूर्ति की शिक्षा पर अवधारणा तथा शिक्षा में इसके निहितार्थ का वर्णन कर सकेंगे।
- गिजूभाई की शिक्षा की अवधारणा तथा शिक्षा तथा शिक्षण प्रक्रिया के लिए इसके निहितार्थ की व्याख्या कर सकेंगे।
- वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में भारतीय दार्शनिकों के विचारों की प्रासंगिकता पर चर्चा कर सकेंगे।

## 7.3 स्वामी विवेकानंद(1863–1902)

भारतीय दार्शनिकों के मध्य, स्वामी विवेकानंद काफी विख्यात तथा सभी के लिए प्रेरणादाई हैं। उनका दर्शन आदर्शवादी विचार तथा अध्यात्मवाद पर आधारित है। आइए विवेकानंद का जीवन दर्शन, शिक्षा की अवधारणा, शिक्षण प्रक्रिया तथा शिक्षा में निहितार्थ पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

*स्वामी विवेकानंद*
*(1863–1902)*

### 7.3.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

**संक्षिप्त जीवन परिचय**

नरेन,स्वामी विवेकानंद के रूप में लोकप्रिय, का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में

हुआ जिसे वर्तमान में कोलकाता के नाम से जाना जाता है। बचपन के समय के दौरान वे संगीत, व्यायाम तथा पढ़ाई में श्रेष्ठ थे। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की। उन्होंने विभिन्न विषयों में व्यापक ज्ञान अर्जित किया विशेषकर दर्शनशास्त्र तथा इतिहास में। वे योग तथा ध्यान का अभ्यास उनके बचपन से ही करते थे तथा वे कुछ समय के लिए ब्रह्म आंदोलन में भी शामिल थे। उन्हें हमेशा युवा भारत में आध्यात्मिक बोध तथा भक्ति जगाने के लिए याद किया जाएगा। वर्ष 1893 में उन्होंने शिकागो यूएसए में विश्व धर्म सम्मेलन में अपना ऐतिहासिक भाषण दिया जो हमेशा प्रत्येक भारतीय द्वारा याद किया जाता है। विवेकानंद का एक प्रचंड आध्यात्मिक, दार्शनिक तथा वैज्ञानिक संत के रूप में अभिवादन किया जाता है। (इग्नू एमईएस–051,2014)

### जीवन दर्शन

विवेकानंद का जीवन दर्शन वेदान्तिक दर्शन पर आधारित है तथा वे वेदान्तिक विचारों को अध्यात्म, आधुनिकता, विज्ञान, तर्कबाद तथा समानता के दृष्टिकोण से देखते हैं। उनके जीवन दर्शन की सबसे अच्छी व्याख्या आत्मविषयक ज्ञान मीमांसा तथा मूल्य मीमांसा के दृष्टिकोण के अनुसार की जा सकती है।

आत्मविषयक अवलोकन में उन्होंने कर्म सिद्धांत की व्याख्या सामाजिक महत्व के अनुसार की है। ईश्वर पर उनके विचार गरीबों की सेवा के लिए हैं। एक मौलिक रूप में परिवर्तित सामाजिक संदर्भ में, आध्यात्मिक स्तर पर सभी आत्माओं की संभावित समानता पर बल देकर उनका इरादा वेदान्तिक निर्देशों को भारतीय समाज के पुनरुद्धार के लिए मूल आधार बनाना था। विवेकानंद के दर्शन को वेदान्तिक समाजवाद के रूप में भी चरित्र चित्रण किया जा सकता है। उनके जीवन दर्शन के ज्ञान मीमांसा संबंधी विचार, वास्तविकता के वेदान्तिक दृष्टिकोण से व्याख्या करने की वैज्ञानिक पद्धतियों पर केंद्रित है। वे अनुभवजन्य ज्ञान, तार्किक ज्ञान, अंतरबोध ज्ञान तथा प्रकाशित ज्ञान को भी स्वीकार करते हैं। विवेकानंद की ज्ञान मीमांसा का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष उनका आग्रह था कि सभी तथ्यों की व्याख्या अंदर से होनी चाहिए। वह पारलौकिक तथा अलौकिक व्याख्या की सहायता, धार्मिक तथ्यों के संबंध में भी लेने के विरुद्ध थे। विवेकानंद के दर्शन का मूल्य मीमांसिक विवेचन परंपरागत भारतीय मूल्य संरचना पर बल देता है,में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष शामिल है। तथापि वेदांत परंपरा को पुनर्जीवित करने के इरादे के साथ उन्होंने पुरुषार्थ की पुर्नव्याख्या मूल तत्व से बिना भटके युवाओं को समाजसेवा में मोक्ष प्राप्त करने के उनके अनुरोध के साथ की। (इग्नू एमईएस–051, 2014)

## 7.3.2 शैक्षणिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

स्वामी विवेकानंद शिक्षा को व्यापक तथा व्यावहारिक रूप के साथ देखते थे जिसमें शिक्षा के स्वभावजन्य दृष्टिकोण पर विशेष बल दिया गया था। इसे स्वामी जी के कथन द्वारा अच्छी प्रकार प्रतिबंधित किया जा सकता है, "शिक्षा सूचना की मात्रा नहीं है जो आपके दिमाग में डाली जाए तथा वहां पर पूरा जीवन बिना पाचन के विप्लव करें। हमारे पास जीवन निर्माण,मनुष्य निर्माण, चरित्र निर्माण तथा विचारों का समावेश होना चाहिए। यदि आपने पांच विचारों को आत्मसात कर लिया तथा उन्हें अपना जीवन तथा चरित्र बना लिया तो आपके पास उस मनुष्य से ज्यादा शिक्षा है जिसने एक संपूर्ण पुस्तकालय को कंठस्थ कर लिया है। यदि शिक्षा जानकारी के समरूप है, पुस्तकालय दुनिया के सबसे बड़े ज्ञानी तथा विश्वकोश ऋषि हो जाएंगे।"

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा के माध्यम से एक व्यक्ति को स्वयं के शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए सहायता मिलती है। वे कहा करते थे कि, "शिक्षा मनुष्य में पहले से ही विद्यमान दिव्य पूर्णता की अभिव्यंजना है।"

उन्होंने दृढ़ता पूर्वक किताबी ज्ञान की आलोचना की है तथा वे कहते थे कि मेरे युवा विद्यार्थियों के लिए,"मैं उनके इसके सार को समझने की क्षमता के बिना गीता पढ़ने की बजाय फुटबॉल खेलने को वरीयता दूंगा। शिक्षा सही मायने में, वास्तविकता (सत), अभिज्ञता (चित्त) परमानंद (आनंद) को समझने तथा अनुभव करने में सहायक है।

उन्होंने अपने विचार सामूहिक शिक्षा, महिला शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा पर भी व्यक्त किए हैं। उनके अनुसार, शिक्षा को एक व्यक्ति की सृजनात्मकता, मौलिकता तथा उत्कृष्टता पर बल देना चाहिए। उनके विचारों के अनुसार एक अच्छी शिक्षा वह है जो मनुष्यों में छिपी हुई क्षमता को प्रकट करती है। यथार्थ शिक्षा को मानवता के बोध के संवर्धन की आवश्यकता है। यह मानवता का बोध, मानव के चरित्र की नींव, एक संतुलित व्यक्तित्व की सटीक तथा अत्यावश्यक पहली आवश्यकता है।

स्वामी विवेकानंद की शिक्षा की उपर्युक्त अवधारणा के आधार पर शिक्षा के महत्वपूर्ण लक्षण निम्नलिखित हैं:

- ईश्वर प्रत्येक मानव ह्रदय में निवास करता है।
- ईश्वर की सबसे अच्छी पूजा मानवता की सेवा है।
- आध्यात्मिकता, नीति शास्त्र तथा नैतिकता, जीवन के साथ–साथ शिक्षा के वास्तविक आधार होने चाहिए।
- प्रेम तथा त्याग विश्व में व्याप्त होने चाहिए।
- धर्म का अर्थ है आत्म नियंत्रण, योग तथा ध्यान के माध्यम से आत्मबोध।

**शिक्षा के उद्देश्य**

वेदांत तथा इसकी शिक्षा स्वामी विवेकानंद के लिए मुख्य संदर्भ बिंदु थे। शिक्षा के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- मानवता का विकास।
- समाज तथा मानवता की सेवा।
- शारीरिक शक्ति का विकास।
- अंतर्राष्ट्रीय भ्रातृ–भाव तथा विश्व–अभिज्ञता का विकास।

### 7.3.3 पाठ्यक्रम,शिक्षा–विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

जैसा कि विवेकानंद की शिक्षा की अवधारणा तथा उद्देश्यों से परिणाम निकाला जा सकता है, पाठ्यक्रम, शिक्षा विज्ञान तथा शिक्षक तथा विद्यार्थियों की परिकल्पना निम्नलिखित है:

**पाठ्यक्रम**

शिक्षा के पूर्वोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए,स्वामी जी ने पाठ्यक्रम को दो भागों में विभाजित करने का सुझाव दिया है– भौतिकतावादी (सांसारिक) तथा आध्यात्मिक (अमूर्त) पाठ्यक्रम। आत्मा का विकास तथा आत्म अनुभूति को आध्यात्मिक पाठ्यक्रम में भाषा, विज्ञान, मनोविज्ञान, कला, कृषि इत्यादि के शिक्षण के दौरान शामिल करना चाहिए, इन्हें भौतिक पाठ्यक्रम में रखा गया है। उनके अनुसार आधुनिक शिक्षा अधिक व्यवसाय अभिविन्यस्त है तथा मूल्यों तथा गुणों, मानसिक अनुशासन, सशक्त नैतिकता तथा मजबूत चरित्र निर्माण पर बल नहीं देती। उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षा को कुछ तथ्यों को भरने या दिमाग में

जानकारी के अतिभारण के लिए नहीं होना चाहिए, परंतु इसका उद्देश्य मनुष्य के दिमाग का रूपांतरण होना चाहिए। यथार्थ शिक्षा ना केवल व्यवसाय अभिविन्यस्त होनी चाहिए बल्कि राष्ट्रीय विकास के लिए भी होनी चाहिए।

### शिक्षा विज्ञान

उनके अनुसार, सैद्धांतिक शिक्षा को जीवन निर्माण, मानव निर्माण, चरित्र निर्माण, विचारों का समावेश इत्यादि प्रदान करने चाहिए। ऐसी शिक्षा का उद्देश्य एक एकीकृत व्यक्तित्व का निर्माण होगा। स्वामी जी कहते हैं कि यह सोचना गलत है कि हम एक बच्चे के विकास को बढ़ावा देते हैं, वास्तव में, बच्चा अपने विकास को स्वयं आगे बढ़ाता है। स्वामी जी कहते हैं,"प्रत्येक अपनी स्वयं की प्रकृति के अनुसार विकसित होता है। जब समय आता है, हर किसी को इस सत्य का पता चल जाएगा। क्या आप सोचते हैं कि आप एक बच्चे को शिक्षित कर सकते हैं? बच्चा स्वयं को शिक्षित करेगा, आपका कार्य उसे आवश्यक अवसर प्रदान करना तथा उसके मार्ग की बाधाओं को हटाना है। वह स्वयं ही खुद को शिक्षित करेगा। एक पौधा स्वयं उगता है, क्या माली उसे उगाता है? वह केवल उसे अनिवार्य वातावरण प्रदान करता है; यह पौधा ही है जो स्वयं खुद को बड़ा करता है।"

जो विशिष्ट पद्धतियां उन्होंने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग के लिए सुझाई हैं, एकाग्रता, योग तथा ध्यान, अंतर्ज्ञान, व्याख्यान तथा चर्चा, स्व–अभ्यास, रचनात्मक गतिविधियां इत्यादि है। उनका मानना था कि बच्चे में पर्याप्त शक्ति है जो प्रकृति में दिव्य है तथा शिक्षण की पद्धतियां उस शक्ति को प्रकट करने का माध्यम है।

### अध्यापक तथा विद्यार्थी

स्वामी विवेकानंद स्व–शिक्षा के सिद्धांत का समर्थन करते हैं। इसीलिए शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों के लिए सहूलियत प्रदान करना तथा स्व–अधिगम की समझ को विकसित करने के लिए वातावरण विकसित करना है। शिक्षा को लाभदायक बनाने के लिए, इसे अधिगमकर्ता की प्रकृति तथा आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए तथा शिक्षक द्वारा निर्धारित नहीं होना चाहिए। शिक्षक को बच्चे की आत्मा में ईश्वर दिखाई देना चाहिए। बच्चे को ईश्वर का प्रत्यक्षीकरण होना चाहिए। ज्ञान की प्राप्ति के लिए एकाग्रता बहुत जरूरी है। इस प्रकार जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए, यह शक्ति भी बहुत सहायक है। संवाद शक्ति की सहायता से एक व्यक्ति प्रासंगिक जानकारी के चयन तथा अधिग्रहण तथा उसे कभी भी और जहां भी आवश्यकता हो, प्रयोग के लिए अपने मस्तिष्क में व्यवस्थित करने में समर्थ है।

उनके अनुसार भारतीय समाज की सक्रियता के लिए व्यावहारिक बुद्धिमत्ता तथा न्याय की आवश्यकता है तथा यह केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने आध्यात्मिकता का समाज सेवा तथा सच्चे धर्म के रूप में समर्थन किया है।

**अपनी प्रगति जाँचें 7.1**

**टिप्पणी** : क) अपना उत्तर नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. किन्ही दो बिंदुओं का वर्णन कीजिए जो विवेकानंद की शिक्षा की अवधारणा से प्राप्त हो सकते हैं।

.....

.....

.....

2. विवेकानंद द्वारा सुझाए गए दो प्रकार के पाठ्यक्रमों के नाम लिखें।

.....

.....

.....

3. स्वामी विवेकानंद द्वारा सुझाए गई शिक्षा की विधियां कौन सी है?

.....

.....

.....

## 7.4 महात्मा गांधी(1869–1948)

भ्महात्मा गांधी का जीवन दर्शन तथा शिक्षा की अवधारणा वर्तमान समय में समान रूप से प्रसिद्ध है। गांधी का शिक्षा पर विचार भारत में शिक्षा के विभिन्न नीति दस्तावेजों में प्रतिबिंबित होता है। इस भाग में, हम गांधी के जीवन दर्शन, उनके शिक्षा के सिद्धांत, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया तथा शिक्षा पर इसके निहितार्थ की चर्चा विस्तार से करेंगे।

*महात्मा गांधी (1869–1948)*

### 7.4.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

#### जीवन परिचय

महात्मा गांधी, जैसा कि हम सब जानते हैं, भारत के राष्ट्रपिता का जन्म गुजरात के काठियावाड़ के पोरबंदर में 2 अक्टूबर 1869 को हुआ। उनके पिता पोरबंदर तथा राजकोट राज्य के प्रधानमंत्री थे। वह कानून की आगे की शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए। जब हम गांधी के विशिष्ट आदर्शों की बात करते हैं तो हमारे मस्तिष्क में सत्य, अहिंसा, सादगी, सभी के लिए, नेतृत्व, श्रम की गरिमा तथा वास्तविक जीवन में आदर्शों के कार्यान्वयन बजाय उन्हें केवल प्रसारित करना, आते हैं। यह आदर्श उनके शिक्षा दर्शन में भी प्रतिबिंबित होते हैं।

#### जीवन का दर्शन

गांधी के दार्शनिक विचार मानव की अवधारणा, व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा ईश्वर तथा सत्य के सिद्धांत पर आधारित है। उनके अनुसार, मनुष्य एक भौतिक–रासायनिक संग्रह नहीं है, बल्कि एक सामाजिक–सांस्कृतिक तथा राजनैतिक–आर्थिक प्राणी है। इससे बढ़कर एक आध्यात्मिक सत्व है। उनके लिए, व्यक्ति, सर्वोच्च निमित्त है। इसीलिए मनुष्य तथा उसका नैतिकपुनरुद्धार गांधीवादी विचारों में प्रमुख दर्जा रखता है। व्यक्ति की स्वतंत्रता पर, गांधी जी कहते हैं,'व्यक्ति मूल में आध्यात्मिक, प्रकृति में सामाजिक तथा चयन में तार्किक है'। स्वतंत्रता एक व्यक्ति में निहित गुण है। यह व्यक्ति के अंदर है तथा यह बाहर से नहीं आता है। उनकी स्वतंत्रता की अवधारणा सामाजिक–राजनैतिक संदर्भ के अनुसार, लोकतंत्र, स्वशासन तथा आत्मनिर्भरता से संबंधित है। गांधी की ईश्वर तथा सत्य की अवधारणा जीवन की अंतिम सच्चाई है। उन्होंने व्यक्त किया है कि अंतिम सच्चाई सत्य है, सत्य ईश्वर है तथा ईश्वर सत्य है। उनके लिए, स्वयं की अनुभूति, सत्य तथा ईश्वर की अनुभूति है। ईश्वर मनुष्य के सभी मूल्यों तथा आकांक्षाओं का ध्येय है।

### 7.4.2 शैक्षिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

गांधी की शैक्षिक परिकल्पना दक्षिण अफ्रीका में टॉलस्टॉय फार्म पर किए गए शैक्षिक प्रयोगों तथा अनुभवों के माध्यम से आकार लेती है।उन्होंने अपने शैक्षणिक प्रयोगों को एक कम अवधि के लिए शांति निकेतन पर भी तथा उसके बाद साबरमती तथा सेवाग्राम आश्रम में जारी रखा, तथा उन्होंने सेवाग्राम आश्रम की स्थापना की, जो वर्धा में स्थित है तथा वहां से उन्होंने न केवल नई शिक्षा प्रणाली के विचार की कल्पना की परंतु स्वतंत्रता के लिए अपनी लड़ाई भी लड़ी।

शिक्षा द्वारा गांधी का अभिप्राय है **'बच्चे तथा मनुष्य की शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा में जो भी सर्वोत्तम है, उसको सर्वांगीण रूप से प्रकट करना'**। उनके विचारों के अनुसार, शिक्षा, साक्षरता के समान नहीं है तथा न हो साक्षरता शिक्षा के। न हो विद्यालय में साहित्यिक प्रशिक्षण शिक्षा का निर्माण करता है क्योंकि सामान्यतया एक विद्यालय में साहित्यिक प्रशिक्षण साधनों या कौशल विकास तथा विषय विशेषज्ञता पर ज्यादा बल देता है, एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास पर बल देने की अपेक्षा। गांधी के अनुसार,शिक्षा का ध्यान व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास है। शिक्षा वह है जो आत्मा के पुनरुत्थान के साथ मस्तिष्क तथा शरीर के विकास से संबद्ध सर्वोत्तम या सत्य को प्रकट करती है।

#### शिक्षा के उद्देश्य

गांधी का शिक्षा का उद्देश्य 11 सितंबर 1937 को हरीमन में प्रस्तुत उनके कथन से स्पष्टतया समझा जा सकता है। उन्होंने कहाः 'शिक्षा उनके (लोगों) के लिए बेरोजगारी के विरुद्ध एक प्रकार की सुरक्षा होनी चाहिए। 14 वर्षों की समाप्ति पर बच्चों को—जब वह 7 वर्षों की शिक्षा पूरी कर लेता है—एक अर्जन इकाई के रूप में मुक्त करना है, परंतु यह याद रखा जा सकता है कि वह बच्चे को केवल आजीविका कमाने वाला नहीं बनाना चाहते थे। वह उसे सिखाना चाहते थे जब वह कमाए तथा जब वह सीखे तब कमाए तथा यह शिक्षा का केवल तात्कालिक उद्देश्य है। उनके अनुसार, शिक्षा का सांस्कृतिक उद्देश्य किसी भौतिक प्रयोग की अपेक्षा, ज्ञान प्राप्त करने पर बल देता है। यह ज्ञान भारतीय संस्कृति का ज्ञान होना चाहिए। संस्कृति, उनके अनुसार, आत्मा का गुण है जो मानव व्यवहार के सभी पक्षों पर चर्चा करती है।

बच्चे का संपूर्ण विकास अन्य उद्देश्य है जिसका गांधी समर्थन करते हैं। इस विचार के अनुसार, हमारी जन्मजात तथा अर्जित शक्तियों को उन सभी शक्तियों के सामंजस्यपूर्ण विकास के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

नैतिक उद्देश्य पर भी उनके द्वारा चरित्र निर्माण या चरित्र विकास के अर्थ में बल दिया गया है। उनके अनुसार, 'चरित्र विकास का तात्पर्य है नैतिक गुणों जैसे साहस, दृढ़ विश्वास की शक्ति, निजी जीवन की शुद्धता न्याय परायणता तथा मानवता की स्वयं संयमित सेवा'। चरित्र का निर्माण अहिंसा तथा सार्वभौमिक जीवन के अनुसार होना चाहिए। शिक्षा का अंतिम उद्देश्य गांधी की मानव जीवन में अंतिम लक्ष्य—अंतिम वास्तविकता की अनुभूति, ईश्वर तथा सत्य का ज्ञान, की अवधारणा को प्रतिबिंबित करता है।

शिक्षा के तीन प्रमुख पक्ष है जिन्हें गांधीजी ने शिक्षा के उद्देश्यों के रूप में अवधारित किया है, ये हैः

- **आत्मनिर्भरता उद्देश्य**— शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को आर्थिक रूप से स्वतंत्र तथा आत्मनिर्भर करना होना चाहिए।
- **सांस्कृतिक उद्देश्य**— उन्होंने भारतीय संस्कृति के संरक्षण तथा संचरण का समर्थन किया।

- **चरित्र निर्माण उद्देश्य**– समस्त शिक्षा का लक्ष्य चरित्र निर्माण पर होना चाहिए, शिक्षा माध्यम है तथा चरित्र निर्माण उद्देश्य है।

### 7.4.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा–विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

गांधी का शैक्षिक दर्शन तथा शिक्षा पर उनके विचार पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियों तथा शिक्षक तथा विद्यार्थी की भूमिका में प्रतिबिंबित है। उन्होंने उस शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है जो कौशल–केंद्रित पाठ्यक्रम पर आधारित है। इस भाग में शिक्षा के कौशल–केंद्रित पाठ्यक्रम कि प्रकृति तथा प्रक्रियाओं का अध्ययन करेंगे।

#### हस्त कौशल–केंद्रित पाठ्यक्रम

गांधी जी के अनुसार, संपूर्ण मानव को शिक्षित करने के लिए, शिक्षा को हस्त कौशल–केंद्रित होने की आवश्यकता है। हस्त कौशल–केंद्रित शिक्षा अनुभवों तथा गतिविधियों के साथ–साथ विषयों के विभिन्न प्रकार के कौशलों के साथ पारस्परिक संबंध पर बल देती है। यह एक सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास में सहायता करती है, जिसमें ज्ञान, क्रिया तथा भावनाओं को समान रूप से संतुलित किया गया है। बच्चे अपनी शिक्षा का पाठ्यक्रम समाप्त करने के पश्चात उनकी आजीविका कमाने में सक्षम होने चाहिए। उन्होंने पाठ्यक्रम में हस्त कौशल के एकीकरण का भी सुझाव दिया, जिसमें शिल्प को ना केवल एक अभ्यास के रूप में प्रयोग किया जाए बल्कि इसे अजीविका के रूप में प्रयोग किया जाए।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य है, अधिगमकर्ता की सर्वांगीण विकास जिसमें निम्नलिखित को सम्मिलित करना चाहिए–

- स्थानीय आवश्यकता तथा शर्तों के अनुसार एक आधारभूत कौशल।
- मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना।
- अंकगणित
- सामाजिक अध्ययन
- सामान्य विज्ञान जिसमें प्रकृति अध्ययन, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान, शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान तथा भौतिक संस्कृति शामिल है।
- कला–कार्य
- संगीत
- लड़कियों के लिए गृह विज्ञान

गांधी जी की हस्त कौशल–केंद्रित शिक्षा सहयोगपूर्ण तथा सहकारी गतिविधियों को बढ़ावा देती है तथा इन दोनों में से एक प्रकार का सामाजिक नियंत्रण या सामाजिक अनुशासन उभर कर आता है। सामाजिक अनुशासन की अवधारणा उनके शिक्षा के माध्यम से नागरिकता के आदर्शों पर बल देने से भी स्पष्ट होती है। हस्त कौशल–केंद्रित शिक्षा को बुनियादी शिक्षा के रूप में जाना जाता है। इस भाग में, बुनियादी शिक्षा प्रणाली की व्याख्या की गई है तथा शिक्षा–विज्ञान का भी प्रयोग इस शिक्षा को प्रदान करने के लिए किया जाएगा।

#### बुनियादी शिक्षा प्रणाली तथा शिक्षा–विज्ञान

बुनियादी शिक्षा योजना में, गांधी ने सामुदायिक जीवन को समान महत्व दिया है। समुदाय के माध्यम से शिक्षा गुणों की भांति विकसित होती है जैसे सहयोग भावना, सहकारिता तथा एक आपसी सहायता की समझ। एक बच्चा सामाजिक सामंजस्य की क्षमता सामुदायिक

जीवन के माध्यम से विकसित करता है। बुनियादी शिक्षा प्रणाली में, बच्चे का विकास सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से प्रदान किया जाता है, जैसे सामुदायिक जीवन, सामूहिक प्रार्थना, सामूहिक भोजन, शारीरिक व्यायाम, टीम कार्य, क्रीड़ा एवं खेल, असाइनमेंट (गृह कार्य), सांस्कृतिक कार्यक्रम, विशेष दिवसों का समारोह तथा रचनात्मक कार्यक्रम। आवासीय शिक्षा के दौरान, बच्चे विभिन्न गतिविधियां विभिन्न टीम/समूह में या सामूहिक रूप से शुरू करते हैं। इनमें कमरे तथा मैदान की सफाई, भोजन करना, शौचालय एवं मूत्रालय तथा पानी लाना, खाना पकाना, पौधों को पानी देना, कपड़े धोना, नहाना इत्यादि भी शामिल है।

संक्षेप में,जीवन से संबंधित प्रशिक्षण बुनियादी शिक्षा प्रणाली में प्रदान किया गया है। इसके द्वारा, मूल्य जैसे स्वच्छता, आत्मनिर्भरता, श्रम, टीम भावना, सहकारिता, सहनशक्ति, निष्ठा, अच्छा आचरण, ईमानदारी, अनुशासन, आज्ञाकारिता, नियमितता, शारीरिक शिक्षा से संबंधित क्रियाएं तथा खेल भी बच्चों में स्वास्थ्य संबंधित मूल्यों को विकसित करने के विचार के साथ सुनियोजित किए जाते हैं। इस शिक्षा में, उत्सव जैसे राष्ट्रीय त्योहार, जन्म वर्षगांठ, पुण्यतिथि, अभिभावक (संरक्षक) दिवस, स्व–शिक्षा दिवस, पर्यावरण दिवस, विश्व जनसंख्या दिवस तथा ऐसे अन्य दिवस मनाए जाते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम ऐसे अवसरों पर आयोजित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, गांधी द्वारा दिए गए समुदाय सेवा कार्यक्रम जैसे गांव के मार्ग में तथा अन्य क्षेत्रों की सफाई, खादी गतिविधियां, प्रौढ़ शिक्षा, महिला उत्थान, स्वास्थ्य शिक्षा, कुष्ठ रोगियों की परिचर्या, व्यसन से राहत इत्यादि को प्राथमिक विद्यालयों के साथ–साथ समुदाय तथा छात्रावासों में भी मनाया जाता है। ये सभी बच्चों में नैतिक तथा अन्य मूल्यों को विकसित करने के लिए सहायता करते हैं। उन्होंने सुझाया कि बुनियादी शिक्षा मातृभाषा में दी जानी चाहिए।

### अध्यापक तथा विद्यार्थी

गांधी सोचते हैं कि केवल सर्वोत्तम तथा उचित अध्यापक ही शिक्षा के उपर्युक्त उद्देश्यों की उपलब्धि में सहायता कर सकते हैं। इन अध्यापकों के पास ज्ञान, कौशल, उत्साह, देशभक्ति तथा विशेष प्रशिक्षण होना चाहिए। यह सामाजिक अभिवृत्ति से प्रेरित तथा अहिंसा के आदर्शों को आत्मसात किए हुए होने चाहिए। गांधीवादी योजना में, शिक्षक–अधिगमकर्ता संबंध पाठ्य विवरण या पाठ्यक्रम के माध्यम से स्थापित नहीं होना चाहिए, परंतु जीवन–कौशल को प्राप्त करने के लिए होना चाहिए,जो एक व्यक्ति को अर्थ पूर्ण जीवन जीने में सहायता करता है। शिक्षक की भूमिका पर बल देते हुए, उनका मानना है कि, 'एक व्यक्ति जो मां का स्थान नहीं ले सकता, शिक्षक नहीं बन सकता'। शिक्षक की मुख्य भूमिका अहिंसक कार्यों के माध्यम से अहिंसक बच्चा तैयार करना है, अहिंसक शब्दों की अपेक्षा।

**अपनी प्रगति जाँचें 7.2**

**टिप्पणी** : क) अपना उत्तर नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

4. गांधी की शिक्षा की अवधारणा का उल्लेख करें तथा यह कैसे स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गई अवधारणा से अलग है?

.....

.....

.....

.....

5. . शिक्षा का परम लक्ष्य क्या है, जैसा गांधी जी द्वारा परिभाषित किया गया है?

.....

.....

.....

6. गांधी जी द्वारा प्रदत बुनियादी शिक्षा योजना क्या है?

.....

.....

.....

## 7.5 रविंद्रनाथ टैगोर (1861–1941)

*रविंद्रनाथ टैगोर (1861–1941)*

रविंद्र नाथ टैगोर एक विश्व विख्यात कवि तथा शिक्षाविद, बहुमुखी, संश्लिष्ट तथा मौलिक व्यक्तित्व है। हालांकि वे कई लेखकों तथा कवियों जैसे शेक्सपियर, गेटे, वर्डसवर्थ, रस्किन, शैले, कीट्स तथा ब्राउनिंग द्वारा प्रेरित थे, परंतु उनकी बुद्धि, आध्यात्मिकता तथा जीवन दर्शन उपनिषदों के पदों में, कालिदास के काव्य में, वैष्णव के गीतों में, कबीर की रहस्यवादी कविताओं तथा ब्रह्म समाज के धार्मिक वातावरण में बसी है। वह सांस्कृतिक संश्लेषण तथा अंतर्राष्ट्रीय एकता में विश्वास रखते थे। उनके गीत तथा संदेश सामाजिक तथा राजनैतिक, दोनों कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा थे। उनके शैक्षिक विचार भी भारतीय शिक्षा प्रणाली में सीमा चिन्ह के समान स्थित है। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से अध्यात्म तथा मानव की प्राकृतिक आवश्यकताओं का समन्वय तथा पूर्ण करने का प्रयास किया।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में,टैगोर ने शांति निकेतन में उनके विद्यालय के माध्यम से भारतीय समाज के पुनरुद्धार में शिक्षा के सच्चे महत्व का प्रदर्शन किया। वहां जाति या पंथ के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था। सभी का (विदेशी भी शामिल) शांतिनिकेतन में भाई तथा बहनों के रुप में साथ रहने तथा सीखने के लिए स्वागत था। चमड़े को छूना तथा सुंदर चमड़े के बैग या सैंडल बनाना मात्र एक अछूत मोची का काम नहीं था,यह एक कला का कार्य था जो सभी प्रारंभ कर सकते थे। श्रम की गरिमा शांतिनिकेतन में प्रदर्शित की गई थी। प्रत्येक स्तर की शिक्षा शांतिनिकेतन या विश्व भारती में प्रदान की जाती थी, यथा बाल विहार से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक।

### 7.5.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

#### संक्षिप्त जीवन परिचय

रविंद्र नाथ टैगोर ने थोड़ी औपचारिक शिक्षा ग्रहण की तथा चौदह वर्ष की आयु तक विद्यालय छोड़ दिया। वे मूलतः स्वाध्यायी व्यक्ति थे। उनके बचपन के अनुभवों ने, विशेषकर औपचारिक विद्यालयों में अनुसरित परंपरागत शैक्षिक पद्धतियां, उनके शैक्षिक मत पर गहरा प्रभाव छोड़ा। वर्ष 1901 में, उन्होंने अपना स्वयं का एक विद्यालय शुरू किया, यथा 'शांतिनिकेतन', जहां उन्होंने अपने शैक्षिक परीक्षणों की शुरुआत की। 1921 में, विद्यालय विश्व विख्यात विश्व भारती, एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, बन गया।

उनका जीवन दर्शन मानवतावाद, व्यक्तिवाद,सार्वभौमिकता तथा आध्यात्मिक सद्भाव पर बल देता है। मानवतावाद का समर्थन करते हुए, टैगोर ने कहा, मनुष्य स्वतंत्र सत्व है। वे जाति, वर्ग, धर्म, लिंग तथा राष्ट्रीयता से भी स्वतंत्र है। व्यक्तिवाद पर, टैगोर ने कहा, शुद्ध व्यक्ति अंत में सार्वभौमिक मानवता के साथ मिल जाता है तथा वह मानव की अद्वितीयता तथा विकास के लिए एक विशिष्ट मार्ग का अनुसरण करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार तथा स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं। उनकी सार्वभौमिकता के उदाहरण एक राजनैतिक समाज पर नहीं, बल्कि आध्यात्मिक समझ पर है। आध्यात्मिक सद्भाव पर, टैगोर ने कहा, अध्यात्मवादी तथा आध्यात्मिकता उनके जीवन दर्शन के मुख्य तत्वों में से एक है। वे व्यक्ति की आध्यात्मिक एकता में विश्वास रखते थे।

## 7.5.2 शैक्षिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

रविंद्र नाथ टैगोर एक महान शैक्षिक वृत्तिक थे। यह उनका मानना था कि"शिक्षा एक व्यक्ति का विश्व के साथ सामंजस्य में एक सर्वांगीण विकास है"। उनका शैक्षिक दर्शन आदर्शवादी सिद्धांतों का कुछ प्रकृतिवादी परंपराओं के साथ सम्मिश्रण पर आधारित है जो आज शांति निकेतन में प्रत्यक्ष है। टैगोर के अनुसार, 'बच्चों का स्वतंत्रता के वातावरण में पालन पोषण करना चाहिए'।बहुत अधिक प्रतिबंध उन पर नहीं लगाए जाने चाहिए। विद्यालय बिना जीवन तथा रंग के शिक्षा के कारखाने जैसे बन गए हैं।

टैगोर का मानना था कि शिक्षा प्राकृतिक परिवेश में दी जानी चाहिए। बच्चों को प्रकृति के साथ सीधे संपर्क में लाना चाहिए क्योंकि बच्चों का मस्तिष्क प्रकृति में प्रत्यक्ष अनुभव के लिए जिज्ञासु, सतर्क, अधीर तथा आतुर होता है। टैगोर एक अध्यात्मवादी के साथ साथ प्रकृतिवादी भी थे। वे अंतर्राष्ट्रीय सहमति के लिए शिक्षा के महान समर्थक थे। उनकी देशभक्ति तथा राष्ट्रवाद उनके शैक्षिक प्रयास में अंतर्राष्ट्रीयतावाद में परिणित होता है।

### शिक्षा के उद्देश्य

टैगोर शिक्षा को जीवन के नए प्रतिमान को विकसित करने के लिए प्रक्रिया के रूप में देखते थे, जिसकी सार्वभौमिकतावाद के बोध में समाप्ति होती है। उनके द्वारा सुझाए गए शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित बिंदुओं में प्रस्तुत हैः

- शिक्षा वास्तविक होनी चाहिए तथा संपूर्ण व्यक्ति को उसकी भावनाओं, समझ तथा बुद्धि के अनुसार निर्मित करें।
- शिक्षा का लक्ष्य उत्कृष्ट जीवन के विकास पर होना चाहिए, अर्थात जिनमें आर्थिक, बौद्धिक, कलात्मक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास शामिल हो।
- शिक्षा एक व्यक्ति को समस्त ज्ञान की एकता के आंतरिक सिद्धांतों तथा हमारे सामाजिक तथा आध्यात्मिक सत्व की सभी गतिविधियों को समझने में मदद करती है।
- शिक्षा को सार्वभौमिकता, व्यक्तित्व के माध्यम से प्राप्त करनी चाहिए।

## 7.5.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा–विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

### पाठ्यक्रम तथा विद्यालय की अवधारणा

टैगोर के अनुसार एक पाठ्यक्रम को आध्यात्मिक, रचनात्मक, कलात्मक तथा व्यवसायिक यथा एक व्यक्ति के समग्र विकास के लक्ष्य पर आधारित होना चाहिए। उन्होंने सांस्कृतिक विषयों को पाठ्यक्रम के निर्माण में शामिल करने पर बल दिया था। उन्होंने संस्कृति का

व्यापक मायने में कला, नृत्य, नाटक, संगीत, कौशल तथा दैनिक जीवन के व्यावहारिक कौशलों के माध्यम से अनुकरण किया।टैगोर गतिविधि पर आधारित पाठ्यक्रम के सुदृढ़ समर्थक थे। एक व्यक्ति के सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए, उन्होंने आध्यात्मिक पक्ष के साथ पाठ्यक्रम में व्यक्ति के बौद्धिक तथा शारीरिक पक्षों पर बल दिया था।

### एक विद्यालय की अवधारणा

विद्यालय, जिसे एक आदर्श के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, टैगोर के अनुसार, मानव देवस्थान की हलचल से दूर खुले आकाश के नीचे स्थित होना चाहिए तथा प्राकृतिक वातावरण यथा खेतों,पेड़ों तथा पौधों के परिदृश्य से घिरा होना चाहिए। प्रकृति की व्यापक पृष्ठभूमि बच्चों के अंदर सर्वश्रेष्ठ तथा दिव्य परिकल्पना में सहायता करती है। उन्होंने 'वन'शब्द का प्रयोग घने जंगल के अनुसार नहीं किया है, परंतु प्राचीन भारतीय परंपरा में 'तपोवन' के रूप में किया है।

### शिक्षा–विज्ञान

शिक्षा का माध्यम भी टैगोर के विचारों के विषय में एक महत्वपूर्ण बिंदु है। अंग्रेजी का शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग केवल शहरी क्षेत्रों तथा उच्च वर्ग तक सीमित है, ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा। इसीलिए, यदि व्यापक ग्रामीण जनसमूह को लाभ पहुंचाना है, तो मातृभाषा का प्रयोग सर्वथा आवश्यक है।

टैगोर विज्ञान को भारतीय विश्वविद्यालयों में दार्शनिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान के साथ पढ़ाना चाहते थे। उन्होंने गतिविधि आधारित खेल गतिविधियों, भ्रमण करते हुए शिक्षण, आनंद के साथ सीखना, स्वाध्याय, स्वानुभविक, व्याख्या सह चर्चा, अध्ययन यात्रा तथा शिक्षण की अनुभव आधारित अधिगम पद्धतियों के प्रयोग का सुझाव दिया। उन्होंने अनुभव–शारीरिक, मानसिक, कलात्मक तथा भावनात्मक, की परिपूर्णता का समर्थन किया। यह सभी वाकई में आधुनिक शिक्षा विज्ञान के अनुरूप है।

### अध्यापक तथा विद्यार्थी

टैगोर के अनुसार,अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षकों को स्वयं के साथ सार्वभौमिक–आत्म में, जो उसकी व्यक्तिगत आत्मा में अंतर्निहित है, पर विश्वास करना चाहिए। एक शिक्षक को अपने शिक्षण में स्वतंत्रता, उत्कृष्टता तथा सार्वभौमिकता के सिद्धांतों का अनुसरण करना चाहिए। टैगोर की शिक्षा की योजना बच्चे को केंद्र में रखती है तथा शिक्षक की भूमिका बच्चे को स्वयं सीखने के लिए सहायता देना है। उन्होंने बल दिया कि शिक्षकों को पहले अच्छा अधिगमकर्ता बनना होगा, जब तक वह स्वयं सीख न ले, विद्यार्थियों को सिखाना पूरी तरह से असंभव है।

**अपनी प्रगति जाँचें 7.3**

**टिप्पणी** : क) अपना उत्तर नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

7. उन विचारधाराओं के नाम का उल्लेख करें जो टैगोर के शैक्षिक दर्शन में प्रतिबिंबित है?

.....

.....

.....

8. टैगोर द्वारा सुझाए गई शिक्षण पद्धतियों के नाम लिखें।

.....

.....

.....

.....

9. टैगोर के अनुसार एक विद्यालय के सिद्धांत की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

## 7.6 जिद्दू कृष्णमूर्ति (1895–1986)

रविंद्र नाथ टैगोर के समान, जिद्दू कृष्णमूर्ति पुस्तकीय अधिगम तथा औपचारिक विद्यालय प्रणाली के समर्थन में नहीं थे। वे शिक्षा के सच्चे वृत्तिक थे। इस भाग में आप उनके शैक्षिक दर्शन, उनकी विद्यालय की अवधारणा तथा शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षा–विज्ञान की क्रियाओं के विषय में पढेंगे।

*जिद्दू कृष्णमूर्ति*
*(1895–1986)*

### 7.6.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

#### जीवन परिचय

जे. कृष्णमूर्ति का जन्म 11 मई 1895 को आंध्र प्रदेश के मदनापल्लै में हुआ, उन्होंने ऋषि वैली एजुकेशन सेंटर, संस्थान की स्थापना 1928 में की। 15 वर्ष की आयु में, कृष्णामूर्ति सुश्री एनी बेसेंट के साथ 1911 में इंग्लैंड चले गए। अपने पिता की भांति वह भी थियोसॉफिकल सोसायटी के सदस्य बन गए। 1912 में उन्होंने **'एजुकेशन एज सर्विस'** नाम की एक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने एक आदर्श विद्यालय के जीवन का वर्णन किया जहां प्रेम शासन तथा प्रेरित करता है, विद्यार्थी अध्यापकों के पालन पोषण के अंतर्गत एक सज्जन किशोर के रूप में बड़े होते हैं।

#### जीवन दर्शन

कृष्णमूर्ति एक स्वतंत्र विचारक थे, इसीलिए, उन्होंने स्वयं को किसी मत, पंथ या तंत्र के अनुरूप करने या स्वयं एक तंत्र बनने से मना कर दिया। उन्होंने जो प्रस्तावित किया वह विश्व में संघर्ष तथा दुखों के उपचार के लिए व्यक्तिगत–स्व के पूर्ण रूपांतरण से अधिक नहीं है। मानवता को उनका संदेश था, 'पहले हमारे अस्तित्व का उद्देश्य,हमारे जीवन का उद्देश्य समझो तथा यह समझो कि हम किसके लिए वृद्धि कर रहे हैं। तब हमें मजबूत करने के लिए सब कुछ उपयोग करो। यह पता करना कि आप क्या करना वास्तव में पसंद करते हैं, सबसे कठिन बातों में से एक है। यह शिक्षा का भाग है'। उनकी शिक्षा, उनके सत्य,मस्तिष्क, विचार, बुद्धिमत्ता, सावधानी, अनुभूति, स्वतंत्रता, प्रेम तथा स्व है।

## 7.6.2 शैक्षिणिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

### शैक्षिक दर्शन

वह समकालीन शिक्षा प्रणाली, इसके उद्देश्य, प्रक्रियाओं तथा विषय–वस्तु के प्रति अत्यंत आलोचना वादी थे। वे वर्तमान शिक्षा का तकनीकों पर अत्यधिक तथा अनन्य बल तथा मानव के परिमाणों की उपेक्षा करने के विरुद्ध थे। वे कहते हैं,विद्यार्थियों को मात्र जानकारी प्रदान करना तथा परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए उन्हें तैयार करना शिक्षा का सबसे अधिक अबोधगम्य प्रकार है। वे कहते थे, ज्ञान केवल मस्तिष्क के संवर्धन के साधन के रूप में आवश्यक है, तथा स्वयं एक ध्येय के रूप में नहीं। रविंद्र नाथ टैगोर, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद तथा अन्य के समान, जिद्दू कृष्णमूर्ति ने की जो वह प्रचारित करते थे उसको व्यवहार में लाने के लिए, स्वयं के शैक्षिक संस्थान स्थापित किए।

### शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य उनके द्वारा सुझाए गए थेः

- बच्चे के एकीकृत/संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना जो अपने जीवन के किसी भी समय पर तथा किसी भी स्थिति से सामना करने में सक्षम हो।
- बच्चे को उसके स्वयं की योग्यता तथा उचित आजीविका की खोज करने में सक्षम बनाना।
- शिक्षा व्यक्तियों के मध्य स्वतंत्रता लाती है तथा केवल विद्वान तथा प्रविधिज्ञ उत्पन्न करना नहीं है।
- शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक तथा हर एक में आत्म के समग्र विकास का अवलोकन करना है।
- शिक्षा का उद्देश्य प्रेम तथा संवेदना पर आधारित स्वस्थ संबंधों का संवर्धन करना है।

## 7.6.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा–विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

### पाठ्यक्रम तथा विद्यालय की अवधारणा

कृष्णमूर्ति के अनुसार, एक आदर्श विद्यालय के पास विद्यार्थियों की सीमित संख्या होनी चाहिए क्योंकि सामूहिक निर्देश एकीकृत विकास की स्थिति में नहीं है। बच्चों का व्यक्तित्व समर्पित,विचारशील तथा सतर्क होना चाहिए। विद्यालय को बच्चों को उनकी क्षमताओं तथा सीमाओं को समझाने के लिए कार्य करना चाहिए।शिक्षा हमेशा कृष्णमूर्ति के हृदय के निकट थी। उन्होंने भारत तथा विदेश में कुछ सहशैक्षिक विद्यालय अपने विचारों के अनुशीलन के कार्यान्वयन के लिए स्थापित किए। वह प्रत्येक वर्ष विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के साथ खुली अंतः क्रिया के लिए उनका निरीक्षण करते थे। तथापि परंपरागत पाठ्यक्रम का इन विद्यालयों में अनुकरण किया गया,उनका इन विद्यालयों को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य बच्चों को उपयुक्त अवसर तथा स्वतंत्रता प्रदान करना था ताकि वे बिना किसी राष्ट्रीय, नस्लीय, वर्ग तथा सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों के बड़े हो सके तथा मानवों के मध्य सामंजस्य का निर्माण कर सकें।

### शिक्षा–विज्ञान

कृष्णमूर्ति द्वारा सुझाई गई शिक्षण–अधिगम पद्धतियां निम्नलिखित हैंः

- प्रश्नोत्तर विधि
- अवलोकन एवं प्रयोग

- गतिविधियां तथा अध्ययन यात्रा अनुभव
- तथ्यों की खोज तथा अन्वेषण

**शिक्षक तथा विद्यार्थी**

उनके अनुसार, एक सच्चा शिक्षक, एक विषय–वस्तु विशेषज्ञ होने के अतिरिक्त,एक ऐसा व्यक्ति भी है जो अपने विद्यार्थियों को विवेक तथा सत्य का रास्ता दिखाता है। कृष्णमूर्ति के अनुसार,संप्रेषण की अवधारणा में श्रवण तथा अधिगम शामिल है। दोनों के मध्य अंतर की समझ शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण लाभ है। सत्य स्वयं शिक्षक से अधिक महत्वपूर्ण है। एक नए समाज के निर्माण के लिए हम में से प्रत्येक को एक सच्चा शिक्षक बनना होगा। इसका अर्थ है कि हमें अधिगमकर्ता तथा शिक्षक,दोनों,बनना होगा। वे मानते हैं कि बच्चे के पास उसके स्वयं के विकास के लिए सारी क्षमताएं हैं, परंतु शिक्षक की भूमिका बच्चे को उसके सही लक्ष्य के लिए विकसित करना है। कृष्णमूर्ति की शिक्षण की पद्धति, विद्यालय संगठन तथा एक शिक्षक की भूमिका पर अवधारणा, वास्तव में, प्रकृति में प्रगतिवादी थी। उन्होंने शिक्षा के लिए एकीकरण पद्धति के माध्यम से एक एकीकृत व्यक्तित्व के विकास पर बल दिया था जिसकी सभी शिक्षाविदों तथा विचारको द्वारा अत्यधिक प्रशंसा की गई।

**अपनी प्रगति जाँचें 7.4**

**टिप्पणी :** क) अपना उत्तर नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

10. कृष्णमूर्ति द्वारा सुझाई गई शिक्षा की अवधारणा की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

11. कृष्णमूर्ति के अनुसार एक सच्चा शिक्षक कौन है?

.....

.....

.....

## 7.7 श्री अरबिंदो घोष (1872–1950)

अरबिंदो घोष शिक्षा के क्षेत्र में आदर्शवादी दर्शन के विख्यात शैक्षणिक विचारकों में से एक थे। श्री अरबिंदो द्वारा एकीकरण शिक्षा का सिद्धांत तथा एकीकरण विद्यालय की कार्यप्रणाली जनसमूह के मध्य बहुत प्रसिद्ध है। यह भाग आपको शैक्षिक दर्शन तथा शिक्षा के अन्य शिक्षा–विज्ञान पक्षों के विषय में सिखाएगा, जैसा कि श्री अरबिंदो द्वारा सुझाया गया है।

*श्री अरबिंदो घोष*
*(1872–1950)*

### 7.7.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

**जीवन परिचय**

श्री अरबिंदो घोष का जन्म कलकत्ता में 15 अगस्त 1872 को हुआ। 1893 में अंग्रेजी के

प्राध्यापक के रूप में गुजरात में बड़ौदा महाविद्यालय में नियुक्त हुए। उनके शिक्षा के विचार तथा सिद्धांत भारतीयों की आवश्यकताओं के अनुरूप थे।उन्होंने एक अंतर्राष्ट्रीय आश्रम तथा अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा एवं सामाजिक गतिविधि केंद्र का आरंभ किया। ऑरोविल 'मानव एकता का एक नगर', भारत के पांडिचेरी में उनका प्रयोग था।

### जीवन दर्शन

यह एकीकरण सिद्धांत है जो अरबिंदो के दार्शनिक तथा शैक्षणिक विचारों के आधार का निर्माण करता है। उनका शैक्षणिक दर्शन,दर्शनशास्त्र के आदर्शवादी विचारधारा के विचारों पर आधारित है। उनका मानना था कि वास्तविकता सत्य है तथा एक व्यक्ति तथा इसके कार्यों का समग्र एकीकरण है। अरबिंदो का शैक्षणिक सिद्धांत उनके मस्तिष्क के सिद्धांत पर केंद्रित है। वह मानते थे कि शिक्षा का सच्चा अभिप्राय मानव मस्तिष्क का अध्ययन है। अरबिंदो के मस्तिष्क के सिद्धांत का उनके उत्कृष्ट मस्तिष्क के अस्तित्व के विश्वास में समापन होता है। उनके अनुसार, उत्कृष्ट मस्तिष्क, चैतन्य की उच्चतर श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है। अरविंदो का दर्शन भारतीय मत का पुष्टिकरण है जो प्रकृति में आध्यात्मिक तथा तर्कसंगत है। उनके दर्शन का उद्देश्य अंतिम वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करना है।

## 7.7.2 शैक्षिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

### अरबिंदो के शिक्षा पर विचार

श्री अरबिंदो के अनुसार, सच्ची शिक्षा न केवल आध्यात्मिक है परंतु तर्कसंगत, प्राणाधार तथा शारीरिक भी है। अन्य शब्दों में, यह एकीकृत शिक्षा है जिसमें शिक्षा के मान की व्यवहारिक गतिविधियों से संबंधित पांच प्रमुख पक्ष होने चाहिए–शारीरिक, प्राणाधार, मानसिक, अलौकिक तथा आध्यात्मिक। इस प्रकार की शिक्षा संपूर्ण तथा एक दूसरे के लिए मानार्थ तथा आजीवन बनी रहती है।

अरबिंदो की शिक्षा की योजना दो अर्थ से एकीकृत है:

- **सबसे पहले,** यह मानव के सभी पांचों पक्षों में अंतर्निविष्ट है।
- **दूसरा,** शिक्षा केवल व्यक्ति के उद्भव के लिए नहीं है, परंतु राष्ट्र तथा मानवता की उन्नति के लिए भी है।

शिक्षा का अंतिम लक्ष्य संपूर्ण मानवता का उद्भव है। इस उद्भव में, विकास का सिद्धांत है "विभिन्नता में एकता"। यह एकता, बाद में, विभिन्नता के उद्भव का निर्वाह तथा सहायता करती है। शिक्षा का अंतिम उद्देश्य है मानव निर्माण।

### शिक्षा के उद्देश्य

श्री अरबिंदो के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मा जो विकसित हो रही है, को जो उत्कृष्ट है, प्रकट करने तथा एक महान कार्य के लिए उत्तम बनाने में सहायता करती है। शिक्षा को उसे उसकी अंतरात्मा, जो की सार्वभौमिक चैतन्य का एक भाग है, का अनुभव करने में सक्षम बनाना चाहिए। उनके अनुसार, इंद्रियां पूरी तरह से प्रशिक्षित की जा सकती हैं जब मानस, चित्त तथा शिरा शुद्ध हो। शिक्षा का अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य चैतन्य को विकसित करना है। उनके अनुसार, शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित चार स्तरों के होने चाहिए–

1. चित्त
2. मानस
3. बुद्धिमत्ता
4. ज्ञान

एक शिक्षक को इन सभी चार स्तरों को सामंजस्य के साथ विकसित करना चाहिए। यह अंतःकरण के विकास को प्रोत्साहित करेगा। उनके अनुसार, 'एक एकीकृत मानव व्यक्तित्व के विकास के लिए उत्कृष्ट मस्तिष्क का प्रयोग शिक्षा का सच्चा उद्देश्य होना चाहिए'।

### 7.7.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा–विज्ञान, शिक्षक तथा विद्यार्थी

श्री अरबिंदो के अनुसार, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों को उनकी शैक्षणिक के साथ–साथ सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षित करना चाहिए। विद्यालय समाज का एक अद्भुत भाग है। शिक्षा अलग होकर कुछ नहीं प्रदान कर सकती। विद्यालय को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों जैसे सहयोग, परामर्श तथा व्याख्यानों को एकएकीकृत ढंग से विकसित करना चाहिए। विद्यालय को अधिगमकर्ता के एकीकृत विकास के लिए अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है। इसीलिए उद्देश्य, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण की पद्धतियों को एकीकरण शिक्षा की अवधारणा का ओज होना चाहिए।

#### पाठ्यक्रम की धारणा

उनके अनुसार, पाठ्यक्रम को एक सीमित पाठ्य विवरण तथा कुछ पाठ्य पुस्तकों तक सीमित होना चाहिए। इसमें वे सभी विषय शामिल होने चाहिए जो अधिगमकर्ता के मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देते हैं। शिक्षा लक्ष्य के लिए एक साधन है, बल्कि स्वयं में एक लक्ष्य नहीं है। इसमें व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उचित लचीलापन होना चाहिए। पाठ्यक्रम के विषय अधिगमकर्ताओं को प्रोत्साहित करने में सक्षम होने चाहिए। पाठ्यक्रम में जीवन की रचनात्मकता तथा सृजनात्मक गतिविधियां शामिल होनी चाहिए तथा रुचिपूर्ण होना चाहिए। उन्होंने पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषयों को निर्धारित किया है:

- **प्राथमिक स्तर**– मातृभाषा, अंग्रेजी, राष्ट्रीय इतिहास, कला, चित्रकला, सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन तथा अंकगणित।
- **माध्यमिक स्तर**– मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रांसीसी भाषा, अंकगणित, कला, रसायन शास्त्र, भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, शरीर विज्ञान तथा स्वास्थ्य शिक्षा।
- **विश्वविद्यालय स्तर**– भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन, सभ्यता का इतिहास, अंग्रेजी साहित्य, फ्रांसीसी भाषा, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, विज्ञान का इतिहास, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, वनस्पति विज्ञान, अंतरराष्ट्रीय संबंध तथा एकीकरण।
- **व्यवसायिक शिक्षा**– कला, चित्रकारी, फोटोग्राफी, सिलाई, मूर्ति कला, चित्रकला, टंकण, आशुलिपि, कुटीर उद्योग, बढई गिरी, परिचर्या, यांत्रिकी तथा विद्युत अभियांत्रिकी, भारतीय तथा यूरोपीय संगीत, तथा नाटकीय रूपांतर।

#### शिक्षा–विज्ञान

निम्नलिखित शिक्षण विधियों/शिक्षा विज्ञान को समझाया गया है:

- बच्चे के लिए प्रेम तथा संवेदना
- शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से
- शिक्षा बच्चे की रुचियों के अनुसार
- शिक्षा आत्म–अनुभव के आधार पर
- करके सीखने पर बल

- शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक तथा विद्यार्थियों के सहयोग के माध्यम से शिक्षा
- उसके स्वयं के प्रयासों के माध्यम से अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए बच्चों के लिए मुक्त वातावरण

### शिक्षक तथा विद्यार्थी

उनका मानना था कि कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता, परंतु सब कुछ सीखा जा सकता है। अध्यापक एक सहायक/सुविधा प्रदान करने वाला तथा मार्गदर्शक है,परंतु एक अनुदेशक या कार्य गुरु नहीं है। एक शिक्षक को ज्ञान प्रदान नहीं करना चाहिए परंतु ज्ञान प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शनकरनाचाहिए जो पहले से ही एक अधिगमकर्ता के अंदर है। बच्चे को, उसमें स्थित दिव्यता की उपेक्षा कर तथा समाप्त करके बड़ों की इच्छा के अनुसार किसी सांचे में आकार देना गलत है। शिक्षा बच्चे की प्रकृति के अनुसार होनी चाहिए।

**अपनी प्रगति जाँचें 7.5**

**नोट** : क) अपना उत्तर नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

12. एकीकरण शिक्षा के अनुसार मानव की पांच मुख्य गतिविधियों के नाम बताएं?

.....

.....

.....

13. . अरबिंदो की एकीकरण शिक्षा के अनुसार पाठ्यक्रम के सिद्धांत की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

## 7.8 गिजुभाई बधेका (1885–1939)

गिजुभाई बधेका विख्यात शिक्षाविदों में से एक है जो विद्यालय–शिक्षा के बाल–केंद्रीयता पर केंद्रित है। उन के शैक्षिक विचार देश के वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य के लिए काफी प्रासंगिक है। उनके शैक्षणिक विचार शिक्षण तथा अधिगम में रचनावादी दृष्टिकोण के प्रयोग को प्रतिबिंबित करते है।

*गिजुभाई बधेका (1885–1939)*

### 7.8.1 संक्षिप्त जीवन परिचय तथा जीवन दर्शन

#### जीवन परिचय

गिजुभाई बधेका एक विख्यात देशभक्त, एक निष्ठावान शिक्षक तथा शिक्षा के एक प्रेरणादायक स्तंभ थे। उनका जन्म 15 नवंबर 1885 को गुजरात में हुआ था। उन्होंने अपने शैक्षणिक विचारों में बच्चे को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया था। गिजूभाई ने बाल–केंद्रित शिक्षा का

समर्थन किया था। शायद भारत में वे पहले शिक्षक थे जिन्होंने शिक्षा के पूर्व–प्राथमिक स्तर पर अपना ध्यान केंद्रित किया था।

## 7.8.2 शैक्षणिक दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

### शैक्षणिक दर्शन

उनके बाल–केंद्रित शिक्षा के सिद्धांतों ने, जैसे स्वतंत्रता, सम्मान, आध्यात्मिक विकास, रचनात्मकता, नागरिकता के अच्छे गुणों के विकास में आत्मनिर्भरता के माध्यम से स्व अध्ययन की विधि, स्व–अनुशासन, स्व–अभिव्यक्ति, इंद्रिय प्रशिक्षण तथा प्रकृति अध्ययन पर बल दिया था। गिजुभाई ने बच्चों के लिए एक ऐसे विद्यालय का सपना देखा जो उनके मस्तिष्क में भय न भर सके तथा एक स्थान हो जहां वो खुशी से तथा स्वेच्छा से जाए।

उनका सपना उनके 'बाल मंदिर' में वास्तविकता में बदल गया था, एक विद्यालय जो उनके द्वारा गुजरात के भावनगर में 1920 में ढाई वर्ष से 6 वर्ष की आयु के बीच के बच्चों के लिए स्थापित किया गया। इस बाल मंदिर में, उन्होंने बच्चों को खेलने, गाने, कविता पाठ, कहानी सुनाने, बागवानी, प्रकृति अध्ययन के लिए स्वतंत्र अवसर प्रदान किए तथा शिक्षण–अधिगम गतिविधियों के लिए क्रीड़ा–पद्धति का प्रयोग किया गया था। इस प्रकार, बाल मंदिर ने, सही मायने में, एक स्वस्थ तथा आनंदित वातावरण प्रदान किया ताकि बच्चे विद्यालय में उनके रहने के दौरान पूरी खुशी का लाभ उठाएं।

### शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य सुझाए गए थेः

- एक भयमुक्त वातावरण में शिक्षा प्रदान करना जहां बच्चे उनकी गतिविधियों के प्रदर्शन के लिए स्वतंत्र महसूस करें।
- बच्चों के साथ सहानुभूति से व्यवहार करना।
- बच्चे के व्यक्तित्व तथा पूर्णता का विकास।
- शिक्षा पर इंद्रिय प्रशिक्षण, क्रियात्मक–कुशलता तथा स्व–अधिगम।
- 'जीवन के माध्यम से अधिगम के लिए शिक्षा' के वातावरण का विकास।

## 7.8.3 पाठ्यक्रम, शिक्षा–विज्ञान, अध्यापक तथा विद्यार्थी

### पाठ्यक्रम तथा शिक्षा–विज्ञान

गिजूभाई ने कई लाभदायक अधिगम गतिविधियों जैसे कहानी सुनाना, नाटक, खेल तथा कागज मोड़ना का उद्धरण दिया है जो पूर्व–प्राथमिक तथा प्राथमिक स्तर पर शिक्षण–अधिगम के कई उद्देश्यों के लिए सहायता करती है तथा इसे बच्चों के लिए प्रासंगिक बनाती है। बच्चे मात्र पाठ्य पुस्तकों या शिक्षकों पर जानकारी के एकमात्र स्रोत के रूप में निर्भर नहीं रहते। इस प्रकार उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में जैसेः इतिहास, भाषा या परीक्षा के लिए तैयारी या विद्यालय के कार्यक्रम बच्चों के लिए अर्थपूर्ण शिक्षा का समर्थन किया था, उनका वैकल्पिक पद्धतियों/संरचनाओं में दृढ़ विश्वास था वे बच्चों के साथ प्रयोग करने की इच्छा रखते थे तथा संभव परिवर्तन लाना चाहते थे। गिजूभाई ने इसे यह कहकर संभव बनाया कि'प्रयोग' परिवर्तन लाने की कुंजी है। उनके द्वारा एक बहुत नया प्रयोग दिन को गतिविधियों,खेलों तथा कहानियों में विभाजित करना था तथा पूर्व निर्धारित समय सारणी के सख्त प्रभाव को नहीं मानना था।

### अध्यापक तथा विद्यार्थी

गिजूभाई मानते थे कि शिक्षक को अंतर्निहित अवधारणा को समझना चाहिए तथा फिर बच्चों की रुचि पूर्ण गतिविधियों के माध्यम से पहचानने में सहायता करनी चाहिए दूसरा वह बच्चों के साथ उनके दिनों को सुनियोजित करने के लिए अपने स्वयं के सहज ज्ञान का प्रयोग करते थे। अच्छी और लाभदायक शिक्षण–अधिगम कार्य–प्रणाली की कई अन्य विशेषताएं उनके कार्यों में पाई जाती हैं। गिजुभाई बच्चों से अत्यंत प्रेम करते थे। उनका दर्शन उनके द्वारा किए गए निम्नलिखित अवलोकन ऊपर आधारित था। आगे गिजूभाई ने कहा, "एक बच्चा एक संपूर्ण व्यक्ति है जिसके पास बुद्धि, भावनाएं, मस्तिष्क तथा समझ है, शक्तियां तथा कमजोरियां है, तथा रुचियां एवं अरुचियां हैं। वे शिक्षक के सिद्धांत को एक मित्र, दार्शनिक तथा निर्देशक के रूप में मानते थे।

**अपनी प्रगति जाँचें 7.6**

**टिप्पणी** : क) अपना उत्तर नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

14. बाल केंद्रित शिक्षा की अवधारणा की व्याख्या करें जैसा गिजूभाई द्वारा ध्यान केंद्रित किया गया है।

.....

.....

.....

15. गिजूभाई द्वारा सुझाई गई शिक्षण गतिविधियों के नाम लिखें।

.....

.....

.....

## 7.9 सारांश

यह इकाई पिछली इकाई के क्रम में है जिसमें शिक्षा की अवधारणा तथा शिक्षा के विभिन्न पक्षों जैसे शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षा की विधियां तथा शिक्षकों एवं अधिगमकर्ता की भूमिका का वर्णन किया गया है। इस इकाई में,आपने शैक्षणिक सिद्धांत तथा कुछ भारतीय दार्शनिकों के विचारों का अध्ययन किया है। स्वामी विवेकानंद ने, उनके शैक्षणिक विचारों में, **'शिक्षा मानव में पहले से ही उपस्थित दिव्य उत्कृष्टता की अभिव्यक्ति है'** पर बल दिया था। उन्होंने बल दिया कि प्रत्येक तथा हर एक मनुष्य के पास ज्ञान प्राप्त करने के लिए काफी दिव्य शक्ति है तथा यह शिक्षा है जो इस ज्ञान को प्रकट करने में उनकी सहायता करती है। जबकि गांधीजी के शैक्षणिक विचारों ने, व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर बल दिया, जिसमें बच्चे की शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, नैतिक तथा मूल्य शिक्षा का विकास शामिल है। वहीं टैगोर ने मानव के दोनों पक्षों यथा प्रकृतिवाद के साथ–साथ आदर्शवादी पक्षों पर बल दिया तथा ये दोनों पक्ष शिक्षा की प्रणाली पर प्रभाव पूर्ण कार्य करते हैं। अरबिंदो घोष ने शिक्षा की एकीकरण प्रणाली के महत्व को विशिष्ट रूप से दर्शाया जिसमें उन्होंने शिक्षा के पांच पक्षों के महत्व पर बल दिया था। जिद्दू कृष्णमूर्ति तथा गिजुभाई बधेका ने उनके प्रायोगिक विद्यालयों में तथा शिक्षा की बाल केंद्रीयता को विशिष्ट रूप से दर्शाया था।

## 7.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सूची

अग्रवाल एस. (2007). फिलोसॉफिकल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, ऑथर प्रेस, नई दिल्ली।

एल्टेकर (1975). एजुकेशन इन एनशियन्ट इंडिया (7वां सं.). वाराणसीः मनोहर प्रकाशन।

बधेका, गिजूभाई. (1950). दिवास्वप्न एन एजुकेटर्स रेवरी अनुवादित चितरंजन पाठक. एनबीटी नई दिल्ली।

ब्रूबैशन जे. एस. (1969). मॉडर्न फिलोसॉफिज ऑफ एजुकेशन. न्यूयॉर्कः मैकग्रा हिल को. इंक.

चौबे एस. पी. (1988) इंडियन एंड वेस्टर्न एजुकेशन फिलॉस्फर्स, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

धवन, एम. एल. (2005). फिलोसोफी ऑफ एजुकेशन दिल्ली, संपादक, ईशा बुक्स।

इग्नू (2014). शिक्षा के विचारकः भारतीय (इकाई–3), खंड–2, एमईएस–051 'शिक्षाः दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण'. एम. एड.; इग्नू।

जोशी एस. (2006). ग्रेट इंडियन एजुकेशनल थिंकर्स, ऑथर्स प्रेस, नई दिल्ली।

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन. 'आधिकारिक' कृष्णमूर्ति साइट. कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1974) ऑन एजुकेशन, पांडिचेरी, भारतः अखिल भारतीय प्रकाशन।

कृष्णमूर्ति, जे.(1953). एजुकेशन एंड द सिग्निफिकेंस ऑफ लाइफ, लंदनः विक्टर गोलान्क्ज लिमि.

कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1956). 5वां पब्लिक टॉक, 18 मार्च, बॉम्बे।

कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1962). 2 पब्लिक टॉक, 7 जून, लंदन।

कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1964). दिस मैटर ऑफ कल्चर, लंदनः विक्टर गोलान्क्ज।

कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1975). डायलॉग ऑन एजुकेशन, ओजाई।

मिश्रा, पी. के एंड डैश, पी. सी. (2010). इंट्रोडक्शन टू फिलोसॉफिकल एंड सोशियोलॉजिकल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, मंगलम पब्लिकेशंस दिल्ली, पांडे।

नैयर, पी. आर., डेव, पी. एन., एंड अरोड़ा, के. (1982). टीचर एंड एजुकेशन इन इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी, नई दिल्ली।

पचौरी, जी. (2010). ग्रेट एजुकेशनिस्ट. मेरठः आर. लाल बुक डिपो।

पांडे, आर. एस.,(1997). ईस्ट–वेस्ट थॉट्स ऑन एजुकेशन, होराइजन पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद।

पांडे, ममता. (2008). गिजूभाई ऑन एजुकेशन।

पानी, आर. एस. (1987). इंटीग्रल एजुकेशन, थॉट एंड प्रैक्टिस. नई दिल्ली. आशीष पब्लिशिंग हाउस।

पानी, एस. पी एंड पटनायक, एस. के. (2006). विवेकानंद, अरबिंदो एंड गांधी ऑन एजुकेशन, नई दिल्लीः अनमोल पब्लिकेशन प्रा.लिमि.

आर. एस. (1997). ईस्ट–वेस्ट थॉट्स ऑन एजुकेशन, होराइजन पब्लिकेशंस, इलाहाबाद।

शेहसाद, ए. (2006). एजुकेशनल थिंकर्स ऑफ इंडिया, अनमोल पब्लिकेशंस प्रा. लिमि. नई दिल्ली।

## 7.11 प्रगति की जांच हेतु उत्तर

1. विवेकानंद ने ज्ञान पर बल दिया जो पहले से ही मानव बालक के साथ है तथा जो एक दिव्य शक्ति है। बच्चे को उचित शिक्षा तथा उस दिव्य शक्ति के प्रदर्शन के लिए अनावरण मिलना चाहिए।

2. भौतिक (सांसारिक) तथा आध्यात्मिक (अमूर्त) पाठ्यक्रम।

3. योग तथा ध्यान, अंतर्ज्ञान, व्याख्यान तथा चर्चा, स्व–अभ्यास, रचनात्मक गतिविधियां इत्यादि।

4. स्व–अभ्यास।

5. शिक्षा का अंतिम उद्देश्य, अंतिम वास्तविकता, ईश्वर तथा सत्य के ज्ञान की अनुभूति है।

6. स्थानीय आवश्यकता तथा शर्तों के अनुरूप एक आधारभूत कौशल, मातृभाषा; अंकगणित; सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान जिसमें प्रकृति अध्ययन, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान, शारीरिक विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, रसायन शास्त्र तथा भौतिक संस्कृति शामिल; कला कार्य; संगीत तथा लड़कियों के लिए गृह विज्ञान।

7. आदर्शवाद तथा प्रकृतिवाद।

8. यात्रा तथा भ्रमण माध्यम से शिक्षण, गतिविधियों द्वारा अधिगम, कथन सह चर्चा तथा वाद विवाद तथा स्वानुभविक विधि।

9. एक विद्यालय मानव निवास से दूर खुले आकाश के नीचे स्थित होना चाहिए तथा खेतों, पेड़ों तथा पौधों से घिरा हुआ होना चाहिए।

10. कृष्णमूर्ति के अनुसार, शिक्षा संपूर्ण जीवन ना की एक भाग, के लिए तैयारी के विषय में है।

11. एक सच्चा शिक्षक मात्र जानकारी का एक स्रोत नहीं है, परंतु यह वह व्यक्ति है जो बुद्धिमत्ता तथा सत्य की ओर मार्ग दर्शाता है।

12. शारीरिक, प्राणाधार, मानसिक, अलौकिक तथा आध्यात्मिक।

13. अरबिंदो के अनुसार, पाठ्यक्रम एक सीमित पाठ्यविवरण तथा कुछ पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं है; इसमें वे सभीविषय शामिल होने चाहिए जो मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देते हैं।

14. बच्चे के लिए स्वतंत्रता, बच्चे के लिए आध्यात्मिक विकास, बच्चे की रचनात्मकता तथा बच्चे के नागरिकता के अच्छे गुणों का विकास।

15. कहानी सुनाना, नाटक, खेल, कागज मोड़ना इत्यादि।

# इकाई 8 पाश्चात्य दार्शनशास्त्रियों के योगदान

**संरचना**


8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 प्लेटो (427 ई. पू. – 347 ई. पू.)

- 8.3.1 शिक्षा की अवधारणा एवं लक्ष्य
- 8.3.2 शिक्षा की प्रक्रिया
- 8.3.3 पाठ्यचर्या
- 8.3.4 शिक्षण विधियाँ
- 8.3.5 आलोचना

8.4 जिन जैक्स रूसो (1712–1778)

- 8.4.1 शिक्षा की अवधारणा एवं लक्ष्य
- 8.4.2 पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियाँ
- 8.4.3 शिक्षक की भूमिका
- 8.4.4 रूसो का शिक्षा में योगदान
- 8.4.5 नकारात्मक शिक्षा
- 8.4.6 स्त्री शिक्षा

8.5 जॉन डीवी (1859–1952)

- 8.5.1 शिक्षा की अवधारणा एवं लक्ष्य
- 8.5.2 शिक्षा की प्रक्रिया
- 8.5.3 पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ, शिक्षक की भूमिका एवं अनुशासन

8.6 इमैन्यूएल कान्ट (1724–1804)

- 8.6.1 शिक्षा की अवधारणा एवं लक्ष्य
- 8.6.2 शिक्षा की प्रक्रिया
- 8.6.3 अनुशासन
- 8.6.4 शिक्षण विधियाँ
- 8.6.5 शिक्षा की प्रकृति एवं विद्यालय

8.7 सारांश

8.8 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सूची

8.9 प्रगति जाँच हेतु उत्तर


## 8.1 प्रस्तावना

हम इस इकाई में षिक्षा की अवधारणा, लक्ष्यों तथा प्रक्रियाओं पर कुछ पाश्चात्य दार्शनिकों के योगदान के विषय में विस्तृत अध्ययन करने जा रहे हैं। ये दार्शनिक प्लेटो (Plato), जे. जे. रूसो (J.J. Rousseau), जॉन डीवी (John Dewey) तथा इमैन्यूएल कान्ट (Immanuel Kant) हैं। इन इन दार्शनिकों के विचार एवं चिंतन सार्वभौमिक प्रकृति के हैं तथा शिक्षा


*प्रो. नीरजा धनकर, शिक्षापीठ, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़।*

के क्षेत्र में सभी हितधारकों अर्थात् विद्यार्थी, शिक्षक तथा समाज के लिए उपयुक्त हैं। इनके विचार एवं चिंतन इनके समय से लेकर आज तक शिक्षा व्यवस्था हेतु प्रासंगिक एवं उपयुक्त हैं। इनके विचारों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है विशेषकर जब वर्तमान शिक्षा व्यवस्था एवं समाज शिक्षा में विभिन्न समस्याओं एवं वर्तमान समय की चुनौतियों से भरा हो।

## 8.2 उद्देश्य

- पाश्चात्य दार्शनिकों जैसे प्लेटो, रूसो, डीवी तथा इमैन्यूएल कान्ट के शैक्षिक विचारों की व्याख्या कर सकेंगे;
- इन दार्शनिकों द्वारा प्रदत्त शिक्षा की प्रक्रियाओं का वर्णन एवं इनके मध्य अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे;
- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में उनके विचारों की प्रासंगिकता परचिंतन कर सकेंगे; और
- शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में उनके विचारों का क्रियान्वयन कर सकेंगे।

## 8.3 प्लेटो (427 ई. पू.–347 ई. पू.)

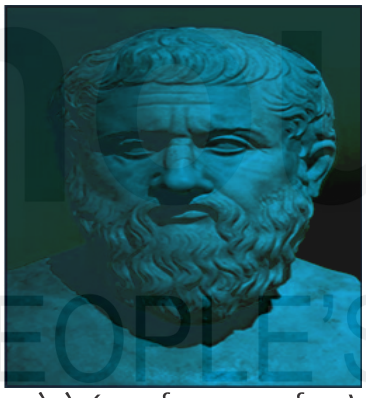

*प्लेटो (427 ई.पू.– 347 ई. पू.)*

प्लेटो एक महान दार्शनिक, विद्वान, शिक्षाविद, राजनीतिज्ञ, तथा विचारक थे। वे आदर्शवादी विचारधारा का प्रतिपादक थे। आदर्शवादी दार्षनिक विचारधारा के अनुसार मन तथा स्व परम सत्य या वास्तविकता है तथा ब्रह्मांड की रचना मन का चिंतन है। अन्य शब्दों में उनका मानना था कि मानव मन जीवन में सर्वोच्च तत्व है तथा ब्रह्मांड अपने मलू स्वरूप या प्रकृति में पदार्थ द्वारा संघटित नहीं है। उदाहरणार्थ कलम/पैंसिल जिसका उपयोग आप लिखने हेतु करते हैं यह पदार्थ नहीं है, यह केवल पदार्थ प्रतीत होता है। इसका आवश्यक स्वरूप मन का चिंतन है अर्थात् एक कलम या पैंसिल का उपयोग लिखने के लिए होता है। उन्होंने शिक्षाशास्त्र पर कई पुस्तके लिखीं एवं उनमें दो महत्वपूर्ण हैं – "दि रिपब्लिक" (The Republic) एवं "दि लाज" (The Laws)।

### 8.3.1 शिक्षा की अवधारणा एवं लक्ष्य

प्लेटो के शिक्षा पर विचार बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनका मानना था कि किसी राष्ट्र की प्रगति उसके युवाओं पर निर्भर होती है। उत्तम शिक्षा उत्तम चरित्र के साथ कौशल युक्त नागरिकों के निर्माण में सक्षम होती है। शिक्षा से उनका अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जिसके द्वारा अच्छी आदतों के माध्यम से नैतिक विकास होता है।

प्लेटो के अपने विचारों को प्रयोजन हेतु स्थापित एक विद्यालय में परीक्षण किया गया। इस विद्यालय का नाम **(Academy)** था। उन्होंने शिक्षा के परीक्षित एवं स्थापित सिद्धान्तों में विश्वास किया। उन्होंने इस में शिक्षण विषयों के रूप में दर्शनशास्त्र, संगीत, गणित, राजनीति विज्ञान तथा मनोविज्ञान को सम्मिलित किया।

प्लेटो का दर्शन आदर्शवादी (Idealistic) है। उनका मानना था कि वास्तविक विश्व केवल विचारों का संसार है। केवल विचार ही सत्य हैं। भौतिक विष्व विचारों पर आधारित है। केवल ब्रह्म या ईश्वर सत्य तथा पूर्ण है तथा जगत मिथ्या या कल्पना है तथा अन्य सभी वस्तुएँ अपूर्ण हैं। विचार सर्वकालिक, संपूर्ण, अपरिवर्तनशील तथा अनन्त होते हैं। प्लेटो

के आदर्शवादी चिन्तन के अनुसार दो प्रकार के विश्व (क) आध्यात्मिक विश्व, (ख) भौतिक विश्व हैं जिसका इन्द्रियों या चेतन द्वारा अनुभव किया जाता है। भौतिक विश्व अस्थायी या भंगुर है तथा केवल इन्द्रियों तथा विचारों द्वारा इसका स्वरूप प्रदान किया जाता है। चेतन जगत नश्वर है तथा समय एवं स्थान के अनुरूप अस्तित्व में रहता है। उनके अनुसार ज्ञान एवं नैतिकता दोनों की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। शिक्षा सत्य, ईश्वर तथा सौन्दर्य अर्थात् "सत्यम, शिवम् तथा सुन्दरम्" की प्राप्ति का एक उपकरण है।

उन्होंने शिक्षा के निम्नलिखित लक्ष्यों को सुझायाः

- **स्व–अनुभूति :** शिक्षकों का यह कर्त्तव्य है कि शिक्षा की प्रक्रिया द्वारा वे विद्यार्थियों में ऐसी योग्यताओं का विकास करें जिससे विद्यार्थी सत्य या ईश्वर की स्व–अनुभूति के लिए सक्षम हो जाएँ।
- **सत्य, सौन्दर्य एवंभद्रता का विकास :** प्लेटो द्वारा प्रदत्त शिक्षा का अन्य अत्यंत महत्वपूर्ण लक्ष्य सत्य, सौन्दर्य तथा ईश्वर में विश्वास उत्पन्न करना है। शिक्षा के आरंभिक स्तर पर इस प्रकार का परिवेश प्रदान करना चाहिए जिससे कि विद्यार्थी प्रेम करना एवं ब्रह्मांड में सौन्दर्य को अपनाना सीखें जिसका बाद के चरणों अथवा कालों में ईश्वर में प्रेम विकसित करना होना चाहिए।
- **आध्यात्मिक मूल्यों का विकास :** उन्होंने विद्यार्थियों में मानसिक तथा नैतिक चरित्र के साथ आध्यात्मिक चरित्र के विकास की आवश्यकता पर बल दिया।
- **व्यक्तित्व का विकास :** शिक्षा द्वारा ही विद्यार्थियों के स्वीकृत व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है। अच्छी आदतों एव चरित्र का विकास भी व्यक्तित्व विकास का अंग है।
- **उत्तमनागरिकों के गुणों का विकास :** शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में ऐसे गुणों को विकसित किया जाना चाहिए ताकि वे सामाजिक रूप से समायोजित एवं उपयोग नागरिक बन सकें। उन्हें प्राप्त भूमिकाओं के अनुरूप समाज में अपने दायित्वों के निर्वाहन में सक्षम होना चाहिए। उनको अपने नागरिकों के साथ सौहार्दपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए।
- **मानव जीवन में संघर्ष प्रबन्धन तथा साम्यता की स्थापना :** शिक्षा का लक्ष्य पूर्ण संतुष्टि के साथ जीवनयापन में संघर्षों की पहचान एवं प्रबंधन तथा साम्यता की स्थापना हेतु विद्यार्थियों को तैयार किया जाना चाहिए। एक षिक्षित व्यक्ति को संघर्षपूर्ण एवं विपरीत परिस्थितियों में भी कार्य करने हेतु सक्षम होना चाहिए।
- **राज्य हेतुइसमें एकता का निर्माण :** प्लेटो के अनुसार शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य राज्य का विकास करना है। अतः व्यक्तियों को अपने व्यक्तिगत हितों के त्याग हेतु तत्पर रहना चाहिए। राज्य की एकता सर्वोच्च है। राष्ट्रीय एकता की भावना एवं मूल्यों को षिक्षा द्वारा बच्चों में विकसित किया जाना चाहिए।

### 8.3.2 शिक्षा की प्रक्रिया

प्लेटो के अनुसार बुद्धि प्रकृति प्रदत्त होतीहै। अतः बुद्धि के आधार पर व्यक्तियों को दार्शनिक या विद्वान, सैनिक या यौद्धा में विभाजित किया जा सकता है जो हिम्मती एवं बलवान हैं उनको युद्धक प्रशिक्षण दिया जा सकता है तथा अन्य नए श्रमिक जो उत्पादन करते हैं तथा कठिन शारीरिक श्रम करते हैं। प्लेटो ने लोगों को तीन प्रकारों अर्थात् स्वर्ण, चाँदी तथा ताम्र पदार्थों में वर्गीकृत किया है। उनका मानना था कि शिक्षण वह प्रक्रिया है जिससे व्यक्तियों की प्रकृति में सुधार किया जा सकता है।

### 8.3.3 पाठ्यचर्या

प्लेटो ने शिक्षा के विभिन्न स्तरों हेतु विभिन्न प्रकार के पाठ्यचर्या को सुझाया है जो निम्नलिखित हैं:

**क) पूर्व प्राथमिक शिक्षा (जन्म से 6 वर्षों तक)**

शिक्षा के इस काल को प्लेटो ने निम्नलिखित दो भागों में विभक्त किया गया है:

i) **शैशवावस्था (Infancy) (जन्म से 3 वर्षों तक)** : इस कालखण्ड में बालक के समुचित पालन पोषण एवं स्वास्थ्य पर बल देना चाहिए। बच्चों को संतुलित आहार एवं सुखद परिवेश प्रदान करना चाहिए ताकि वह एक प्रसन्न एवं स्वस्थ नागरिक के रूप में वृद्धि कर सके।

ii) **नर्सरी (Nursery) (4 से 6 वर्षों तक):** इस काल में बच्चे की कल्पना शक्ति को शिक्षा द्वारा विकसित किया जाना चाहिए। नैतिक मूल्यों के साथ अच्छी आदतों एवं चरित्र के विकास हेतु बच्चों को पौराणिक कथाएँ सुनाई जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त स्वस्थ शरीर एवं मस्तिष्क के विकास पर बल देना चाहिए। सत्य, ईश्वर एवं सौन्दर्य के मूल्यों का विकास इस स्तर से आरंभ होना चाहिए। चूँकि घर इस स्तर पर बच्चों के लिए मुख्य शैक्षिक स्थान या विद्यालय होता है। अतः माता एक महत्वपूर्ण शिक्षक होती है।

**ख) प्राथमिक शिक्षा (7 से 16 वर्षों तक)**

प्लेटो ने शिक्षा के इस स्तर को भी निम्नलिखित दो भागों में विभक्त किया:

i) **प्राथमिक शिक्षा (7 से 13 वर्षों तक)** : इस स्तर पर बालक और बालिकाओं हेतु शिक्षा की व्यवस्था अलग–अलग होनी चाहिए। खेल, शारीरिक शिक्षा, संगीत, धर्म, नैतिक शिक्षा तथा गणित इस स्तर पर पढ़ाया जाना चाहिए। संगीत, शारीरिक शिक्षा तथा खेल विद्यार्थियों में संतुलित व्यक्तित्व हेतु आवष्यक शारीरिक, बौद्धिक तथा भावात्मक पक्षों के विकास पर केन्द्रित हैं।

ii) **मध्य शिक्षा (13 से 16 वर्षों तक):** इस स्तर के अंतर्गत शिक्षा मध्य शिक्षा से आरंभ होनी चाहिए। गीत, संगीत, कविता तथा गणित भी पढ़ाया जाना चाहिए। इस सतर पर विद्यार्थी सूक्ष्म नियमों एवं कठिन विषयों को समझ सकते हैं। यह उच्च शिक्षा हेतु आधार निर्माण करता है। विद्यार्थियों को राज्य/ राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनाने हेतु नैतिकता, धर्म एवं राष्ट्रभक्ति से पूर्ण साहित्यों की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।

**ग) सैन्य या युद्धक शिक्षा स्तर (16 से 20 वर्षों तक)**

प्लेटो ने शिक्षा के इस स्तर को भी निम्नलिखित दो भागों में विभक्त किया:

i) **16 से 18 वर्षों तक** : इस काल में विद्यार्थियों को उनके शरीर को बलवान तथा स्वस्थ बनाने हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए। इसके लिए खेल, शारीरिक अभ्यास तथा कुश्ती में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ii) **18 से 20 वर्षों तक** : इस काल में विद्यार्थियों को युद्धक प्रशिक्षण किया जाना चाहिए। अश्वारोहण, अस्त्र–शस्त्रों के प्रयोग के कौशल तथा युद्ध की अन्य रणनीतियों को पढ़ाया जाना चाहिए ताकि आवश्यकता के समय राज्य की रक्षा की जा सके। इसके अतिरिक्त प्लेटो ने अनुशंसा की कि युद्धक शिक्षा के साथ सामान्य शिक्षा का परिहार करना चाहिए ताकि विद्यार्थी अपनी शारीरिक प्रषिक्षण पर ध्यान केन्द्रित कर सकें।

### घ) उच्च शिक्षा (20 से 35 वर्षों तक)

प्लेटो ने शिक्षा के इस स्तर को भी निम्नलिखित दो भागों में विभक्त कियाः

i) **उच्च शिक्षा (20 से 30 वर्षों तक)** : उच्च शिक्षा में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा का प्रावधान इनके द्वारा ही अनुशंसित किया गया है। जो प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं उनको उच्च शिक्षा में प्रवेश किया जाना चाहिए तथा जो अनुत्तीर्ण होते हैं उनको लोक सेवाओं में संलग्न किया जाना चाहिए। प्लेटो ने उच्च शिक्षा में गणित एवं विज्ञान के अध्ययन पर बल दिया। इस स्तर पर शिक्षा का लक्ष्य ज्ञानार्जन एवं सौन्दर्य बोध होना चाहिए। प्लेटो का मानना था कि विद्यार्थियों को इस स्तर पर तर्कशास्त्र, अभ्यास एवं विज्ञानों के एकीकरण की योग्यता को विकसित करना चाहिए।

ii) **उच्च शिक्षा (30 से 35 वर्षों तक)** : प्लेटो ने शिक्षा के इस स्तर को प्रशासनिक अधिकारियों हेतु रखा। इस स्तर पर प्रवेष हेतु भी प्रवेश परीक्षा की अनिवार्यता थी। जो प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करते थे उन्हें इस स्तर पर प्रवेश दिया जाता था। जो अनुत्तीर्ण होते थे उनको राज्य में कनिश्ठ प्रशासनिक पदों पर समायोजित किया जाता था। शिक्षा के इस उच्च स्तर पर दर्शनशास्त्र का अध्ययन अनिवार्य था। दर्शनशास्त्र के साथ राजनीति विज्ञान एवं विधि विज्ञान का भी अध्ययन किया जाता था। शिक्षा का यह स्तर राज्य के उच्च पदों हेतु कुशल प्रशासकों को तैयार करना था।

### ड़) व्यावसायिक शिक्षा (35 से 50 वर्षोंतक)

प्लेटो शिक्षा के इस स्तर को व्यावसायिक शिक्षा के रूप में मानते हैं। इस काल में नागरिक प्रशासक तथा शासक के रूप में कार्य करते हैं तथा राज्य के कुशल प्रशासक का दायित्व ग्रहण करते हैं। वे राज्य तथा समाज के नेता होते हैं। पचास वर्ष की आयु के पश्चात् वे नियमित सेवाओं से मुक्ति प्राप्त करते हैं। अब वे आत्मानुभूति हेतु प्रयास में संलग्न होते हैं परन्तु परामर्शक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करना नियमित रखते हैं।

### च) महिला शिक्षा

प्लेटो महिला एवं पुरुष में भेद नहीं करता था। अतः प्लेटो ने महिलाओं के लिए पृथक प्रकार की शिक्षा का परामर्श नहीं दिया। परन्तु वे महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा शारीरिक रूप में निर्बल समझते थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "दि रिपब्लिक" में लिखा है कि महिलाएँ एवं पुरुष दोनों राज्य की रक्षा हेतु सक्षम हैं परन्तु महिलाएँ शारीरिक शक्ति में पुरुषों की अपेक्षा निर्बल होती हैं। केवल मात्रात्मकता का अन्तर है गुणात्मकता का नहीं है। प्लेटो ने महिला एवं पुरुष दोनों के लिए समान शिक्षा की अनुशंसा की। उन्होंने कहा कि महिलाएँ राज्य में किसी भी प्रशासनिक पद हेतु चयनित की जा सकती हैं। महिलाओं को भी औद्योगिक, युद्धक, दार्शनिक तथा उच्च शिक्षा में शिक्षा या प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। उनको संगीत, शारीरिक शिक्षा, राजनीति विज्ञान, हस्तकला आदि भी पढ़ाया जाना चाहिए। उनको केवल घरेलू कार्य तक ही सीमित या प्रतिबंधित नहीं रखा जाना चाहिए।

## 8.3.4 शिक्षण विधियाँ

प्लेटो के अनुसार चूँकि शिक्षा का लाभ ज्ञान की खोज है अतः शिक्षण विधियों को इस उद्देश्य हेतु समुचित होना चाहिए। प्लेटो की शिक्षा योजना में मुख्य विषय बुद्धिजीवियों के मध्य तर्क या वाद–विवाद है। अतः अत्यंत महत्वपूर्ण विधि **तर्क विधि** है।

प्लेटो द्वारा अनुशंसित दूसरी विधि **प्रश्नोत्तर विधि** है। इस विधि को सुकरात ने आरंभ किया। इसमें तीन स्तर हैंः उदाहरण, परिभाषा तथा परिणाम या व्याख्या। उदाहरण विमर्श

से आरंभ होता है तत्पश्चात् सामान्य गुण निर्धारित होते हैं तथा अन्त में परिणाम या व्याख्या की जाती है।

तीसरी विधि **विमर्श विधि** है। यह उच्च शिक्षा में षिक्षण की एक प्रसिद्ध विधि है। उपरोक्त के अतिरिक्त उन्होंने तथा की भी अनुशंसा की।

### 8.3.5 आलोचना

प्लेटो का मानना था कि समाज व्यक्ति से ऊपर है तथा व्यक्तिगत स्वतत्रंता के पक्ष में नहीं है। वे व्यक्तियों के अधिकार एवं कर्त्तव्यों के मध्य साम्य स्थापित नहीं कर सकें। एक तरफ वे शिक्षा द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के विषय में बात करते हैं तथा दूसरी तरफ व्यक्तियों से स्वतंत्रता से लेकर इस राज्य को देते हैं। व्यक्ति को राज्य के लिए सभी कार्य करने होते हैं परन्तु उसे कोई अधिकार नहीं है। प्लेटो ने व्यावसायिक एवं पेशागत शिक्षा का उतना महत्व नहीं दिया। प्लेटो दर्शनशास्त्र का अध्ययन प्रशासकों हेतु आवश्यकता समझते थे परन्तु अच्छे प्रशासन में दर्शनशास्त्र के अध्ययन को किसी प्रकार से सहायता की प्रासंगिकता को देखना वाद–विवाद का एक बिन्दु है। परिवार को बच्चे की शिक्षा में महत्वपूर्ण माना जाता है परन्तु बच्चे की शिक्षा में परिवार के योगदान को प्लेटो मान्यता नहीं देते हैं। चूँकि महिलाओं एवं पुरुषों की प्रकृति एवं आवश्यकताएँ भिन्न हैं अतः महिलाओं हेतु कुछ अलग प्रकार की शिक्षा हो सकती हैं परन्तु वे महिलाओं हेतु भिन्न शिक्षा का उल्लेख नहीं करते हैं।

**गतिविधि 1**

आपने महिला षिक्षा के विषय में प्लेटो के विचारों का अध्ययन किया है, इसके विषय में आपका पक्ष क्या है? अपनी टिप्पणी दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

**अपनी प्रगति जाँचें 8.1**

**टिप्पणी** : क) अपने उत्तर को दिए गए निम्नलिखित स्थान पर लिखिए।

ख) अपने उत्तरों की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

क) प्लेटो ..... का शिष्य था।

ख) प्लेटो के अनुसार ..... का विश्व वास्तविक विश्व है।

ग) प्लेटो ने ..... स्तरों में शिक्षा को विभक्त किया।

घ) प्लेटो के अनुसार सत्यम्, शिवम् तथा सुन्दरम् की महानतम .....है।

ङ) प्लेटो ने ..... नामक एक शैक्षिक संस्था की स्थापना की।

2. प्लेटो द्वारा लिखित दो पुस्तकों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

3. प्लेटो द्वारा दिए गए शिक्षा के किन्ही तीन लक्ष्यों को लिखिए।

.....

.....

.....

4. प्लेटो द्वारा सुझाई गई शिक्षा की किन्ही तीन विधियों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

## 8.4 जिन जैक्स रूसो (1712–1778)

"प्रकृति के रचयिता के हाथों से आने वाली प्रत्येक वस्तु सुन्दर होती है परन्तु प्रत्येक वस्तु मनुष्य के हाथों में विकृत हो जाती है।" रूसो

*जे. जे. रूसो (1712–1778)*

**जिनजैक्स रूसो (Jean Jacques Rousseau)** का जन्म 29 जून 1712 को इटली में हुआ तथा यह प्रकृतिवादी दार्शनिक विचारधारा के एक प्रसिद्ध दार्षनिक हैं। शिक्षा पर उनके विचारों को इनकी पुस्तकों द्वारा स्पष्ट रूप में समझा जा सकता है।

उन्होंने छः प्रसिद्ध पुस्तकों की रचना की है जो निम्नलिखित हैं:

- दि प्रोग्रेस ऑफ आट्र्स एंड साइन्स;
- दि ओरिजन ऑफ इनक्वलिटी एमंग मैन
- डिसकाउज ऑन इनक्वलिटी
- दि न्यू हेलॉइस
- सोशल कान्ट्रेक्ट
- एमिल

उनके विद्यालयी जीवन के अनुभव दुःखद थे क्योंकि षिक्षक बच्चों को शारीरिक दण्ड दिया करते थे जिससे वह शिक्षकों से भयभीत रहते थे। चूँकि विद्यालयी परिवेष बच्चों की वृद्धि हेतु मैत्रीपूर्ण नहीं था अतः उनका मानना था कि विद्यालयी शिक्षा का कोई उपयोग नहीं है।

उनके अनुसार, "केवल प्रकृति ही शुद्ध और स्वच्छ है तथा बच्चों पर श्रेष्ठ प्रभावशाली है। मानव समाज पूर्ण रूप से भ्रष्ट है। इसलिए, व्यक्ति को समाज के बंधनों से मुक्त किया जाना चाहिए एवं "प्रकृति की अवस्था" में रहना चाहिए। मानव स्वभाव आवश्यक रूप से

अच्छा होता है तथा इसे एक मुक्त वातावरण में स्वतंत्र विकास हेतु पूर्ण अवसर प्रदान किया जाना चाहिए" (इग्नू, 2000)।

रूसो की प्रसिद्ध पुस्तक "ईमाइल" बाल शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित है। यहाँ रूसो ने "ईमाइल" नामक एक काल्पनिक बच्चे की शिक्षा द्वारा शिक्षा की प्रक्रिया का वर्णन किया है जिसकी शिक्षा समाज एवं विद्यालय से दूर प्राकृतिक परिवेश में हुई। इस पुस्तक में शिक्षा के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अधिक महत्व दिया गया है क्योंकि बच्चे को प्रकृति की खोज में स्वतंत्र छोड़ दिया गया ताकि वह प्रकृति की गोद में मानसिक के साथ–साथ शारीरिक विकास कर सके।

### 8.4.1 शिक्षा की अवधारणा एवं लक्ष्य

#### शिक्षा की अवधारणा

रूसो ने शिक्षा में निम्नलिखित अभ्यासों को सुझायाः

- बालक/विद्यार्थी की संपूर्ण स्वतंत्रता।
- शारीरिक दण्ड को नहीं थोपना है, बच्चा केवल प्राकृतिक दण्ड का अनुभव कर सकता है जो बाद में अच्छा तथा बुरा करने में बच्चे की सहायता करता है।
- प्राकृतिक नियमों का पालन करें क्योंकि इसकी उपेक्षा एवं उल्लंघन निष्चयवाद रूप से दुःख एवं पीड़ा की ओर अग्रसर करता है।
- प्राकृतिक रूप से ग्रहित उत्तम चरित्र।

#### शिक्षा के लक्ष्य

रूसो द्वारा षिक्षा के निम्नलिखित लक्ष्यों को सुझाया गया हैः

- **बालक की प्राकृतिक गतिविधियों पर बल**

  रूसो के अनुसार "अच्छाई अंतर्जात गुण होती है तथा बुरी आदतें अर्जित की जाती हैं वह भी हम प्रकृति से प्राप्त करते हैं वे अच्छी होती हैं।"

- **शिक्षा के केन्द्र में बालक**

  बच्चों की प्रकृति एवं योग्यताओं को उनकी शिक्षा हेतु योजना के समय ध्यान में रखा जाना चाहिए क्योंकि बालक एक युवा या वयस्क नहीं होता है।

- **प्रकृतिपर बल**

  रूसो के अनुसार मानव, प्रकृति तथा भौतिक वातावरण शिक्षा के स्रोत हैं। करके सीखना तथा अनुभव प्राप्त करना उत्तम अधिगम है। शिक्षा बच्चों की बागवानी करने जैसा है। जैसा कि पौधे देखभाल एवं पोशकों से विकसित होते हैं उसी तरह मानव शिक्षा द्वारा विकसित होते हैं। बच्चों को अपनी निर्बलताओं, अक्षमताओं एवं निर्भरता को अवश्य समझना चाहिए ताकि वे कठिन परिश्रम एवं प्रयासों द्वारा इन पर विजय प्राप्त कर सकें। रूसो कठिन परिश्रम युक्त जीवन चाहते थे और आरामदायक, विलासी तथा निर्बल जीवन नहीं। उनके अनुसार बच्चे को उसकी प्रकृति के अनुसार शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए तथा बच्चे में प्रकृति के प्रति प्रेम विकसित करना चाहिए। प्रकृति प्रेम बच्चे में अन्य सभी क्षमताओं को विकसित करेगा। रूसो ने प्राकृतिक षिक्षा को वास्तविक शिक्षा माना तथा विद्यालयों में दी जाने वाली नियमित एवं कृत्रिम शिक्षा की आलोचना की।

### 8.4.2 पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियाँ

रूसो द्वारा सुझाई गई पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियाँ निम्नलिखित हैं:

**सारिणी 8.1: पाठ्यचर्या तथा शिक्षण विधियाँ**

| अवस्थाएँ | पाठ्यचर्या | शिक्षणविधियाँ |
|---|---|---|
| शैशवावस्था (0–5 वर्ष) | • शरीर एवं इन्द्रियों का विकास<br>• मातृभाषा के माध्यम से नैतिक वार्तालाप<br>• किसी आदत के विकास को निषिद्ध करता है। | • ज्ञानेन्द्रियों का विकास<br>• परामर्श विधि<br>• खेल विधि<br>• प्रायोगिक विधि<br>• स्व–अधिगम विधि<br>• स्व–अनुभवों के माध्यम अधिगम<br>• करके सीखना<br>• अवलोकन, पृच्छा तथा प्रायोगिक विधि<br>• खोज विधि<br>• शिक्षण में वास्तविक उद्देश्यों का प्रदर्शन |
| बाल्यावस्था (5–12 वर्ष) | • प्रत्येक चीज को प्रत्यक्ष अनुभव एवं अवलोकन के माध्यम से सीखना<br>• कोई निर्धारित पाठ्य पुस्तक नहीं<br>• निषेधात्मक शिक्षा<br>• स्वतंत्र खेल, गतिविधि एवं क्रिया<br>• इस अवस्था में कोई ठोस पाठ्य चर्या को नहीं सुझाया गया है। | |
| किशोरावस्था (12–15 वर्ष) | • प्राकृतिक विज्ञान, भाषा, गणित, काष्ठ कार्य संगीत, चित्रकला आदि सहित औपचारिक पाठ्यचर्या का सुझाव<br>• गतिशील कार्य आधारित पाठ्यचर्या, पुस्तकों पर आधारित नहीं। | |
| युवावस्था (15–20 वर्ष) | • वास्तविक अनुभव के माध्यम से नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा औपचारिक व्याख्याओं के माध्यम से नहीं।<br>• शारीरिक, स्वास्थ्य, संगीत तथा व्यावहारिक अनुभव के लिए षिक्षा | |

(**स्रोतः** बी.ई.एस.–122, इग्नू, 2016)

रूसो द्वारा सुझाई गई पाठ्यचर्या तथा शिक्षण विधियों के विश्लेषण द्वारा यह कहा जा सकता है कि वे विशेष रूप से जीवन की पूर्व अवस्था में पुस्तक पढ़ने एवं कठोर पाठ्यचर्या के विरुद्ध थे। उन्होनें औपचारिक पाठ्यचर्या को केवल किशोरावस्था के लिए ही सुझाया। शिक्षण की वे विधियाँ जो बच्चे को व्यावहारिक गतिविधियों तथा करके सीखने में संलग्न रखती हैं रूसो ने उनको महत्व दिया है।

### 8.4.3 शिक्षक की भूमिका

रूसो के अनुसार शिक्षक सूचना का स्रोत नहीं होता है यद्यपि उसे अधिगम हेतु एक प्रोत्साहक के रूप में अवश्य कार्य करना चाहिए। बच्चों को निर्देशित नहीं बल्कि मार्गदर्शित किया जाना चाहिए। शिक्षक को बच्चों की प्रकृति को अवश्य समझना चाहिए। अतः उसे सहिष्णु तथा अपनी भावनाओं पर नियत्रंण हेतु सक्षम होना चाहिए। उसे बच्चों को अपने नियत्रंण में रखने के विषय में नहीं सोचना चाहिए क्योंकि बच्चे को खोजने एवं सीखने हेतु पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान किए जाने की आवश्यकता होती है। षिक्षक द्वारा बच्चे को समुचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाना चाहिए।

### 8.4.4 रूसो का शिक्षा में योगदाना

रूसो ने बचपन के गुणों की खोज एवं पहचान की। उन्होंने बच्चों के शिक्षा हेतु प्राथमिक सोपान के रूप में बाल मनोविज्ञान के आधार का समर्थन किया। यह आधुनिक काल में बाल केन्द्रित शिक्षा को अग्रसर करता है। वे आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान के अग्रदूत थे। रूसो ने कहा कि बच्चों को बच्चों की तरह न कि युवाओं की तरह व्यवहार करना चाहिए। अतः उनको शिक्षा प्रदान करने की विधि भिन्न होनी चाहिए। उन्होनें कहा कि बच्चों को बिना किसी सहायता एवं अनुदेश के समाधान करने के लिए समस्याएँ देनी चाहिए। अतः वातावरण के अन्वेशण द्वारा उनको सत्य या यथार्थ का पता लगाने दिया जाए।

रूसो ने स्वतंत्र एवं सकारात्मक अनुषासन की नींव डाली। उन्होंने कहा कि "बच्चे को प्रकृति में स्वतंत्र विचरण करने दिया जाए तथा उसके स्वयं के अनुभव तथा दैनिक जीवन की गतिविधियों में वास्तविक सहभागिता द्वारा सीखने दिया जाए।" उन्होंने दण्ड की भर्त्सना की क्योंकि दण्ड के भय से बच्चे की मौलिक एवं स्वाभाविक उत्सुकता तथा बौद्धिकता को नष्ट होती है। वे बच्चों पर कठिन अनुशासन के व्यवहार के विरुद्ध था। वे बच्चों को अपने रचनात्मक विधियों से कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करने तथा वे जो कुछ भी कर रहे हैं वह उसमें हस्तक्षेप नहीं करने के पक्ष में थे।

### 8.4.5 नकारात्मक शिक्षा

रूसो ने सकारात्मक शिक्षा की तुलना में नकारात्मक शिक्षा पर बल दिया चूँकि औपचारिक एवं कठोर शिक्षा एवं कृत्रिम परिवेश में अत्यधिक सूचना एवं अनुदेशों को प्रदान कर समय पूर्व वयस्कों की भूमिकाओं हेतु बच्चे को तैयार करने का प्रयास करता है। नकारात्मक शिक्षा बिना किसी बन्धन एवं नियंत्रण पद्धति के है। इसमें बच्चा अपनी प्रकृति तथा अपनी गति के अनुरूप सीखता है। इस प्रकार से उसकी सभी क्षमताएँ स्वाभाविक रूप से विकसित होती है। नकारात्मक शिक्षा का समर्थन करते हुए रूसो ने निम्नलिखित पर बल दिया:

- पुस्तकों के माध्यम से अधिगम नहीं यद्यपि प्रकृति से प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा अधिगम।
- समय की बचत नहीं (प्रकृति में रहने हेतु बच्चे को पर्याप्त समय प्रदान करना)।
- आदत का विकास नहीं।
- बच्चों हेतु सामाजिक शिक्षा नहीं (चूँकि समाज का उच्च वर्ग तत्कालीन समय में भ्रष्ट था)।
- प्रत्यक्ष नैतिक शिक्षा नहीं।
- कठिन तथा औपचारिक अनुशासन नहीं।
- परंपरागत शिक्षा विधि नहीं।

### 8.4.6 स्त्री शिक्षा

रूसो महिला एवं पुरुष के लिए समान शिक्षा के पक्ष में नहीं थे जैसा कि उनका मानना था कि उनके उत्तरदायित्वों की प्रकृति पूर्णतः भिन्न है। रूसो ने कहा कि महिलाएँ कार्य करने के लिए जन्म लेती हैं तथा पुरुषों का जन्म आनन्द करने के लिए हुआ है। महिलाओं को भूमिका बच्चों को पालना, वयस्क होने में उनकी सहायता करना, उनका जीवन आरामदायक एवं स्वीकार्य बनाने हेतु परामर्श प्रदान करना है। अतः महिलाओं को उच्च शिक्षा प्रदान करने के बदले उनको घर गृहस्थी, सिलाई, कढ़ाई तथा धार्मिक शिक्षा पढ़ाया जाना चाहिए।

रूसो ने महिलाओं के लिए नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा का समर्थन किया। यह विषय वाद–विवाद का एक अंग हो सकता है। रूसो ने कहा कि "साहित्य शिक्षा प्राप्त एक महिला अपने परिवार, अपने नौकरों तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्लेग है।" तकनीक युक्त तथा बौद्धिक समाज वाले वर्तमान समय के समाज के संदर्भ में समीक्षात्मक चिन्तन की आवश्यकता है।

**अपनी प्रगति जाँचें 8.2**

**टिप्पणी** : क) अपने उत्तर को दिए गए निम्नलिखित स्थान पर लिखिए।

ख) अपने उत्तरों की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

क) रूसो की ..... नामक पुस्तक में एक काल्पनिक बालक की शिक्षा की कहानी है।

ख) रूसो के अनुसार ..... एक महान शिक्षक है।

ग) रूसो की स्त्री शिक्षा के प्रति ..... अभिवृत्ति थी।

घ) रूसो ने .....शिक्षा पर बल दिया।

ङ) रूसो द्वारा दिया गया प्रसिद्ध नारा ..... था।

6. रूसो द्वारा बाल विकास के कितने स्तरों को बताया गया है?

.....

.....

.....

7. बाल विकास के प्रत्येक स्तर हेतु रूसो द्वारा दिए गए षिक्षा के किसी एक लक्ष्य को लिखिए।

.....

.....

.....

8. स्त्री शिक्षा के प्रति रूसो के क्या विचार हैं? चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

9. रूसो द्वारा सुझाई गई शिक्षा की किन्हीं तीन विधियों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

## 8.5 जॉन डीवी (1859–1952)

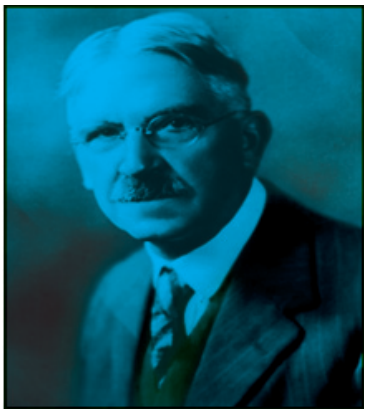

*जॉन डीवी (1859–1952)*

जॉन डीवी आधुनिक युग के महान दार्शनिक, शिक्षाविद तथा विचारक के रूप में माने जाते हैं। वे संयुक्त राज्य अमेरिका के एक प्रसिद्ध दार्शनिक हैं। विश्वविद्यालय से स्नातक के पश्चात् उन्होंने एक विद्यालय शिक्षक के रूप में अपने पेशे को आरंभ किया। बाद में जॉन डीवी ने हॉप्किन्स विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में पी.एचडी. की डिग्री प्राप्त की। सन् 1884 में डीवी ने मिशीगन विष्वविद्यालय में शिक्षण का कार्य आरंभ किया। सन् 1894 में शिकागो विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र मनोविज्ञान तथा शिक्षणशास्त्र के नवीन स्थापित विभाग में अध्यक्ष के रूप में योगदान दिया (इग्नू, 2011)।

उनका दर्शन मुख्यतः प्रयोजनवाद (Pragmatism) के रूप में माना जाता है। वह आधुनिक समय के अति प्रभावशाली विचारकों में एक रहे हैं जिनके शैक्षिक विचार समकालीन शैक्षिक चिन्तन एवं अभ्यास पर दीर्घकालिक प्रभाव छोड़े हैं। इनके कुछ प्रसिद्ध शैक्षिक कार्य निम्नलिखित हैं:

- दि स्कूल एंड दी सोसाइटी (1899)
- दि चाइल्ड एंड दि कैलीकुलम (1902)
- हाऊ वी थिन्क (1902)
- इंटरेस्ट एण्ड एफरट इन एजुकेशन (1913)
- डेमोक्रेसी एण्ड एजुकेशन (1916)
- एक्सपेरियन्स एंड एजुकेशन , दि क्वीस्ट फॉर एनर्सेन्टी: ए स्टडी ऑफ दि रिलेशन्स ऑफ नॉलेज एंड एक्षन (1929)

### 8.5.1 शिक्षा की अवधारणा एवं लक्ष्य

#### शिक्षा की अवधारणा

"शिक्षा व्यक्ति में उन सभी क्षमताओं का विकास है जो उसके परिवेश के नियंत्रण हेतु उसे सक्षम तथा उसकी संभावनाओं की पूर्ति करेगा।" शिक्षा एक सामाजिक आवश्यकता है। यह समाज तथा व्यक्ति दोनों के लिए प्रकृति में प्रगतिशील है। यह एक द्विध्रुवीय प्रक्रिया है जिसमें दो पक्ष हैं: मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक। दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। मनोवैज्ञानिक पक्ष बालक की अभिरूचियों, क्षमताओं, मेधा तथा अभिक्षमता की देखभाल करता है तथा सामाजिक पक्ष बालक के सामाजिक परिवेष की देखभाल करता है जिसमें वह जन्म लेता है तथा बड़ा हो गया। जॉन डीवी के अनुसार, "शिक्षा स्वयं में जीवन है तथा जीवन की एक तैयारी नहीं है" (इग्नू, 2011 से उद्धृत)। शिक्षा बच्चे के लिए है बच्चे शिक्षा के लिए नहीं हैं। बच्चा कोरा कागज नहीं होता है जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है। बच्चा कुछ अंतर्जात शक्तियों एवं क्षमताओं के साथ जन्म लेता है जिन्हें उचित दिशा में विकसित किया जा सकता है। षिक्षा बच्चे को सभी स्तरों पर किए जाने वाले प्रत्येक गतिविधि एवं प्रयोग में मूल्यों एवं सत्य की प्राप्ति हेतु योग्य होने की दिशा में विकसित करती है तथा विश्वास के साथ भावी चुनौतियों का सामना करने के योग्य होता है।

डीवी के अनुसार विचार अनुभव या कार्य के पश्चात् विकसित होता है। वह ज्ञान सत्य होता है जो प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ग्रहण किया जाता है। जब एक व्यक्ति कोई कार्य करता है और इस कार्य को करने में चुनौतियों एवं कठिनाइयों का सामना करता है तब वह सोचता है कि इन पर किस प्रकार नियंत्रण प्राप्त किया जाए। इस प्रकार विचार एवं चिन्तन उत्पन्न होते हैं तथा भविष्य में कार्य संपादित होते हैं। डीवी इन विचारों को शिक्षा कहते हैं। उन्होंने शिक्षा के निम्नलिखित लक्ष्य सुझाए हैं:

- **शिक्षा के उत्पाद के रूप में दर्शनशास्त्र** : डीवी शिक्षा को दर्शन शास्त्र का गत्यात्मक पक्ष नहीं मानते हैं यद्यपि वे दर्शन शास्त्र को शिक्षा के उत्पाद के रूप में मानते हैं। डिवी के अनुसार "दर्शन शास्त्र शिक्षा के अधिकांश सामान्य चरणों में इसका सिद्धान्त होता है।"

- **शिक्षा का अभिप्राय जीवन** : डीवी के अनुसार "शिक्षा स्वयं जीवन है तथा जीवन की तैयारी नहीं हैं" (इग्नू, 2011 से उद्धृत)। शिक्षा जीवनयापन की एक प्रक्रिया है तथा भावी जीवन की तैयारी नहीं है। केवल सैद्धान्तिक ज्ञान उपयोगी नहीं होता है, जीवन में प्रयुक्त किया जा सकने वो ज्ञान का अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। अतः व्यावहारिक एवं व्यावसायिक कौशल अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। करके सीखना महत्वपूर्ण है ताकि बच्चे प्रत्यक्ष अनुभवों को प्राप्त कर सकते हैं। भविष्य एवं विद्यालयी जीवन के मध्य दूरी नहीं रहनी चाहिए। वास्तविक जीवन के अनुभवों को विद्यालय में प्रदत्त किया जाना चाहिए।

- **शिक्षा समाज का लघु रूप :** व्यक्ति का विकास समाज में होता है। वह समाज में रहते हुए बहुत से अनुभवों को प्राप्त करता है। अतः बच्चे की शिक्षा अवश्य ही समाज द्वारा होनी चाहिए। जॉन डीवी के अनुसार, "शिक्षा जीवन की सामाजिक निरंतरता है।" उनका मानना है कि स्कूलिंग सामाजिक बुराइयों को नष्ट करने का एक उपकरण है। वह शिक्षा को समाज का एक लघु रूप मानता है। समाज में सभ्यता के उत्तम अभ्यास उपलब्ध होते हैं। डीवी के अनुसार "व्यक्ति विशेष शरीर की आत्मा होता है जो समाज है।" व्यक्ति और समाज एक–दूसरे पर निर्भर होते हैं अतः दोनों का विकास आवश्यक होता है।

- **शिक्षा अनुभवों की पुनःसंरचना की प्रक्रिया है :** एक लोकतान्त्रिक संसार में शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। अतः राज्य को बच्चों का संपूर्ण उत्तरदायित्व अवष्य लेना चाहिए। लोकतान्त्रिक समाज से डीवी का अर्थ केवल राजनीतिक लोकतंत्र से नहीं है यद्यपि लोकतंत्र एक जीवन शैली है। उसका विचार है कि व्यक्तियों को भिन्न–भिन्न अनुभव होते हैं। अतः उनको कार्यों की भिन्नता होती है। अतः व्यक्ति लोकतन्त्र में एक–दूसरे के संपूरक तथा विरोधी होते हैं। इस प्रकार के परिवेश में केवल सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास होता है। बालक अनुभव द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त करता है। धीरे–धीरे जैसे उसके अनुभव बढते हैं उसके ज्ञान में भी वृद्धि होती है। अनुभवों के आधार पर बालक के व्यवहार में परिवर्तन होता है तथा उसके आधार पर वह अधिक अनुभवों को प्राप्त करता है। इस प्रकार अनुभवों की पुनः संरचना निरंतर रूप से होती है।

### 8.5.2 शिक्षा की प्रक्रिया

डीवी ने सैद्धान्तिक विषयों के माध्यम से नहीं बल्कि गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया। व्यक्ति अपने जीवन में जो अनुभव प्राप्त करता है वे विषय विशिष्ट

नहीं होते हैं। अतः ज्ञान को कार्यों एवं अनुभवों से सम्बन्धित होना चाहिए। इसे प्रत्यक्ष अनुभवों तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के अनुरूप होना चाहिए।

### 8.5.3 पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ, शिक्षक की भूमिका एवं अनुशासन

#### पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या का निर्माण बच्चों की आवश्यकताओं, अभिरूचियों, अभिक्षमता तथा सामाजिक आवश्यकताओं की प्रकृति के अनुरूप होना चाहिए। इसे लचीला, गत्यात्मक तथा समय एवं परिस्थिति की आवष्यकता के अनुसार परिवर्तनशील होना चाहिएः

- **विभिन्न स्तरों पर शिक्षा** : डीवी ने शिक्षा की अपनी योजना को निम्नलिखित तीन विभिन्न स्तरों पर विभक्त किया हैः
  - खेल का काल (4 – 8 वर्ष)
  - स्वाभाविक ध्यानाकर्षण का काल (8 – 12 वर्ष); तथा
  - चिन्तन क्रिया काल (12 – 18 वर्ष)

खेल काल गतिविधि आधारित विधि द्वारा शिक्षण हेतु विषेष रूप से समर्पित था, स्वाभाविक ध्यानाकर्षण काल जीवन की समस्याओं के स्वतंत्र समाधान हेतु समर्पित था तथा चिन्तन क्रियाकाल का अर्थ समाज का उत्तरदायी नागरिक के रूप में निकलता था।

#### शिक्षणविधियाँ

बच्चे के अनुभवों को पुष्ट करने तथा विभिन्न प्रकार की अधिगम गतिविधियों में उनको समिमलित करने हेतु डीवी ने समस्या समाधान विधि, करके सीखना, परियोजना विधि तथा अधिगम की क्षेत्र आधारित गतिविधि की प्रविधि को सुझाया।

#### शिक्षक की भूमिका

डीवी के अनुसार शिक्षक मित्र, दार्शनिक तथा मार्गदर्शक होता है। वह बच्चे के समाजीकरण का प्रमुख अभिकर्त्ता होता है। वह समाज का प्रतिनिधि होता है। उसे बच्चे को प्रोत्साहित तथा प्रेरित करने का अधिकार है परन्तु अपने विचारों का उन पर थोपने का अधिकार नहीं है। शिक्षक की भूमिका बच्चों को समाज मे ं प्रभावपूर्ण ढंग से रहने हेतु तैयार करना है। शिक्षक को बच्चों की अभिरूचियों, बदलते सामाजिक परिवेष तथा बच्चों को मार्गदर्शित करने के विषय में अवश्य ज्ञान होना चाहिए।

#### अनुशासन

प्रयोजनवादी आदर्शवादियों की तरह बालक के लिए कठिन अनुशासन तथा प्रकृतिवादियों की तरह असीमित स्वतंत्रता के पक्ष में नहीं हैं बल्कि इन्होंने इन दोनों धाराओं के मध्य का मार्ग सुझाया है। डीवी ने सामाजिक अनुषासन को महत्व दिया है जो बालक की प्रकृति, कार्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित है।

उनके अनुसार अनुषासन सामाजिक गतिवधियों को विकसित करने हेतु एक मानसिक अवस्था है जो आवश्यक है। डीवी बच्चों में भय उत्पन्न कर अनुशासन के कृत्रिम या अप्राकृतिक दबाव के पक्ष में नहीं हैं। वे बाह्य आरोपित अनुशासन से स्व–अनुशासन को अधिक महत्व देते हैं।

**अपनी प्रगति जाँचें 8.3**

**टिप्पणी** : क) अपने उत्तर को दिए गए निम्नलिखित स्थान पर लिखिए।

ख) अपने उत्तरों की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

10. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

क) जॉन डीवी द्वारा दिए गए शैक्षिक दर्शन ..... के रूप में जाना जाता है।

ख) डीवी के अनुसार विद्यालय समाज का ..... रूप होता है।

ग) डीवी के अनुसार शिक्षा एक ..... प्रक्रिया है।

घ) जॉन डीवी ने ..... अनुशासन पर बल दिया है।

ङ) डीवी ने ..... द्वारा सीखने पर बल दिया है।

11. जॉन डीवी ने अपनी शिक्षा की योजना को कितने भागों में विभाजित किया है? इनके नाम लिखिए।

.....

.....

.....

12. शिक्षक तथा बच्चे की शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका के विषय में जॉन डीवी के क्या विचार हैं? विमर्ष कीजिए।

.....

.....

.....

13. जॉन डीवी द्वारा सुझाई गई किन्ही तीन शिक्षण विधियों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

## 8.6 इमैन्यूएल कान्ट (1724–1804)

*इमैन्यूएल कान्ट (1724–1804)*

महान जर्मन दार्शनिक **इमैन्यूएलकान्ट (Immanuel Kant)** का जन्म 22 अप्रैल 1724 को कोनिसबर्ग, जर्मनी में हुआ। उन्होंने लैटिन, ग्रीक तथा धर्मशास्त्र का अध्ययन किया। जर्मन शिक्षा के इतिहास के विशेषज्ञ अठारहवीं शताब्दी को "शिक्षणशास्त्र का युग" के रूप में वर्णन करते हैं। उन्होंने शिक्षणशास्त्रीय दर्शन या शिक्षा दर्शन के रूप में शिक्षा में भी बहुत अधिक योगदान दिया। उन्होंने सन् 1776 से सन् 1787 तक के शिक्षणशास्त्रों पर व्याख्यान दिया जो सन् 1803 में प्रकाशित हुए।

इमैन्यूएल कान्ट ने यथार्थ की प्रकृति को समझने हेतु विचार आधारित एक पद्धति को

विकसित किया, किसी भी व्यक्ति को केवल परीक्षण करना चाहिए तथा तर्क की प्रक्रिया का विश्लेषण करना चाहिए जो अनुभव की प्रकृति को नियंत्रित करता है। "उत्कृष्टतावाद के आदर्शवाद ने बहुत समय पूर्व ही अस्तित्ववाद का मार्ग प्रषस्त कर दिया।" उन्होंने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि सभी जीवों में कुवल मनुष्य को ही शिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षा में पालन–पोषण सम्मिलित है जब बालक शैशवास्था में होता है, अनुशासन जब वह थोड़ा बड़ा होता है तथा प्रशिक्षण जब वह अनुदेशों को समझने के योग्य होता है।

### 8.6.1 शिक्षा की अवधारणा एवं लक्ष्य

इमैन्यूएल कान्ट द्वारा शिक्षा के निम्नलिखित लक्ष्य दिए गए हैं:

- प्राकृतिक अच्छाई के रूप में मानव में पहले से विद्यमान तत्वों का विकास।
- शिक्षा शिक्षित व्यक्तियों द्वारा समाज की सतत् उन्नति भी है ऐसा उत्तम भविष्य का सुनिश्चयन है।
- मानव के संपूर्ण प्राकृतिक उपहारों का विकास करना वास्तविक शिक्षा है।
- उत्तम षिक्षा मानव स्वभाव की वास्तविक परिपूर्णता का संभरण करती है जो स्वभावतः उत्तम होती है। इसकी योजना सार्वत्रिक तथा अति उत्तम होनी चाहिए। बच्चों को केवल वर्तमान के लिए शिक्षित नहीं करना चाहिए यद्यपि उन्नत भविष्य के लिए करना चाहिए।
- सभी व्यक्तियों द्वारा स्वयं तथा अन्य व्यक्तियों की मर्यादा बरकरार रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि गुणवत्ता की समझ तथा दूसरों का सम्मान बच्चों में आरंभिक आयु से ही मनःस्थापित करना चाहिए।
- विश्व के क्रमिक सुधार सम्बन्धित शिक्षा को शैक्षिक संस्थानों द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए।
- व्यक्तियों को भावी वैश्विक मूल्यों हेतु तैयार करना। इस प्रकार वह वैश्विक नैतिक समाज विकसित करना चाहता था।

### 8.6.2 शिक्षा की प्रक्रिया

कान्ट ने सभी आयु समूहों की षिक्षा पर अपने विचार प्रस्तुत किए अर्थात् शैशवावस्था से वयस्कावस्था तक निम्नलिखित प्रकार हैं:

- बुनियादी शिक्षा
- परिवार शिक्षा
- विद्यालयी शिक्षा
- विश्वविद्यालयी शिक्षा
- सामान्य वयस्क शिक्षा; तथा
- वरिष्ठ नागरिक शिक्षा

कान्ट के विचारों के अनुसार बच्चे के मूल स्वभाव को कृत्रिम साधनों द्वारा नष्ट नहीं किया जाना चाहिए। बच्चों को प्रसन्न होने, उदार हृदय होने की आवष्यकता होती है तथा उनकी निगाह सूर्य की भाँति तेजवान हैं। बच्चों में अपने अनुसार अग्रसर होने की स्वाभाविक प्रवृत्ति हो सकती है यदि यह हानिकारक है जो इसे प्रतिबंधित किए जाने की आवश्यकता

है, प्रक्रिया के रूप में वे स्वयं को क्षति पहुँचा सकते हैं। परन्तु उनको नियंत्रित करने की प्रक्रिया में उन्हें धमकाया नहीं जाना चाहिए। न तो उनको सभी चीजों को खेल के रूप में लेना चाहिए न ही सभी चीजों के साथ तर्क–वितर्क का प्रयास करना चाहिए। बच्चों की स्वतंत्रता में बाधा नहीं डालना चाहिए परन्तु आवष्यक ध्यान देना चाहिए ताकि वे स्वयं को क्षति न पहुँचा सकें तथा अपने कार्यों द्वारा दूसरों की स्वतंत्रता सीमित न कर सकें। बच्चों को खेल के साथ–साथ कार्य भी करना चाहिए। एक के लिए दूसरे को त्यागना आवष्यक नहीं है तथा उचित संतुलन बनाए रखना चाहिए।

### 8.6.3 अनुशासन

अनुशासित व्यवहार एवं कार्य मनुष्य को संकट में पड़ने से रक्षा करते हैं। बच्चों को आरंभिक वर्षों में विद्यालय में अनुदेशन के लिए नहीं बल्कि शांत रहना सीखने तथा जो कहा जाए उसको करने हेतु भेजे जाने की आवष्यकता है। इस प्रकार वे स्वयं को अनुशासित करना सीखते हैं जो घर पर पढ़ाया जाना कठिन हो सकता है। इस कार्य को शिक्षा द्वारा संपादित करने की आवश्यकता है, जैसा कि ईश्वर ने मनुष्य को तर्क करने की पूर्व शक्ति प्रदान की है, तथा अपने अच्छे या बुरे का निर्णय केवल उन पर निर्भर करता है। शिक्षा के आधार को प्रकृति में सार्वत्रिक या अंतर्राष्ट्रीय करने की आवश्यकता है, ताकि वैश्विक शांति स्थापित हो।

### 8.6.4 शिक्षण विधियाँ

पाठ्यचर्या को आयु समूह के अनुरूप होना चाहिए। बच्चों का अधिगम उन्नत होता है, जब पाठ्यचर्या आयु के अनुसार उनकी क्षमताओं के अनुरूप होती है। शिक्षा की एक तकनीकी प्रक्रिया नहीं होनी चाहिए। शिक्षण एवं अधिगम की विधियों को बच्चों के चिंतन को प्रेरित करना चाहिए। उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए कान्ट ने अधिगम की सुकरात विधि का समर्थन किया। बच्चे शिक्षकों की सहायता के बिना केन्द्रीय समस्याओं को समझने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। परन्तु शिक्षक बच्चों में कारण की अवधारणा को अस्थिर नहीं कर सकता है। अवतरोत्तर यह अन्दर से बाहर आएगा। आवश्यकता अनुसार सुकरात विधि यांत्रिक अनुदेश देने का आधार भी होनी चाहिए। कान्ट स्वाभाविक रूचियों, झुकाव तथा आनदं के विरुद्ध नहीं हैं। परन्तु इनको प्रेम एवं अन्य मनुष्यों के कल्याण को ध्यान में रखते हुए अभ्यास करने की आवश्यकता है।

### 8.6.5 शिक्षा की प्रकृति एवं विद्यालय

इमैन्यूएल कान्ट द्वारा शिक्षा की प्रकृति एवं विद्यालय की अवधारणा निम्नलिखित रूप में सुझाए गए हैं:

- **सार्वजनिक बनाम निजी शिक्षा** : कान्ट ने अपना स्पष्ट मत व्यक्त किया है कि शिक्षा को राज्य द्वारा या निजी संस्थानों द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए। शिक्षा को शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए। उदाहरण के लिए यदि शासक शिक्षा प्रदान करते हैं तो उनके मन में राज्य के कल्याण की बात होगी तथा इसके द्व ारा व्यक्तियों के विकास की बात नहीं होगी। उनको शिक्षा हेतु अनुदान प्रदान करना चाहिए परन्तु इससे लाभ का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। निजी शैक्षिक संस्थानों को युवाओं के व्यक्तिगत विकास तथा सामाजिक विकास के लिए शिक्षित करना चाहिए।

- प्रायोगिकविद्यालय **:** कान्ट के अनुसार किसी भी चीज को इसके प्रयोग से पहले नहीं पढ़ाया जाना चाहिए। इस कारण यह शिक्षण हेतु मूल्यवान होता है। इसके लिए प्रायोगिक विद्यालय आवश्यक है। इन विद्यालयों में शिक्षक अपने विषयवस्तु

तथा शिक्षण विधियों के अभ्यास हेतु स्वतंत्र है, जो विद्यार्थियों के एक निश्चित आयु समहू हेतु समुचित होगा। केवल तर्क पदार्थ एवं शिक्षण विधियों की उपयुक्तता को स्थापित नहीं कर सकता है, अतः सामान्य विद्यालयों के पहले प्रायोगिक विद्यालयों की स्थापना होनी चाहिए। कान्ट द्वारा स्थापित प्रायोगिक विद्यालय का नाम "देस्यू" (Dessau) था।

**अपनी प्रगति जाँचें 8.4**

**नोट :** क) अपने उत्तर को दिए गए निम्नलिखित स्थान पर लिखिए।

ख) अपने उत्तरों की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

14. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

क) इमैन्यूएल कान्ट एक ..... दार्षनिक था।

ख) कान्ट के शिक्षा पर व्याख्यानों को ..... कहा जाता है।

ग) कान्ट के अनुसार शिक्षा को बच्चे को ..... बनाना चाहिए।

घ) कान्ट के शिक्षा पर विचारों को एक प्रायोगिक विद्यालयों में परीक्षण किया गया, उस विद्यालय का नाम .....था।

ङ) कान्ट ने ..... द्वारा सीखने की विधि पर बल दिया।

15. कान्ट ने सामान्य विद्यालयों के पहले प्रायोगिक विद्यालयों को खोलने पर क्यों बल दिया?

.....

.....

.....

16. कान्ट द्वारा दिए गए शिक्षा के लक्ष्यों को लिखिए।

.....

.....

.....

17. कान्ट के जन बनाम निजी शिक्षा के विषयों में विचारों पर विमर्श कीजिए।

.....

.....

.....

## 8.7 सारांश

इस इकाई में हमने शिक्षा पर कुछ पाष्चात्य दार्षनिकों के विचारों का अध्ययन किया है। ये दार्शनिक प्लेटो, जिन जैक्स रूसो, जॉन डिवी तथा इमैन्यूएल कान्ट हैं। अब आप याद करने में सक्षम होंगे कि प्लेटो आदर्शवादी दार्शनिक है, रूसो, प्राकृतिकवादी, जॉन डीवी प्रयोजनवादी तथा कान्ट इन तीनों दार्शनिकों से भिन्न है।

इन सभी ने शिक्षा के लक्ष्यों को सुझाया है, तथा मनुष्य के विभिन्न विकासात्मक स्तरों के अनुरूप इन लक्ष्यों को भी सुझाया है। लक्ष्यों के अतिरिक्त शिक्षण हेतु प्रयुक्त विधियों,

विद्यार्थियों के जीवन तथा समाज में शिक्षकों की भूमिकाओं, विद्यार्थियों को पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों के महत्व तथा अनुशासन एवं नैतिकता पर विचारों की चर्चा की गई है।

पूर्व तथा वर्तमान इकाइयों के अध्ययन के पश्चात् हमने जाना कि भारतीय तथा पाश्चात्य दार्शनिकों, विचारकों तथा शिक्षार्थियों द्वारा सुझाए गए विचार शैक्षिक प्रक्रिया को स्वरूप देने के लिए हैं। शिक्षा पर उनके विचार भिन्न–भिन्न हैं।

उन्होंने हमें यह विचार दिया कि उनके समय में शिक्षा को मानव जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण समझा जाता था तथा इसका नियोजन एवं प्रबंधन कितने अच्छे से होता था। अब आप जान चुके होंगे कि ये विचार चिरकालिक तथा समकालीन शिक्षा व्यवस्था में आज भी प्रासंगिक है। अतः वर्तमान समाज एवं वर्तमान षिक्षा व्यवस्था इसे एक नया जीवन प्रदान करेगी। जैसा कि वर्तमान समाज एवं षिक्षा व्यवस्था को कई अदृश्य बलों के कारण मूल्य संकट एवं अवमूल्यन के प्रबंधन पर चितं न करने की आवश्यकता है। सभी प्रासंगिक विचारों को क्रियान्वित एवं प्रयोग करना चाहिए ताकि हम प्रासंगिक एवं सार्थक शिक्षा व्यवस्था को वापिस करने में सक्षम हो सकते हैं।

## 8.8 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सूची

ब्राइनकिन, वी. एन. (2005). फिलोसोफियानपुटी के प्रोवेस्चेनियू. वास्तुपिटल्नायास्टिया (Filosofiyanaputi k prosvescheniyu. Vstupitelnayastatya) (दर्शन और ज्ञान के लिए मार्गप्रीफेटरी नोट). : कान्ट, आई. Izbrannyesochineniy (सेलिक्टड वर्क्स) 2. इम्मानुएल कान्टः रसियन स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 3.

फिचटे, जे.जी. (1982). दि फर्स्ट इंट्रोडक्शन, दि साइन्स ऑफ नालेज . कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 7–29.

गुलिगा, ए.वी. (1977). कान्ट. मॉस्कोः मोलोडययागवरडिया (Molodayagvardiya), पृ. 247.

हिंस्के, एन (1998) Zwischen Aufklärung und Venunftkritik: Studienzum Kantschen Logikcorpus. (इंटरमीडिएट प्रबुद्धता और वेनफ्ट की आलोचनाः अध्ययन पर कान्ट के तर्क कॉर्पस).

इग्नू (2016). समकालीन भारत और शिक्षा (बीईएसएस–122), खण्ड–3, पृ. 29–30. इग्नू बीएडः नई दिल्ली

इग्नू (2011). एजुकेशन .: फिलोसिफिक्ल एंड सोशलॉजिक्ल पर्सेपेक्टिव, (एमईएस–051). खण्ड–2, पृ. 81, इग्नू एम.एड.: नई दिल्ली

इग्नू (2005). एजुकेशन .: नेचर एंड पर्पज (एमईएस–012), इग्नू एमए शिक्षा कार्यक्रमः नई दिल्ली

कान्ट, आई. (1992) . एम इम्मानुएल कान्ट ने शीतकालीन सेमेस्टर 1765 – 1766 (1765) के लिए अपने व्याख्यानों के कार्यक्रम की घोषणा की. डी वालफोर्ड (संपा.), थ्योरिटिक्ल फिलोसिफी , 1755–1770 (इम्मानुएल कान्ट के कार्यों का कैम्ब्रिज संस्करण, पृ. 287–300). कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

कान्ट, आई. (1992बी) . दि फाल्स सबटलेटी ऑफ दि फॉर सिल्लॉजिस्ट फिगर्स (1762). डी वालफोर्ड (संपा.), थ्योरिटिक्ल फिलोसिफी , 1755–1770 (इम्मानुएल कान्ट के कार्यों का कैम्ब्रिज संस्करण, पृ. 85–88). कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

कान्ट, आई. (1996 एं). प्रश्न का उत्तरः आत्मज्ञान क्या है? (An answer to the question:

What is enlightenment?) (1784) एम ग्रेगर (संपा.), प्रेक्टिकल फिलोसिफी (इम्मानुएल कान्ट के कार्यों का कैम्ब्रिज संस्करण, पृ. 11–22). कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

कान्ट, आई. (1996बी). दि मेटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स (1797). एम ग्रेगर (संपा.), प्रेक्टिकल फिलोसिफी (इम्मानुएल कान्ट के कार्यों का कैम्ब्रिज संस्करण, पृ. 353–604). कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

कान्ट, आई. (1998). क्रिटक्यू ऑफ पोयर रीजन . कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

कान्ट, आई. (2006). एंथ्रोपॉलिजी फ्रोम ˙ प्रेग्मेंटि पाउंट ऑफ व्यू . कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

कान्ट, आई. (2007). लेक्चरस ऑफ पेडागोगी . एंथ्रोपॉलिजी, हिस्ट्री एंड एजुकेशन . कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 434–486.

कान्ट, आई. (2011). "रिमार्क्स इन दि ओबजर्वेषन्स ऑन दि फिलिंग ऑफ ब्यूटीफुल एंड सबलाइम (1764–65)". पी. फियरसन एवं पी. गुयेर (संपा.), कान्ट : ओबजर्वेशन्स ऑन दि फिलिंग ऑफ दि ब्यूटीफुल एंड सबलाइम एण्ड ओदर राइट्स (कैम्ब्रिज टेस्टक्स इन दि हिस्ट्री ऑफ फिलोसिफी पृ. 63–202). कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

कान्ट, आई. (2015). क्रिटक्यू ऑफ प्रेक्टिकल रीजन . कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस

पोपोव, पी.एस., स्टयाज़ीकिन, एन.आई. (1974). (Razvitiye logiche skikhideyot Antichnosti do epokhi Vozrozhdeniya) (पुरातनता से पुनर्जागरण के लिए तार्किक विचारों का विकास). मास्कोः मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 37.

सफाया, आर.एन., शैदा, बी.डी., शुक्ला, सी.एस. (2009). टीचर इन इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी, धनपत राय पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।

## संदर्भित वेबसाइट

https://www.iep.utm.edu/kantmeta/s

https://www.researchgate.net/publication/277651549_Kant's_View_on_Education

https://www.researchgate.net/publication/33039935_Kant_on_Teaching_Philosophy

https://plato.stanford.edu/entries/education-philosophy/

https://www.cram.com/essay/platos-education-philosophy/FK4F8LNSC

https://en.wikibooks.org/wiki/...of_Education_and.../Educational_Philosophy/Plato

https://www.biography.com/scholar/plato

https://www.plato-philosophy.org/why-plato/

https://www.ukessays.com/.../education/educational-theory-of-jean-jacques-rousseau-e...

https://www.scribd.com/document/83628224/Rousseau-and-Educational-Philosophy

https://study.com/academy/.../john-dewey-on-education-theory-philosophy-quiz.html

https://en.wikipedia.org/wiki/John_Dewey

www.wilderdom.com/experiential/JohnDeweyPhilosophyEducation.html

## 8.9 प्रगति जाँच हेतु उत्तर

1. क) सुकरात, ख) विचार, ग) पाँच घ) शिवम् या ईश्वर ङ) एकैडमी
2. प्लेटो द्वारा लिखित दो महान पुस्तक "दि रिपब्लिक " तथा "दि लावा " हैं।
3. प्लेटो द्वारा दिए गए शिक्षा के दो लक्ष्य व्यक्तित्व का विकास तथा व्यक्तियों की अच्छी नागरिकता एवं ईश्वर का ज्ञान एवं सत्य, सौन्दर्य तथा ईश्वर में विश्वास हैं।
4. तर्क, प्रश्न–उत्तर तथा चर्चा विधि।
5. क) इमाईल, ख) प्रकृति, ग) नकारात्मक घ) भौतिक ङ) प्रकृति की ओर लौटो
6. रूसो ने बाल विकास के चार स्तरों अर्थात् शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था तथा वयस्कावस्था को बताया।
7. शैशवावस्था : इस समय शिक्षा का मुख्य लक्ष्य शारीरिक विकास होना चाहिए। बाल्यावस्थाः इस समय शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बच्चे के सभी इन्द्रियों अथवा ज्ञानेन्द्रियों का विकास होना चाहिए।

   किशोरावस्था : व्यक्तित्व विकास एवं इन्द्रियों अथवा ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण

   वयस्कावस्था : शिक्षा द्वारा अनुभूतियों एवं भावनाओं का विकास।
8. महिला की भूमिका बच्चों को पालना, वयस्क होने में उनकी सहायता, उनके जीवन को आरामदायक तथा स्वीकार्य बनाने में उनको परामर्श देना है। अतः महिलाओं को उच्च शिक्षा प्रदान करने के बजाए उनको घरेलू कार्य, सिलाई, कढ़ाई आदि पढ़ाया जाना चाहिए। स्त्री शिक्षा पर रूसो के विचार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अप्रासंगिक है।
9. प्रत्यक्ष अनुभव, करके सीखना तथा खेल विधि
10. क) प्रयोजनवाद, ख) विस्तारित, ग) सामाजिक घ) स्वयं, ङ) करना
11. डिवी ने अपनी षिक्षा योजना को तीन कालों में विभक्त किया हैः खेल काल, स्वाभाविक ध्यानाकर्षण काल तथा चिन्तन क्रिया काल।
12. डिवी के अनुसार शिक्षक एक मित्र, दार्शनिक तथा मार्गदर्शक होता है। वह बच्चे के समाजीकरण का प्रमुख अभिकर्त्ता होता है। उसे बच्चे को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने का अधिकार है परन्तु अपने विचारों को थोपने का अधिकार नहीं है। एक शिक्षक की भूमिका बच्चे को समाज में प्रभावशाली ढंग से रहने हेतु तैयार करना है। शिक्षक की भूमिका जीवन के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना है।
13. करके सीखना, समस्या समाधान तथा शिक्षण की परियोजना विधि
14. क) जर्मन ख) "ऑन पेडागॉगीज" ग) सोचना घ) "देस्यू" (Dessau) ङ) सुकरात

15. कान्ट के अनुसार प्रयोग करने के पहले कुछ भी नहीं पढ़ाया जाना चाहिए तथा प्रयोगों को जारी रहना चाहिए तथा शिक्षा की योजना एवं प्रक्रिया में सतत् सुधार हेतु नवीन नियमों को प्रदान करना चाहिए।

16. शिक्षित व्यक्तियों द्वारा समाज की सतत् उन्नति, मनुष्य के सभी प्राकृतिक उपहारों का विकास वास्तविक शिक्षा हैं तथा बच्चों को न केवल वर्तमान बल्कि उन्नत् भविष्य हेतु शिक्षित किया जाना चाहिए।

17. जन शिक्षा राज्यों के विकास पर केन्द्रित होती हैं अतः राज्य शिक्षा में व्यक्तिगत आवश्यकताओं की उपेक्षा करता है जबकि निजी शिक्षा व्यक्ति एवं उसके वास्तविक विकास की आवश्यकता पर केन्द्रित होती है। अतः कान्ट का विचार निजी शिक्षा द्वारा व्यक्ति का वास्तविक विकास है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY